चक्षु

निवन्ध-प्रवन्ध-समालोचना



दुर्गा नन्द मण्डल

चक्षु

दुर्गा नन्द मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-88421-82-9

दाम : ₹ 250/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग
वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 9931654742, 6200635563

प्रिन्ट : मानव आर्ट
निर्मली (सुपौल)
बिहार : 847452

आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल

CHAKSHU
Collection of Maithili Research Papers-Essays-Criticism by Sh. Durga Nand Mandal.

समर्पण

मातृ-पितृ चरणमे...

दू शब्द

ओना तँ विधागत दृष्टिये प्रवन्धक पोथी भेबे कएल। मुदा अपने मात्र परिचय-पोथी बुझै छी। जेकर खगता ऐ दुआरे बुझि पड़ल जे मैथिली साहित्यमे आइ ओहन-ओहन रचनाकार सभ सोझा एला हेँ, आबि रहला हेँ जे एकान्तमे रहि इमानदारीसँ रचना कऽ रहल छैथ, बहुजन हिताय केर बात कऽ रहल छैथ।

वास्तवमे, 'यथार्थपर नजैर राखि लेखन करब' ई कोनो भाषा-साहित्य-मध्य रचनाकारक परम कर्त्तव्य होइते अछि। मुदा ओ तखने पूर्ण सम्भव होएत, जखन भाषा-विकासक सरकारी/गैर सरकारी माध्यमक रूढ़ लॉवीसँ दूर रहए, बेकतीगत लाभक चक्करमे नहि रहए...। ऐ लेल एक आर अति महत्वपूर्ण खगता अछि जे जे रचनाकार जइ पात्रक जेहेन नजैरिक बात करैथ, ओइ पात्रक संग डेग-मे-डेग मिला जिनगी जीबैक प्रमाण अपन-अपन जिनगीसँ प्रमाणित करैथ। ई नहि जे अनके कन्हापर बन्दूक राखि भटाभट..!

प्रस्तुत परिचय-प्रवन्ध पोथीमे हम किछु ओहन रचनाकारक चर्च केलौं अछि जे अपना लेखनमे अनछुअल विषय आ अनछुअल पात्रकेँ सोझा आनै छैथ। तेतबे नहि, अपन पात्रक संग बेवहारिक जिनगीमे जीबै छैथ।

संग्रहक प्रकाशन किछु हड़बड़ीमे भऽ रहल अछि जइ कारणे सुधि पाठकसँ ई खुलासा पहिनहि कए देब नीक बुझै छी जे आरो-आर रचनाकारक चर्च कएल जा सकैत छल मुदा से अखन नहि भऽ सकल। तथापि, बिसवास अछि जे अपने लोकनिक आशिष पाबि बढ़ल मनोवलक बलेँ जरूर मनकमना पूरा करब।

अपनेक-

दुर्गानन्द मण्डल

अनुक्रम

मौलाइल गाछक फूल

जेना लगातार पाँच-सात सालक प्रचंड रौदी भेलाक बाद जौं रोहैन नक्षत्रमे एकटा कसगर अछार हुअए तँ गिरहस्त सबहक मोन फूलकोका जकाँ खिल उठै छइ। सभ कियो खेत-पथार जोति, तामि-कोरि, खढ़-पतार सभ बाले-बच्चा मिल ओलि-पालि कऽ देबे सेबे बीहैन खसबै छइ। गोर दसे दिनक पछाइत हरिअरकंच बीहैनक टेम बिरारमे निकलए लगैत अछि। गिरहस्त सभ पोखैर-झाखैर दिस दिसा-मैदान करैत बॉसक उभ्भीबला दतमनि करैत लोटा नेनहि बिरार दिस चल जाइत छैथ। बिरारमे उपजल हरियरकंच बीहैन देख आत्मा जुड़बैत छैथ। देखते-देखते बीहैन पैघ भऽ जाइत अछि। गिरहस्त सभ ऐ आशामे पाँच-सात सालसँ बर्खो नै भेल जौं ऐबेर समय संग देत तँ बाले-बच्चा मिल खूब जतनसँ खेती करब आ ऐ रौदीसँ छुटकारा भेट जाएत।

दिन दसे-पनरेहक बाद आरदारा चढ़िते खूब कसगर बर्खा भेल। आ गिरहस्त सभक आत्मा गूलाबक फूल जकाँ खिल उठल। किनको खुशीक कोनो सीमा नहि। सभ बाले-बच्चे लाठी-बहिंगा (पटै), हर-कोदारि, चौकी आदि लऽ खेती करए लेल खेत दिस चलला। आ कृपा महादेवक जे ऐ साल समय नीक रहल, संग देलक आ मनसम्फे उपजा भेल। सभ आनंदित छैथ। एकटा नव उत्साह आ आनंदक संग दोहाइ दै छथिन परमपिता परमात्माकेँ।

ठीक तहिना उपन्यासकार जगदीश प्रसाद मण्डलजीक द्वारा

लिखल उपन्यास “मौलाइल गाछक फूल”सँ पाप्त भेल खुशी आत्माकेँ तृप्ति कऽ देलक। प्रो. हरिमोहन झाजीक बाद बुझू जे मैथिली साहित्याकासमे बड़का रौदी नै अपितु अकाल पड़ि गेल छल। पाठक-बन्धु हक्कोपरास छला, उपन्यास नामक वस्तु पाठककेँ हेरने नै भेटैत छेलैन। आत्मा तँ उपन्यास पढ़ए लेल सदिखन व्याकुल रहैत छल। जइ कमीकेँ मण्डलजी दूर कऽ देलैन। लगातार एक-सँ-एक चिक्कन-चुनमुन उपन्यास लिख नै मात्र भारते अपितु आनो-आन देशमे रहएबला मैथिली भाषीक नजैरमे ख्याति पौलैन। अपन देशक कथे कोन नेपालक जनकपुरसँ लऽ तराइ क्षेत्रमे सेहो हिनक लिखल पोथी, उपन्यास, कथा संग्रह, कविता संग्रह, नाटक, एकांकी इत्यादि साहित्यक सभ विधा केर पोथी सहजताक संग उपलब्ध अइ। पोथी उपलब्ध सेहो मैथिली साहित्य लेल एक नवीन बात थिक। ओना, ऐ लेल हम श्रुति प्रकाशनकेँ अलगसँ धन्यवाद देत छिऐन।

प्रस्तुत उपन्यासमे अपने अपना अनुसारे केतौ कोनो तरहक कमी नै रखने छी। अपितु सागरमे गागर भरि समाजक सभ वर्ग, सभ जाति, स्त्री-पुरूष, ऊँच-नीच, छोट-पैघ, नीक-बेजाए, धनीक-गरीब, नेना-भुटका, जवान-जुआन लेल एकटा अलग संदेस छोड़एमे केतौ कमी नै रखलैन। जे पाठककेँ एक सांसमे उपन्यास पढ़ि जेबा लेल बाध्य कऽ दैत अछि। हमरा अनुसारे ई एकटा बड्ड पैघ उपन्यासकारक सार्थकता सिद्ध भऽ रहल अछि। यर्थाथवादी रूपमे गाममे रहितौं उपन्यास पढ़ए काल एहन लगैत अछि जे हम गाम नै अपितु मद्रासमे छी। मुदा मद्रासक चालि-वाणि, रहब-सुतब, लोक सबहक बाजब-भुकब, पैघ-पैघ कोठा-सोफा, अतिआधुनिक पैखाना घर आदि रहलाक बादो अपने अपना गामक माटिक यादि नै बिसैर सकलौं। जे रामाकान्त बाबू अपन गामक सोन्हगर माटिक सुगन्धक सिनेहकेँ स्पष्ट करैत कहैत छैथ-

“हौ जुगे, बिना माटिए हाथ केना मटियाएब?”

उपन्यासक पात्रक नामक अनुसार गुणक विलक्षण समाबेस करब अपने केतौ नै बिसरलौं। नामक अनुसारे कामकैं अपने स्पष्ट देखौने छी। समाजक जे जेहन लोक जेहन पदपर पदस्थापित छैथ। ओइ कार्य लेल समर्पण उपन्यासक विशेषता बतबैत अछि। ठाम-ठाम अध्यात्म, दर्शन, अपना संस्कृति आदिकेँ दर्शा देब सभ पाठक लेल मोन राखक योग्य बुझना गेल। यथा-

"ई भूमि जनकक राज मिथिला थिक। तँ मिथिलावासीकेँ जनकक रस्ता पकैड़ चलक चाही, जइसँ प्रतिष्ठा सभ दिन बरकरार रहत।"

ऐ उपन्यासक प्राय: सभ पात्रक चरित्र अति पवित्र, समाजिक समरसतासँ भरल बुझना जाइत अछि। हुनका लोकैनक सहज सज्जनता प्रकृत प्रदत्त बुझाइत अछि। समाज सुधारक जौं कोनो कथा हुअए तँ प्राय: सभ एक-दोसराक प्रति ओतबे जिम्मेवार सोभावत: बुझना गेल जे एकटा सुसभ्य समाजक समाजिक चिन्तनक प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ बुझना जाइत छैथ। उपन्यासक केन्द्रीय पात्र रामाकान्त बाबू छैथ। जे एकटा नीक जमीनदार होइतो समाजिक कर्त्तव्यपरायणता, इमानदारी, समाजक सभ जातिक प्रति सिनेह, उदारचित्त विचारधारा, वास्तविक मानवतावादक चित्र, मानवक प्रति कर्त्तव्य ओकर दुख-सुख, मरनी-हरनीमे संग पुरब, हिनक चारित्रिक विशिष्टता स्पष्ट देखबा योग्य अछि।

उपन्यासक आरम्भहिमे जखन कि गाममे अकाल पड़ि जाइ छइ। लोक सभ अन्न बेतरे मरए लगैत अछि। जनकेँ काज केतौ नै भेटै छै, खेती-खोलाक केतौ थाह-पथाह नहि, लोकक घरमे दिनक-दिन चुल्हि नै पजरै छइ। इनारोक पानि ससरि ततेक निचाँ चल गेलैक जे उगहैन सेहो छोट भऽ गेलैक। आ एम्हर बौएलालक प्राण भुखसँ छुटै-छुटैपर छल। तेहने दुरूह समयमे रामाकान्त बाबू द्वारा बड़की पोखैर उराहब, समाजक प्रति सहानुभूति हुनक हृदैक महानता देखल जाइत अछि। ऐ तरहेँ एक तँ लोककेँ विभिन्न प्रकारक अकर्मण्यतासँ बचा कऽ दोसर दिस, अन्नाभावसँ

ग्रस्त लोकक मरबासँ सेहो बचबैत छैथ। रामाकान्तबाबूक अवधारणा ई जे 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग भवेत्'क "अथवा सबए भूमि गोपाल की" स्पष्ट कऽ दैत अछि। तँए रामाकान्तबाबू समाजिक समरसता लेल तियागक मिसाल स्वरूप अपन दू सय विधा जमीन गामक भूमिहीन परिवारक बीच वितरण करबा दैत छथिन। ठीक ओहिना जहिना चीनक राजा चेन्पौ कएने रहैथ। जइसँ गामक सभ बेकती सुखी भऽ जाइ छैथ, आ गाँधीवादी विचारधाराकेँ आरो मजगूती भेट जाइत अछि। अर्थात् बेकतीगत खुशी वा सुख-शान्तिसँ एकटा समाज सुखी नै भऽ सकैत अछि। बल्कि समाजिक सुख-शान्ति लेल बेकतीगत सुख-शान्तिक तियाग करब मनुखक अहम कर्त्तव्य थिक। स्पष्ट अछि।

मनुख एक समाजिक प्राणी थिक, जे सोनेलाककेँ विपति पड़लापर फुदिया द्वारा कहल गपसँ स्पष्ट होइत अछि। जे "भाय, तोरा जे हमर खूनक काज हेतह, हम सेहो देबह।" स्पष्ट अछि जे समाजमे अहिना सबहक काज सभकेँ होइ छइ। उपन्यासक मध्यमे मण्डलजी गाम-घरमे पसरल धर्मभिरूताक चित्रण करब सेहो नै बिसरला। जे सोनेलालक आँगनवालीकेँ बिमारीसँ ठीक भेलापर आयोजित भंडारामे दू दलक साधु द्वारा जे एकटा वैष्णव आ कबीरपंथसँ सोनेलाल केना लूटल जाइत अछि। उपन्यासकार एहन समस्याक प्रति समाजकेँ सचेत करै छैथ।

आजुक मशीनक युग हमरा समाजकेँ कोन तरहेँ जोंक जकाँ पकड़ने अछि जे तरे-तर शोणित पीब रहल अछि मुदा पता तक नै चलै छइ। ई स्पष्ट करबामे शत-प्रतिशत सफल छैथ। कोन तरहेँ खून अपना खूनकेँ चिन्हबामे असमर्थ अछि एकदम स्पष्ट अछि जे महिन्द्रक पुत्र रमेश होस्टलसँ आबि अपन पिताकेँ गोड़ लागि ठकुआ कऽ आगाँमे ठाढ़ भऽ जाइत अछि, बाबा-दादीकेँ नै चिन्हैत अछि। बादमे पिताक कहलापर रमेश तीनू गोटेकेँ गोड़ लगलकैन। ऐ तरहेँ संयुक्त परिवारक महत्व जे

मिथिलाक धरोहरि छल। ओकरा एकल परिवार बूझु जे झकझौरि कऽ राखि देलक। जे मानवीय सिनेहक नष्ट होइत स्वरूप थिक।

ऐ प्रकारेँ उपन्यास "मौलाइल गाछक फूल"मे समाजिक जिनगीक विभिन्न प्रकारक समस्या आ ओकर समुचित समाधान तकबाक पूर्ण प्रयत्न केलैन अछि। "मनुष्यसँ परिवार बनैत अछि आ परिवारसँ समाज। जँ परिवार ठाढ़ भऽ जाए तँ समाज स्वत: आगू बढ़ए लागत।" मण्डलजीक समाजिक भावना आदर्शवादी भावनाक रूपमे परिलक्षित होइत अछि। जकरा धियानमे रखैत मद्रासमे डाक्टरी करैत डॉ. महेन्द्रकेँ गाममे एकटा स्वास्थ्य केन्द्रक स्थापनाक विचार गामवासीक सेवा लेल देखौल गेल अछि। उपन्यासमे जाति-पाति, धर्म-सम्प्रादयमे खण्डित भेल गाम-समाजमे छूआ-छूत, ऊँच-नीचक खाधिकेँ रामाकान्तबाबू द्वारा भजुआ डोमक ऐठाम जा कऽ भोजन करब समाजक बीच समरसता स्थापना आ छूआ-छूतक अन्त कऽ एकटा आदर्शवादी पूर्ण समाधान देखौलैन अछि। जेकरा अशिक्षासँ उत्पन्न लाइलाज बिमारीकेँ विचार मात्रमे परिवर्त्तन कऽ एकसूत्रमे बन्हबाक प्रयास, वरदान सावित भेल अछि।

उपन्यासक समस्त नारी पात्र यथा- रधिया, श्यामा, सुगिया, सोनेलालक बहिन आदिमे पतिपरायणता सुख-दुखमे संग साथ देब, भारतीय नारीक मर्यादाक स्पष्ट चित्र उपस्थित करबामे पूर्णत: सफल भेल छैथ। सुमित्राक पढ़ि-लिख नीक नर्स बनब आ सुजाताकेँ पढ़ि-लिख नीक डाक्टर बनब, नारीक अबला नै अपितु सबला रूप देखबामे अबैत अछि। एतबे नहि, उपन्यासक मादे मण्डलजी स्पष्ट दर्शा देलैन अछि जे गरीबो-गुरबामे ओ क्षमता छै जेकरा जँ कनिको सहयोग भेट जाए तँ ओ बहुत आगाँ बढ़ि सकैत अछि। नारीक एकटा अलग स्वरूप काली-दुर्गा आदि शक्तिक रूप सितिया केर चरित्र देखेबामे सफल रहला अछि। जखन आवारा छौड़ा ललबा ओकर इज्जत लूटए चाहै छै तखन सितिया

ललबाकेँ लाते-मुक्के थुरि-थारि कऽ राखि दइ छइ। बात ओतइ नै खतम होइछ अपितु जखन ललबाक गौआँ सभ हसेरी बान्हि सितिया गामपर हमला करैत अछि तखन सितिया झांसीक रानी बनि सभकेँ परास्त कऽ दइ छइ।

ऐ तरहेँ मौलाइल गाछक फूल उपन्यासमे सहजता, समरसता, यथार्थवाद, आदर्शवाद, धर्मभिरूता, एकल एवम् संयुक्त परिवारक रूप-रेखा खींच एकटा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण रूपमे उपन्यासकार हमरा लोकैनक मध्य उपस्थित छैथ। हुनक ई विधासँ उपन्यास जगतमे एक्केठाम सभ तरहक सुख, आनंदक अनुभव होइत छैन। आजुक समाज जे सभ तरहेँ मौलाएल अछि। अपना उपन्यासक मादे उपन्यासकार मात्र एक आदमी रामाकान्तबाबू हृदए परिवर्त्तन कऽ समाजमे एकटा नवका फूल खिलेबामे शत्-प्रतिशत सफल भेला अछि। रामाकान्त बाबू द्वारा अपन दू साए बीघा जमीन- सबहक माथपर एकहक बीघा खेत अर्थात् जेकरा सात गो बेटा ओकरा सात बीघा दऽ सभकेँ एकटा नव जिनगी प्रदान करैत छैथ। एक नव जिनगी जे पूर्णत: मौलाएल छल ओइमे फूल खिला दैत छैथ। हमरा आशा नै अपितु विश्वास अछि जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी सन उपन्यासकार होथि आ रामाकान्तबाबू सन नायक तँ अपन समाज रूपी मौलाएल गाछ मौलाएल नै अपितु डगडगीसँ भरल गाछ बनि फूलसँ लदि सकैत अछि। ❑

जीवन-मरण

जीवन-मरण उपन्यास, एकटा लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक अनुपम कृति अइ। हुनक लिखल अनेको उपन्यास, जे एक-सँ-बढ़ि-कऽ–एक अछि। जइमे उपन्यासकार द्वारा उठौल गेल विभिन्न प्रकारक समाजिक रूढ़िवादिताक ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत कएल गेल अछि। मात्र प्रस्तुतिकरण धरि कथा नै अपितु ओकर सामाधान तकबामे सेहो उपन्यासकार सतत् सफल रहला अछि।

प्रस्तुत उपन्यासमे मनुखक जे अपन जिनगी छै, ओकर जे अपन समाज छै, समाजक प्रति बेकती विशेषक उत्तरदायित्व होइत अछि से आ नवका पीढ़ी जे पश्चिमी सभ्यताक असभ्यतासँ ग्रसित भऽ असभ्य बनि गेला अछि, तैपर उपन्यासक आरंम्भमे एकटा कसगर चोट देलैन अछि।

देवनन्दन जे बेवसायसँ डाक्टर छैथ, पत्नी शीला द्वारा जनलैन जे पिताक मृत्यु भऽ गेल तैयो घबरेला नै सोचलैन पिताक अपन समाज छैन जइ बीच ओ अपन जिनगी बितौलैन। तँए उचित हएत जे हुनका अपना समाजमे पहुँचा दिऐन आ मृत्युक सभ कर्म समाजेक अनुकूल बढ़ियाँसँ करी, निर्णय लेलैन।

मोबाइलसँ नम्बर निकालि, टिपि अपन जेठ बेटा दयानन्दकेँ जनौलैन- “बच्चा, बाबू मरि गेला, तँए दुनू भाँइ गाम आऊ।”

मुदा वाह रे पश्चिमी सभ्यता! देखू हमरा लोकैनकेँ केना ग्रसित केने

अछि, दयानन्द बाजि उठला-

“बाबू, ऐ लेल गाम किअए जाएब? आब तँ बिजलीबला शबदाहमे आसानीसँ काज सम्पन्न भऽ जाइत अछि”

दयानन्दक विचार सुनि देवनन्दन कहलकैन-

“बच्चा, सभ जीव-जन्तुकेँ अपन-अपन जिनगी होइत अछि। आ जे जेहने जिनगीमे जीबैत अछि ओकरा लेल वएह जिनगी आनन्ददायक होइत अछि। जेना, चीनी, मिरचाइ आ करैला तीनूक तीन तरहक स्वाद, मीठ, कड़ू आ तीत होइए। मुदा की मिरचाइक कीड़ा आकि करैलाक कीड़ा चीनीमे जीब सकत? कथमपि नहि। जखन कि ओ तँ अधलासँ नीकमे गेल।”

पिताक बात सुनि दयानन्दकेँ आश्चर्य भेलैन, मुदा देवनन्दनक अनुसारे ऐमे आश्चर्य कोन। किएक तँ गामक दोसर नाम समाज सेहो छिऐ। जे शहर-बाजारमे नै अछि। ऐठाम उपन्यासकार समाजकेँ मानव नै मानवक जे मूल सभ्यता छै ओकरा एकैसम सदीक नव पीढ़ी लेल एकटा मिसाल देखौलैन अछि। जे वर्तमानमे आजुक पीढ़ी समाजकेँ नै बुझि किदैन बुझै छथिन, ओ बिसैर गेला जे समाज की थिक, ओकर मान-मर्यादा कि होइ छै, समाजिक बन्धन की छी, ओकर कानून-कायदा की छइ। आजूक वर्तमान आधुनिक समाज जइमे सभ अपने पाछू बेहाल रहैए। ओ केकर सुख-दुख, जीवन-मरणकेँ सुनत। ओ तँ भरिपेट नीक अन्न-तीमन खाएब मात्र जनैए। मुदा तइसँ की मन थोड़े अस्थिर भऽ सकैए। जाधैर आत्माक संतुष्टि नै हेतैक। बुझेबामे केत्तौ कोनो प्रकारक किन्तु-परन्तु नै राखि, मनुख एकटा समाजिक प्राणी होइत अछि, ओकर अपन एकटा समाज छै, जइमे सभ एक-दोसराक सुखसँ सुखी आ दुखसँ दुखी होइ छैथ, देखेबामे सफल भेला। वर्तमानमे जन्म जरूर जाति-समाजमे होइ छै, मुदा लगले आँखि-पाँखि भेने हमरालोकैन अपन मूल समाजकेँ भूलि- बिसैर आन समाजमे मिलि हूलि-मालि उठेने रहै छी।

केतेक दुखक बात भेल। कला आ संस्कृतिसँ दूर तँ सोभाविक रूपे छिहे ओना, हम सभ केतेको नोर मंचपर किएक ने बहा ली।

दोसर दिस उपन्यासकार मिथिलानिक एकटा गजब चित्र प्रस्तुत केलैन अछि। मैथिल नारी अपन पतिकेँ परमेश्वर मानै छैथ। जिनकेपर हुनका भरि मांग सेनुर आ भरि हाथ चुड़ी रहैत छैन। अपना पतिक प्रति केतेक निष्ठा रखै छैथ स्पष्ट अछि-

“अदौसँ सावित्री, अनुसुईया आदि ऐ विषयमे जगविदित छैथ। देवनंदनक माए सुभद्रा जिनका चेहरापर सोग नै अपितु सिनेह उभैर रहल छैन। मोने-मन आनंदित जे, जहिना हाथ पकड़लैन तहिना पार-घाट लगा देलैन। भरल-पूरल फुलवाड़ी अछि केतौ हेराएल रहब।”

मिथिलानिक महान विचार आ तियागक स्तरकेँ केतेक सुक्ष्म रूपेँ उपन्यासकार रखलैन अछि। तियागक मूर्तिक रूपमे ऐ तरहेँ स्पष्ट अछि जे पतिकेँ मुइला बादो हर्ष छैन जे हमरा अछेत मरला से नीके भेलैन। अन्यथा मोनमे लागल रहैत जे हुनक शेष दिन केहेन...।

सभ पौस-प्राणी गुनधुनमे पड़ल गाम चलल जा रहल छैथ। देवनंदन सोचथि, से नै तँ आइ समाजक काज पड़त। समाजक की महत छइ। मनुख कोन तरहेँ समाजिक प्राणी होइए, समाजक बीच बाबूजी केना जीबैथ, केतेक परिवारसँ दोस्ती छेलैन आ केतेकसँ दुश्मनी, गुनधुनमे पड़ल माएसँ पुछलखिन- “माए, केते परिवारसँ बाबूजी केँ दोस्ती छेलैन।” तखन माएकेँ मोन पड़लैन ओ समाज, जेतए सभ मिलि कुमरम, बिआह, सामा, घरक गोसाँइसँ लऽ कऽ दुर्गा स्थानक गीत मोन पड़ए लगलैन। देवनंदनक बात सुनि माए-सुभद्रा बजली- “छिया, छिया। मिथिलाक समाज छी। ऐ समाजमे मुर्दा जरबैले, केकरो घरक आँगि मिझबैले, केकरो-साँप-ताप कटने रहल आकि गाछ-ताछपर सँ खसलापर केकरो कियो कहै नै छइ। ई समाजिक काज छी। तँए, अपन काज बुझि सभ अपने तैयार भऽ जाइत अछि।”

ऐठाम उपन्यासकार मिथिला आ मैथिल समाजक एकटा विलक्षण उदाहरण दऽ अपन सभ्यता आ संस्कृतिक परिचय दऽ समाजक समुद्री रूपकेँ दर्शन करौलैन अछि। पूर्वोमे बाढ़ि एलापर करियाकाका आ देवनंदन द्वारा उठौल गेल कदम आबैबला समाज लेल एकटा आदर्श उपस्थित केलैन अछि। आखिर दिन बिसेक बाद सभ घुमि अपन-अपन घर आएल रहैथ। ओही समाजक एकटा अभिन्न अंग देवनंदनक पिता जे समाजक प्रतिष्ठित बेकती रघुनंदनक लहाश गाम पहुँचते आगू-आगू गाड़ी आ पाछू करमान लागल लोक। दियादीमे सबहक चुल्हि मिझाएल।

दोसर दिस उपन्यासकार जे मर्द-पुरुखक क्रिया-कलाप, स्त्रीगण सबहक गप-सप्प तँ एक दिस 111 बर्खक रधिया दादी गाइक गर्दनि जकाँ लटकल चमरी, बाइस गाहीक बर्ख भेल, पूर्वमे रधुनंदनकेँ केतेको दिन दूध पिऔने रहथिन, उपस्थित कऽ समाजिक आ मातृत्व प्रेमक ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत केलैन। जिनका दादी जूरशीतलमे अछिंजलसँ असिरवाद दऽ फगुआमे रँगो खेलाइत छेली। से सप्तरंगी समाजक इंद्रधनुषी सम्बन्धक एकटा विलक्षण उदाहरण अछि।

श्राद्ध-बिआह समाजेक काज होइते अछि। समाज तँ समाजे होइए तहूमे ओहेन समाज जैठाम रघुनंदनकेँ उत्तरे-दछिने सुता उज्जर दप-दप वत्रसँ छाँपि सिरहानामे धूप-गुगुल जरैत अछि। तैबीच बचनू, चंचन, झोली, बौकू, बतहू देहपर तौनी आ डाँरमे धोती पहिरने कान्हपर कुरहरि नेने संग-मिलि कानी-गाबी आ हँसी ऐ सँ पैघ सुख केकरा कहबै? जइ सुख लेल लोक नीच-सँ-नीच काज करैए मुदा पाबि नै पबैए। ऐठाम उपन्यासकार भौतिक सुखकेँ सुख नै मानि आत्मिक सुख, अतिइन्द्रिय सुख जइसँ आत्मिक शान्ति भेटै छै, ओ वास्तविक सुख थिक। तँए मात्र दैहिक सुखकेँ क्षणिक आ आत्मिक सुखकेँ वास्तविक बता अपनाकेँ आध्यात्मिक हेबाक सेहो परिचय दऽ समाजोकेँ आध्यात्मिक बातपर चिन्तन-मनन अनुकरणक प्रेरणा देलैन अछि।

समाजक समस्त काजक जिम्मा करियाकाकापर छैन। समाजक ऊँच-नीच, छोट-पैघ सभ जातिक लोक, जाति-परजाति सभ मिलि रघु कक्काक काजमे पूर्ण सहयोग देबए चाहै छैथ चाहे ओ किर्तनिया हुअए आकि भजनिया, लेलहा हुअए आकि बौका, सुन्दर काका होथि वा छीतन भाय दुनू परानी जे जातिक डोम छैथ। जे पूर्वमे गुनापर रघुकाकाकेँ पाँचटा गीत सुनौने छला। जीविते छैथ छीतन भाय। छितनो भायकेँ बरियातीमे हकार देब नै बिसरब, समाजक जाति-पातिक कुप्रर्थासँ निकालि मनुखक जे एकटा अपन समाज होइछ, मनुखक जे एकटा जाति होइए जइमे सभ वर्ग आ वर्णक लोक रहैए, वास्तवमे ओ ने समाज छी। ओइ जातिगत भावनासँ ग्रसित समाजकेँ ऊपर मुहेँ उठा स्वच्छ वातावरणमे शुद्ध साँस लेबाक बाट देखौलैन हेन। जहिना हवा अनेक गैसक मिश्रन छी तहिना तँ समाजो अनेक वर्ग आ वर्णक मिश्रण छी। जौं से नै तँ कियो एक-दोसरक बिना जीब सकत? सम्भव नहि, मुदा से बुझैत लोक अपने स्वार्थमे आन्हर भेल रहैए। आ फल्लंमा डोम तँ फल्लांमा दुसाध ई संस्कार नैन्हियेटा सँ माए-बाप देबामे पाछू नै रहै छैथ। आखिर एकटा प्रश्न हमरा तरफसँ, अहाँ प्रबुध समाज लेल अछि, जौं समाजमे सभ जाति नै रहत तँ की समाजिक जीवन चलि सकत यदि हँ तँ केना? जौं नै तँ फेर एहेन भावना किएक? डोमसँ हम छूबल जाएब, मुदा ओकर बनौल चीज-बौस गौसाँइ-पितरपर चढ़त तँ की इष्ट-देव नै छुऔत। जौं छुआएत तँ सनातने सँ किएक ने..? आ जौं देव-पितर नै छुआएत तँ हमरा-अहाँकेँ छुएबाक कोन आधार बनल अछि??

झाँपले परदामे उपन्यासकार जाति-प्रथाकेँ तोड़ि एकटा आदर्शवादी समाज स्थापनापर जोर देलैन। जहिना फुलवाड़ीमे जुही, चमेली फूल रहैत अछि तहिना गेना, गुलाब सेहो। अधला नै तँ नीकक महत्ते की? तीत नै तँ मीठक स्वादे की? कारी नै तँ गोरे की? तहिना तँ समाजो एकटा फुलवाड़ी होइ छइ। जइमे सभ तरहक लोकक अपन-

अपन भूमिका होइ छइ।

विचार करबाक थिक जे वैदिक पद्धतिपर चलए बला समाजक चित्र जे सहजे उपन्यासमे आएल अछि से तँ सहज अछि। मुदा आजुक ओहन समाज जइमे अलगाव अछि। मनुख-मनुखमे एतेक अन्तर किएक अछि? प्रश्नक संग इशारामे उत्तर सेहो बतेबामे उपन्यासकार पाछू नै हटलैथ। जेकर स्पष्ट उदाहरण रघु कक्काक बरियातीमे छीतन भाय सदृश लोककेँ अपन बाजाक संग भजन करैले चलैले कहि एकटा आदर्श समाजक परिपक्व छाप छोड़लैन अछि।

ओतबे नहि, एकटा कहावत अछि 'भेल-गेलपर शिव जगरनाथ' एहने एकटा बेकती छैथ फोंचभाय, पाही जमीनदारक टहलू धड़फराएल आबि छौंकए चाहै छैथ ई बाजि-

'सभ कथुक ओरियौन तँ देखै छी मुदा ससर आ घी कहाँ अछि?'

माने काज भँगठा एवम् भरिया देबए चाहलैन। मुदा लेलहा फोंचभायकेँ चौहटैत ई सावित कऽ देलकैन जे रघुकाका आ देवभाय सँ हमरो केकरोसँ कम अपेक्षा नहि। फोंचभाय कएल काजमे केवल गलतियेटा तकैबला लोक छैथ।

मुदा हाय रे उपन्यासकार, समस्त उपन्यासमे जीवन थिक तँ मरण असंभावी.., ई खेल चलिते रहैए। अही समाजक बीच लोक जनमो लइए आ मरबो करैए। पैघत्व तँ ऐ बातमे अछि जे जइ समाजमे रघुबाबू सन दाता छला आइ ओकरे ऋृण चुकबए खातिर अर्थी उठबैले बुझू जे मारि भऽ रहल अछि। तही बीच लेलहाक मुँहसँ अनायास निकलल जे सुनै जाउ, कान्ही लगा उठबियनु नै तँ दरद हेतैन।' सभ मानि गेल।

एक दिस आँगनसँ लहास उठल आ दोसर दिस शहनाइपर विदाइक धून। आहहा... यएह तँ सुख आ दुखक दुनियाँ छी। जीवन-मरणक सार्थकता छी। मुदा हमरालोकैन जीवनक एक्के भाग देखै आ जनै

छी। जीवन आ मरण सृष्टिक चक्र छी। ऐसँ कियो बाँचल कहाँ। एक दिस करियाकाका आ दोसर दिस सुन्नरकाका रघुभायकेँ अंतिम प्रणाम कऽ डेग आगू बढ़ौलैन। पाछू-पाछू देवनंदनक हाथमे आगि आ कोहा दऽ पाछू-पाछू बरिआती सजि विदा भेल। तइ पाछू करियाकाका रेलगाड़ीक गार्ड जकाँ पाछू-पाछू। गाछी पहुँच सभ कियो सभ कथुक जोगार अपना-अपना विवेकसँ लगा सिरहौना-पथौना रूपी औछाओनपर सुता एक-एक चेरा चढ़बैत छाती भरि ऊँच कऽ सुन्दरकाका देवक बाँहि पकैड़ धधकैत उक मुँहमे लगा देलकैन। बाँकी सभ काज समाजक निअमानुसार तेरहसँ सत्तर दिन धरि चलैत रहल। तही बीच हुलन दुनू परानी, जेकर आधा देह झाँपल आ आधा उघार छल, ओसारक नीच्चेसँ अपन कर्मकेँ धर्म बुझि प्रणाम केलकैन आ मने-मन सोचबो करए जे रघुबाबूक काजमे केते वर्तन लागत।

एमहर देवबाबू जिनका गाड़ामे उतरी छैन हुनकोसँ बेसी चिन्ता करियाकाकाकेँ छैन मुदा करियाकाकासँ कम कुसुमलाल पण्डितकेँ कहाँ छइ? ओकरा तँ ऐ बातक चिन्ता छै जे श्रधुआ वर्तनक काज तँ दसम-एगारहम दिन हएत, मुदा दहीक लेल?

ओतबे नहि, रघुनन्दन बाबूक काजक मादे ततबेक चिन्ता राजेसर नौआकेँ सेहो। जेकर काज एक दिस पुजबैक प्रकिया तँ दोसर दिस कर्म सम्पन्न करेबाक। मुदा एतेक सभ किछु होइतौ अपना समाजमे जे पण्डितक किरदानी छैन तेकरो बखिया उघारैमे केतौ कमी नै रखला अछि। जे नायकक रूपमे शिवशंकर छैथ जे अदौसँ अद्यतन आन-आन श्राध-कर्मक उदाहरण दऽ जजमानक खून उड़िस जकाँ पीबैत रहला जेकर साक्षात् उदाहरण सिट्ठी भेल समाज सबहक सोझामे अछि।

मनुख विचारसँ पैघ होइत अछि। विचार बदलल। नव पीढ़ीक प्रसादे सुन्दर आ दुधिगर गाए सभ सेहो गाममे आएल। तैबीच चाहक संग सभ अपन-अपन विचार रखलैन। जइमे सर्वसम्मतिसँ विचार यएह

भेल जे पाँच गोटे विचार कऽ डेग उठाउ,

1. श्राद्ध घरवारी आ कर्ताक अनुकूल हुअए। दानस्वरूप मात्र झरखंडी बाछा नै दागल जाए।

2. आन गामक पंच माने भोज खेनिहारसँ परहेज कऽ गामक सभ जातिकेँ खुऔल जाए आन गामक दोस्त–कुटुम-दिआद तँ रहबे करता। ऐ प्रकारे उपन्यासक मादे उपन्यासकार हमरालोकैनक बीच व्याप्त विभिन्न प्रकारक नीक आ अधला प्रथा-रीति-चलैन-मान्यताक बीच विभिन्न प्रकारक लोक सबहक अमुल्य विचार आ ओही समाजक दालि-भातमे मुसलचन्दक उदाहरण दऽ ओकरासँ सावधान केलैन। सृष्टिक जे चक्र छी जीवन-मरण जइसँ कियो बँचि नै सकै छी जेकरा समाज आ कर्त्ताक मनोनुकूल कऽ समाजमे रचनात्मक काज करी ऐ लेल एकटा दिशा-निर्देश देलैन। जेकरा देवनन्दनजी अपने शब्दे स्वीकार कऽ पिताक निम्मिते साले-साल भोजे नै बल्कि यथासाध्य कल्याणकारी काजक प्रेरणा देलैन। ❑

बेटीक अपमानपर एक नजैर

मैथिली साहित्यक एकटा विधा नाटक अछि। जे विधा सभ दिन रौदियाहे सन रहल। गिनल-चुनल नाटककारक किछु नाटक जे आँगुरपर गनल जा सकैत अछि, दोगा-दोगी कोनो पुस्तकालयक शोभा मात्र बढ़ौलक। एकटा समय छल जइमे नाटककार जे नाटक लिखलैन तइमे वाक्-पटुता नै रहबाक कारणे वा शुद्ध-अशुद्ध उच्चारण नै भेने वा समुचित वाद-संवादक संग समदियाक अभाव सभ दिन देखल गेल। चूकि ओना, हम जेते-जे ढकि ली मुदा एकटा सत्यकेँ स्वीकार करए पड़त जे हम मैथिल छी। हमरालोकैनक मातृभाषा मैथिली भेल। मुदा माएकेँ माँ कहैत कनीको लाज विचार नै होइए। जेना कि आँखिसँ लाजक पानि खसि पड़ल। तात्पर्य मैथिल होइतों दोसर भाषाक दासताकेँ शिकार भेल छी आ ओकर भोग भोगि रहल छी। बुझाइत अछि जेना मैथिली लेल ऐठामक माटिए उसाह भऽ गेल अछि। जैपर गदपुरनि मात्र उपैज सकैए। मुदा ओहेन उसाह माटिपर “बेटीक अपमान आ छीनरदेवी” लिखि नाटककार बेचन ठाकुर, चनौरागंज, मधुबनी, मैथिली नाट्य जगतमे एकर सफल मंचन कऽ महावीरी झंडा गाड़ि मैथिली, समस्त मैथिल आ मिथिलाक मान-सानकेँ मात्र बढ़ेबे टा नै केलैन अपितु चारि-चाँद लगा देलैन। ऐ लेल ठाकुर जीकेँ समस्त मैथिली भाषी आ नाट्य प्रेमीक तरफसँ हम कोटीश: धन्यवाद दैत अपार हर्ष महसूस कए रहल छी। हमरा विश्वास अछि जे अपने ई दुनू रचना जेकर मंचन अपने अपनहि कोचिंग संस्थानक छात्र-छात्रा लोकैनसँ करा, ई साबित कऽ देलौं जे मिथिलाक माटिमे अखनो

ओतेक शक्ति बचल अछि जैपर केशरो उपैज सकैत अछि।

नाटककारक नाटकक विषय अति उत्तम छैन। वर्तमान शताब्दीक सभ मनुख ऐ बातसँ भिज्ञ अछि, सरकारी सर्वेक्षणसँ सेहो स्पष्ट अछि जे दिनानुदिन लिंगानुपात बढ़ि रहल अछि। सभ राज्यक अनुपात थोड़े ऊपर-नीचाँ भऽ सकैए मुदा कियो ऐ बातसँ मुँह नै मोड़ि सकै छैथ जे प्रति हजार लड़िका-लड़िकीक बीच एकटा बड़का खाधि बढ़ैत जा रहल अछि जइ खाधिमे लड़िकीक अनुपात निरंतर नीचाँ मुहेँ गिरैत जा रहल अछि आ हमरालोकैन कानमे तूर-तेल दऽ निचेनसँ सुतल छी। जौं ई क्रम जारी रहल तँ आगू की हएत से तँ सोचू!! ई एकटा प्रश्नवाचक चिन्ह छोड़बामे नाटककार एकदम सफल रहला अछि। एतबे नै आजुक वैज्ञानिक युगमे यंत्रादिक सहायतासँ ई जानि जे माइक गर्भमे पलैत बच्चा, बेटा नै बेटी छी... ओकर निर्मम हत्या करबामे कनिक्को कलेजा नै कँपैए!! जेकर कोनो कसूर नै ओकरा कुट्टी-कुट्टी काटि खुने-खुनामे कऽ माइक गर्भसँ बहार कऽ दैत छिऐ। जइ बेथे ओइ बच्चाक माए पनरह दिन धरि बिछौन धेने रहैत अछि। ऐठाम एकटा गप हम फरिछा कऽ कहि दिअ चाहै छी, ओ बेथा हुनकर ओइ बेटीक प्रतिए नै जेकर ओ हत्या करौलैन अछि अपितु शारीरिक बेथा छैन जइ लेल एत्ते आ एहेन कुकर्म करै छैथ। ओइ निर्दोष बच्चाक माए-बाप दुनू ततबाए दोषी छैथ। ओ ई नै बुझि रहल छैथ जे जइ बेटीक ओ हत्या करौलैन जौं ओ बेटी आइ नै रहैत तँ की अपने रहितौं? जौं बेटी नै हएत तँ सृष्टिक रचना सम्भव अछि? जौं हँ तँ केना वा नै तँ एहेन अपराध कऽ स्वयं किएक एतेक पैघ हत्यारा सावित भऽ रहल छी। रानी झांसी, लक्ष्मी बाई, सावित्री, अहिल्या, सती अनुसुइया, इन्दिरा गांधी, मैडम क्यूरी, मदर टेरेसा..., ईहो सभ तँ बेटीए छेली। जौं हिनको हत्या पूर्वहिमे कऽ देल गेल रहैत तँ आइ...। तखन आँखि रहैत एना हम सभ आन्हर किएक? वुधि रहैत मुर्खाहा जकाँ काज किअए करै छी?

मनुख तँ मनुख छी ने, छागर-पाठी आकि गाए-महींस तँ नै जे केतौ कोनो...। तहूमे साँढ़े-पारा अधिक भऽ जाए, गाए-महींस कम तखन की हएत? जौं ई हम-अहाँ नै सोचबै तँ के सोचता? ऐ हत्याक पाछाँ एकटा और कारण अछि जेकर नाओं थिक दहेज। मुदा उहो तँ हमहीं अहाँ लेबाल आ देबालो छिऐ। अखनो समाजमे आ प्राय: गाम पाछाँ एक-आध गोटे जरूर छैथ जे अपन बालकक बिआह एकटा नीक कुल-कनियाँ ताकि आदर्श बिआह कऽ उदाहरण बनै छैथ। ऐ काजक दोषीकेँ सजा नै दऽ निर्दोषकेँ जानेसँ मारि दुनू परानी ऐ पापक भागीदारी छी। छीं...।

शास्त्रो एकटा बात बतबैत अछि जे "यत्र नार्यास्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता।" मुदा ओकर पूजा की करबै, ओइ देवीक संसारमे एबाक अधिकारे छीनि, होइए जे बड़का काज केलौं।

जेतए समस्त विश्व ऐ समस्यासँ जरि रहल अछि ओतए नाटककार अपना नाटकक माध्यमे एकटा साधारणो लेखक सदृश अपन लेखनीक माध्यमे समाजमे ई संदेश देबामे पूर्णत: सफल छैथ जे समय रहैत जौं नै चेतब तँ नाटकक मुख्य पात्र दीपक सदृश हाल हएत। जे अन्तमे कनियाँक मुइला पछाइत अपनेसँ भात पसाबैथ, किएक तँ हुनक कनियाँ बरोबरि गर्भपात करेबाक कारणे शोनितक कमीसँ उड़ीस भऽ मुइली। एतबे नहि, बेटीक अभावमे नगद गीनि आ तखन पुतोहु घर अनला। तखन हुनका कवीर साहैबक ई पाँति मोन पड़ैत छैन, "सन्तो सभ दिन होत ने एक समाना।" आबो जौं नै चेतब तँ अहिना टाका दऽ बेटी बेसाहऽ पड़त। निरंतर चीज-बौस जकाँ बेटियोक दाम बढ़ैत जाएत, जेकरा किनैत-किनैत अहाँक प्राण निकलि जाएत। किएक तँ अपना समाजमे एकटा नै कएक टा मरूकियाबला अखनो जीविते अछि। जे चारि लाख एकावन हजार टाका नगद आ सभ सरंजाम संगहि बरिआती ऊपरसँ। चेतु हे मैथिल आबो चेतु। नै तँ आब ओ दिन दूर नै जे गाड़ीपर

नाव रहत। आब बेटी अपन अपमान बरदास नै कऽ सकैए।

ऐ प्रकारे नाटककार समाज लेल एकटा पैघ संदेश दऽ रहल छैथ जे गर्भपातसँ पैघ कोनो पाप नै होइत अछि। तँए ऐ पापसँ बची आ बेटीक बाप बनी। अहुना बेटा आ बेटी दुनू कोखिक श्रृंगार होइए। ऐ तरहें श्री बेचन ठाकुरजी हमरा लोकैनकेँ नीन तोड़ैमे सफल रहला। जे हुनक कक्का श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक प्रेरणापूर्ण आदर्शवादी बेकतीक हाथ हुनका माथपर छैन। हम सेहो बिनु मंगने शुभकामना दैत छिऐन, रहबैन, जे अहिना नाटक लिखैत रहथु, मंचन करबैत रहथु, हम समीक्षा।

धन्यवादक पात्र श्रुति प्रकाशनक श्रीमती नीतू कुमारी आ नागेन्द्र झाजी केँ जे प्रकाशन समस्त भार उठा कृतज्ञ हेबाक मौका देलखिन। जौं विदेह प्रथम पाक्षिक पत्रिकाक सह सम्पादक उमेश मण्डल एवम् सम्पादक गजेन्द्र बाबूकेँ जिनक अथक सहयोगक प्रसादे प्रकाशनक रस्ता सुगम आ प्रकाशन सफल भेल। तँए नै लिखब, कहब तँ अनुचित तँए अपने...। ❑

जीवन-संघर्ष

मैथिली साहित्याकाशमे एकटा एहेन नक्षत्र जे आरदरा नक्षत्र जकाँ सुधी पाठककेँ सभ तरहेँ मनोरंजनसँ लऽ आदर्शवादी समाज, बेकती, व्याक्तिक कुत्सित एवम् दमित भावना, मनमे उठैत विभिन्न प्रकारक समस्या आ ओकर निदानक रूपमे भरिपोख मार्ग दर्शन करैत अछि, जीवन-संघर्ष। जीवन संघर्ष थिक आ संघर्षे जीवन। जौं जीवन अछि आ जीवनमे संघर्ष नै तँ ओ जीवन जीवन नहि। तहिना जदी संघर्ष अछि तँ ओ संघर्षे जीवन थिक। एक-दोसराक बिना दुनू शब्द अपूर्ण सन बुझना जाइत अछि। जीवन अछि तँ संघर्षसँ अपने बँचि नै सकै छी आ संघर्षेकेँ जीवन मानि लेब जीवन थिक। अर्थात् जीवन-संघर्ष उपन्यास अपन संज्ञाक अनुसार आदिसँ अन्त धरि खड़ा उतरल अछि। सम्पूर्ण उपन्यासमे जे पात्र लोकैन छैथ ओ करवनो संघर्षसँ अलग नै भऽ सकला अछि। जे संघर्षकेँ स्वीकार कऽ लेलैन हुनका जीवन लेल एक नै अनेको बाट स्वागतार्थ प्रकृतिक संग नैसर्गिक सुख लऽ उपस्थित भेल।

उपन्यासकार एकटा लब्ध प्रतिष्ठित जाहुरी जकाँ विभिन्न प्रकारक संघर्षकेँ जे देखौलैन तँ ओकर समाधानो तकबामे केतौ पाछाँ नै रहला। जीवनमे संघर्षक समाधाने तँ जीवनक अभिप्राय थिक। ऐ बातकेँ स्पष्ट करबामे उपन्यासकार शत-प्रतिशत सफल भेला। उपन्यासक आदियेमे उपन्यासकार बँसपुरा गामक एक गोट नवविवाहित यौवना जे जीवनक आ यौवनक सुआद मात्र बुझने हेती। गामक सटले आयोजित दुर्गापूजाक मेला देखए गेली। गनगनाइत मेला चहुओर लॉडस्पीकरक गगनभेदी

आबाज चरिकोसिक नीन्न उड़ेने, गामक तीनटा लफुआ छौड़ा बहला-फुसला कऽ भनडार घर लऽ जा हुनका संग बलत्कार...। समाजक सामंतवादी व्यवस्थाक ज्वलंत उदाहरण अछि। आखिर ऐ तरहक जे बेवस्थाक हमरा समाजक बीच बाल-बच्चामे व्याप्त अछि जे माए-बहिनक संग बलात्कारक संग प्रस्तुत हुअए तखन इज्जत केकर बँचि पौत? के इज्जतदार रहता? एकटा प्रश्नचिन्ह छोड़बामे उपन्या्सकार पूर्णत: सफल भेला अछि।

समाजमे व्याप्त ई जे कुबेवस्था अखनो अछि निश्तुकी ओ हमरा सभकेँ लज्जित करबामे कनियोँ धोखा-धड़ी नहि। जइसँ सम्भव अछि जे समाजक ऐ कुबेवस्थासँ गाम-घरक धारमे पानिक बदला शोनित बहए लागत। उपन्यासकारक उपन्यासक उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे पत्नी-बेटीक मुँहक बात सुनैत-सुनैत पतिकेँ कहलक-

“जहिना हमर बेटीक इज्जत सिसौनीबला लूटलक तहिना सिसौनीक दुर्गास्थानमे मनुखक बलि परत।”

मुदा बाह-रे उपन्यासकार! जखन सम्पूर्ण बँसपुराबला सिसौनीबलाकेँ कचरमबध कऽ लहाशक ढेरी आ शोनित बहबैले तैयार रण लेल शंखनादक ध्वनि, लाठी, फरसा, गराँस लऽ मरै आ मारैले सिसौनी दिस बिदा भेल तखन गामक सभसँ बेसी उमेरक मनधन बाबा द्वारा रस्तापर चेन्ह दऽ ई कहब-

“ऐ डाँरिसँ जौं कियो एक्को डेग पएर आगाँ बढ़ेबह तँ हम एत्ते प्राण गमा देब।”

मनधन बाबाक ई एक वाक्य, आगिमे पानिक काज केलक। सभ शान्त भऽ जाइ छैथ।

तखन सिसौनी दुर्गापूजाक प्रतिरूप बँसपुरामे कालीपूजा ठानल गेल। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष चुनल गेला। एक्कैस आदमीक कमिटी बनौल

गेल। कोनो काज हुअए ओ सर्वसम्मतिसँ हुअए। ऐठाम उपन्यासकार समाजिक सद्भावनाकेँ स्पष्ट करबामे शत-प्रतिशत सफल भेला। जे उत्तर आधुनिक कालक मध्य उन्नत समाजवादी दर्शनक कसौटीक झलक सहजहि भेल। समाजकेँ आगाँ बढ़ेबामे दसगर्दा काज जरूरी अछि। जाधैर लोकक मनमे दसनामा काजक प्रति झुकाउ नै हेतैक ताधैर समाज आगू मुहेँ बढ़त केना? समाजेक बीच मंगल सन सोझमतिया लोक अछि तँ गणेश सन ठकहर सेहो। जइ सम्बन्धमे उपन्यासकार कहए चाहैत छैथ-

"एक्के कुम्हारक बनौल पनिपीबा घैल सेहो छी आ छुतहरो। मुदा देखैमे दुनू एक्के रंग होइ छइ।"

उपन्यासकारक नजैर लगिचाइत अमवसिया दिन साँझे दिवाली आ निशा रातिमे कालीपूजा। गाममे आएल धी-बहिनसँ बेसी साइरे-सरहोजि, तहूमे परदेशिया सारि-सरहोजि आबि कऽ गामक तँ रंगे बदैल देलक। मेला लेल मुजफ्फरपुरसँ नाटक आ मेल-फिमेल कौव्वालीसँ लऽ महिसोंथाक नाचक आयोजनक संग विभिन्न प्रकारक दोकान सभपर नजैर सेहो छैन। मेलामे विभिन्न प्रकारक दोकानक बीच, चेस्टरबला दोकान सेहो उपन्यासकारक नजैरसँ नै बँचि सकल तँ दोसर दिस रमेसरा सन लोकक ई कथन-

"धूर बुड़ि दिल्ली तँ हौआ छिऐ।"

अर्थात् पलायनवादी संस्कारकेँ चुनौती दैत गामेमे आयोजित कालीपूजामे बाजार देख चारि-पाँच हजारक समान बनौलक। जे नोकर नै बनि मालिक बनब! केतेक पैघ स्वाभिमानक परिचायक अछि? एवम् प्रकारे विभिन्न प्रकारक जाति विशेषसँ जुड़ल व्यवसायपर बल दऽ ग्रामीण उद्योगकेँ बढ़ाबा देलैन, जे सम्राज्यवादी प्रदूषणकेँ साफ करैत अछि।

ऐ प्रकारे उपन्यासक सार समस्त मिथिला आ मैथिल समाजक

समस्याकक चित्रण करैत अछि। समाजक बीच व्याप्त विभिन्न प्रकारक समस्या जे चाहे पलायनवादी होइ वा किसान मजदूरक। सरकारी मसोमातक होइ वा समाजिक मसोमातक। विभिन्न प्रकारक जाति विशेषसँ जुड़ल व्यवसायसँ हुअए वा कोसी कहरक समस्या। हमरा समाजक बीच धर्मक आड़िमे राजनैतिक समस्या सभपर उपन्यासकारक दूर दृष्टि छैन। खास कऽ विधवा लेल कएल गेल प्रयासक पाछाँ बुझना जाइत अछि जे उपन्यासकार कोनो-ने-कोनो रूपमे नायकक भूमिकामे होथि। चूँकी विधवाक समस्याकेँ एतेक लगसँ देखब आ ओतेक बढ़ियाँ समाधान निकालब साधारण बेकती लेल सम्भव नहि। अन्धविश्वासक आड़िमे भगति खेला केकरो शीलभंग करब आ जहल काटब, सेहो उपन्यासकारक नजैरसँ नै बँचि सकल। समाजेक मंगलक विचार जोगिनदरकेँ नीक लागब आ समाजिक विधवाक सहायताक उपाए करब, किनको नीक लागि सकैत अछि। एतबे नहि, दुखनीक विचारकेँ दुखनियेक शब्दमे उपन्यासकार लिखलैन-

"हमहूँ तँ पाइयेबला ऐठीन रहलौं मुदा सभ सुख-सुविधा रहितो ओकरा एहेन नीन कहाँ होइ छइ।" देखै छी जे पेट खपटा जकाँ खलपट छै, भरिसक खेबो केने अछि कि नहि। तखन जोगिनदर घुट्ठी हिलबैत बाजल-

"काकी, काकी...।" आ मोटरी खोलि जोगिनदर जोर भरि साड़ी, साया आ एकटा आँगीक संग दसटा दस टकही आगूमे राखि देलक। ऐ तरहक समाजक दबल-कुचलल मसोमात वर्गक सेवाधारीक रूपमे हुनक यथार्थ सेवा भावना ओहिना झलकि रहल अछि, जे ओ केतेक पैघ समाजसेवी छैथ।

ऐ तरहेँ उपन्यासक एक-एक पाँति जीवन-संघर्षक सार्थकताकेँ प्रमाणित करैत अछि। पाठककेँ उपन्यास- जीवन एकटा संघर्षक रूपमे बुझना जाइत अछि। प्रस्तुत उपन्यासमे सभ तरहक उदाहरण- हँसब,

बाजब, कानब, मारि-पीट इत्यादिसँ लऽ नव उत्साह, नव चेतना आ नव दिशा भेटैत अछि। आन कोनो ओझराएल उपन्यासकार जकाँ जिनगीकेँ कोनो चौबट्टीपर नै छोड़ि बल्कि एकटा नव सृजनात्मक रस्ता खोजि पाठकक संग समाजोक लोककेँ देखौलैन अछि। जहिना नदीक पानि अपना जीवनमे अनेको उतार-चढ़ाबकेँ पार करैत अपन बाट अपने बनबैत अछि तहिना प्रस्तुत उपन्यासमे उत्पन्न भेल समस्याक समाधान करैत समाजोकेँ एकटा प्रशस्त मार्ग देखबैत निर्विरोध आगाँ बढ़ल जा रहल अछि। उपन्यासमे एकटा समस्या नै अपितु अनेको समस्या उपस्थित होइत अछि मुदा ओइ समस्याक स्वत: बुधि-विवेक द्वारा निदान सेहो समस्येसँ निकलैत अछि। समाजक सभ वर्ग चाहे ओ दुखनी हुअए आकि पवित्री, श्यामा हुअए आकि तमोरियावाली भौजी। नारीक एकटा सशक्त शक्तिक रूपमे देखा उपन्यासकार एकटा कृत केलैन अछि। सम्पूर्ण उपन्यासमे उपन्यासकार मिथिला समाजक सभ्यता एवम् मान्यताकेँ देखाएब सेहो नै बिसरला अछि। मैथिल बेटीक प्रेम माए-बापक प्रति श्यामा द्वारा आनल गेल पाँच गो दलिपुड़ी, एक धारा चाउर, सेर तीनियेक खेसारी दालि, एकटा उदाहरण अछि। ओतबए नहि, मसोमात दुखनीक बेटा भुखना द्वारा आनल रूपैयाक गड्डी देख ई बाजब आ सोचब-

“झाँपह-झाँपह नै तँ लोक सभ देख लेतह। आखिर ढहलेलो अछि तँ बेटे छी किने।” मने-मन भगवानकेँ गोड़ लागि बाजल-

“भगवान केकरो अधला नै करै छथिन।”

उपन्यास जेना-जेना आगाँ बढ़ैत अछि सारगर्भित भेल जा रहल अछि। पाठक एकसूरे पढ़ैले बाध्य छैथ। उपन्यासक मादे भोजनो-भातक धियान नै रहि जाइत अछि। अन्त: उपन्यासक सारक रूपमे प्रोफेसर कमलनाथ द्वारा प्रस्तुत कथन-

“रतुका घटना दुखद भेल। मुदा ओ काल्हुक भेल। कालक तीन

गति, भूत, वर्तमान आ भविस । जे समय बीत गेल वएह समय वर्तमान आ भविसक रस्ता देखबैत अछि। ढंगसँ एकरा बुझैक खगता अछि। दुखक भागब माने सुखक आएब भेल।”

ऐ प्रकारे जीवन-संघर्ष उपन्यास कल्पना नै अपितु यथार्थपर आधारित बुझना जाइत अछि। तँए अन्तमे ई कहब जे आशाक संग जिनगीकेँ आगू मुहेँ ठेलैत पहाड़पर चढ़ा अकासमे फेक दियौ। स्पष्ट अछि जे जीवन संघर्ष थिक आ संघर्ष जीवन, अर्थात् जगदीश प्रसाद मण्डलक जीवन-संघर्ष। आ प्रकाशक छैथ नागेन्द्र कुमार झा जे मैथिली साहित्याकाशमे पोथी प्रकाशनक झंडा फहरा-फहरा कऽ बहुत किछु कहि रहल छैथ। ऐ लेल श्रुति प्रकाशनक संग उपन्यासकारकेँ सेहो दुर्गानन्द तरफसँ बहुत-बहुत साधुवाद। ❑

टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने

तारीख 10/6/2012 दिन रवि, निरमलीसँ पटना जेबाक हेतु, स्थानीय मिलानपथसँ संध्या 8 बजे सरकारी बस द्वारा गोसाँइ-पीतरकेँ सुमरि, आरक्षित जगहपर बैसल। मनमे सदिखन देव-पीतरक यादि, ताकि यात्रा शुभ हुअए। निर्धारित समयसँ बस खुजल। भुतहा, नरहिया, फुलपरास होइत चनौरागंजमे काका (श्री जगदीश प्रसाद मण्डल) केँ गोर लागि आदरक संग बैसौल। हुनका छोड़क हेतु बेरमा गामक केतेक लोक जेना कपिलेश्वर राउत, लक्ष्मी दास, शिवकुमार मिश्रा, अखिलेश, सुरेश, मिथिलेश आदि आएल छेलैन। राति भरि देव-पीतरकेँ सुमरैत तीन बजे भोरमे दुनू बापूत पटना पहुँचलौं। बससँ उतरि प्लेटफार्मकेँ गमछासँ झारि बैसलौं। ओंघीसँ आँखि डोका सन-सन आ रंग अरहुल सन। जाकि आँखि मुनलौं आकि काका उठौलैन जे उठु-उठु प्रात भऽ गेल। से ने तँ नदी-तदी तरगरे फीर लिअ। फरीच्छ भेलासँ सुलभ शौचालाइओमे नम्मर लगाबए पड़त। सएह कएल। आँखि मिड़ैत डेग शौचालय दिस बढ़ौल। बेरा-बेरी दुनू बापूत नदी फिरलौं। गामक बनौल दतमनि, जेकर ऐगला मुँह थकुचल आ पछिला भाग चीरल। मुँहमे दऽ चारिए घुस्सा ऐ कातसँ ओइ कात धरि दऽ कुरूर-आचमनि कऽ आगू बढ़लौं। एम्हर काका अखियासै छला जे चाहक दोकान केम्हर छइ। जे पहिने एक-हक गिलास चाह पीब लैतौं तखन जे होइतै से होइतै। गाँधी मैदानक उत्तरवारि कातमे धुआँ होइत देखलिऐ। तखन भरोस भेल। सहटि कऽ लग गेलौं। चुल्हि पजारनहि छल। ब्रेंचपर बैसैत दू गिलास चाहक आग्रह केलौं। समय

साफ भऽ गेल रहैक। काका कहलैन जे से नै तँ कोनो टेक्सीबलाकेँ ताबत भाँजि ने लिअ, जे ओ हवाइ अड्डा जाएत, जौं जाएत तँ पाइ केते लेत? एकटा मुँहसच्च आदमीकेँ देख हाक देलिऐ। आबि गछलक। भाड़ा एक साए लेत सेहो कहलक। चाह पीब दुनू बापूत टेक्सीमे बैसलौं, बैसते विदा भेल। दुनू बापूत अनभुआरे रही। नै जानि हमरा कहैमे गलती भेल आकि ओकरा सुनैमे। ओ तँ हवाइ अड्डाक बदला मिठापुर बस अड्डा लऽ अनलक। आब तँ भेल तीतम्हा, ओ कहए जे नै सर हमरा तँ अहाँ बस अड्डा कहलौं, हवाइ अड्डा नहि। से ने तँ हमरा भाड़ा दिअ आ हम जाएब। कनी काल तँ केनादन लागल, मुदा फेर ओकरे कहलिऐ बरनी जे लेबह से लिहह मुदा हमरा सभकेँ हवाइ अड्डा उतारह। ओ कहलक ओतए जेबइ तँ और एक साए टाका लेब। ऐ तरहेँ दू साए रूपैआमे हवाइ अड्डा पहुँचलौं।

हवाइ अड्डामे जैठाम परम सिनेही श्रीमान् गजेन्द्र बाबूसँ साक्षात् दर्शन भेल। नमस्कार पाती भेलाक बाद बहुत बेसी उत्साहक संग हमरा लोकैनकेँ अपना गाड़ीसँ हवाइ अड्डाक भीतर लऽ गेला। लऽ जाइत जनौलैन जे हवाइ जहाजक यात्राक की केना निअम होइ छइ। गाड़ीसँ उतरलाक बाद गजेन्द्र ठाकुरजी हमरा दुनू बापूतक पाँच-सात गोट फोटो खिचलैन। हमहूँ हुनक फोटो अपना कैमरामे लेलौं।

मोबाइलक घड़ीमे सात बाजि गेल छल। हमरा लोकैन एक-दोसरासँ फराक होबक स्थितिमे आबि...। गजेन्द्र बाबू अपना बासापर गेला आ हम दुनू बापूत अपन-अपन पहिचान पत्र लऽ नीक लोक जकाँ लाइनमे ठाढ़ भऽ गेलौं। जनीजाति जकाँ मोटरी-चोंटरी तँ बेसी छल नै आ ने पंजबिया (पंजाब कमाइबला) जकाँ गरमीओ मासमे कम्मलक मोटा। तँए कोनो दिक्कतो नहियेँ भेल। जाँच-परताल करा लेलाक बाद प्रतीक्षालय जा आरामसँ बैसलौं। काकाकेँ कनी चाहक खगता बुझि आग्रह करैत अपनो सुतारलौं। ओना, आदैत भलेँ काकाकेँ छैन आ से नित्य दू बजे स्वयं चाह बना कऽ पीबक, मुदा हमरा से नहि, पहिनहि कहि

आएल छी जे भरि रातुक जगरना छल। तँए प्रति कप चालिस टाका देबामे अखरल नहि। ऐ तरहेँ किछु कालक पछाइत पुन: घोषणा भेल आ फेर दुनू बापूत लाइनमे लागि हवाइ अड्डाक भीतर मैदानमे गेलौं। दुइओ डेग तँ ने होइतै तइले अनेरे एकटा बड़का बस छल। जैपर चढ़ि हवाइ-जहाज लग गेलौं। पहिले भरि मन निंगहारि-निंगहारि कऽ देखलौं। पुन: अपना देवता-पीतरकेँ सुमरि हवा-जहाजक सीढ़ीपर चढ़ि भीतर गेलौं। मुहेँपर सिलेब रंगक चारिटा बच्चिया नाक-भौह चमका-चमका स्वागतमे हाथ जोड़ि अंग्रेजीमे कहलक- वेल्कम सर। आ भभा कऽ हँसि देलक जेना पढ़ौल सुगा हुअए। हवाइ जहाजमे सीट दुनू बापूतक एक्केठाम छल। सीट हेरि दुनू बापूत पहिने हबा-जहाजक भीतरक वातावरणक अवलोकन कएल। एना लगए जेना भरि जहाजमे बरफ खसि रहल होइ आ तैपर सँ गम-गम से करैत। बाहरमे जेते गर्मी भीतर ओतबए ठंढा कनीए कालक बाद मन एकदम्म शान्त भऽ गेल। तेकर बाद दूटा वयस्क बालक आबि अंग्रेजीमे किदैन-कहाँदन कहि हिन्दीमे दोहरौलक। जेकर भाव छल जे हमरा लोकैनसँ आग्रह करैत कहल गेल जे आब ई हाबा-जहाज अपना स्थानसँ स समय मुम्बइ लेल उड़ान भरत। कुल तीन घन्टा तीस मिनटक भीतर अपना स्थानपर पहुँचत। तँए अपने लोकैन अपना-अपना सीटपर राखल बेल्टसँ डाँढ़ बान्हि ली। सएह करइ गेलौं। हवाइ-जहाज गुड़कए लगल। करीब बीघा दसे गुड़कलाक बाद वाया मुहेँ घुमि अपन दिशा आ दशा बना बड़ी जोरसँ गुड़कए लगल। गुड़कैत-गुड़कैत एक्केबेर हबा-जहाज साफे कऽ धरतीकेँ छोड़ि अकासमे उड़ए लगल। जी तँ सन् रहि गेल। मुदा किछु कालक बाद स्थिर भेल। खिड़कीसँ निच्चाँ तकलौं। आहिरे बल्लैया ई तँ किछु केतौ ने देखिऐ। सौंसे उज्जर-उज्जर बादलेटा। बादलक संग हबा-जहाज उड़ल जा रहल छल।

हबा-जहाजक भीतर टेम-टेमपर चाह-जलखै भेटैत रहल मुदा बड़ महग..। खाएर छोड़ू। नअ पाँचमे जे हबा-जहाज खुलल ओ एक-

पैंतिसमे मुम्बइ हवाइ-अड्डापर पहुँचलौं। करीब पनरह मिनटक बाद लोक सभ उतरए लगला। पाछू-पाछू हमहूँ दुनू बापूत उतरलौं। उतरिते मुम्बइ हवाइ-अड्डा देख चकबिदोर लगि गेल। सभटा तँ देखलो सुनलो नहियेँ। कक्काक सह पाबि कल्लौ करबा लेल एकटा होटल पहुँचलौं। भोजन-साजन कऽ पुन: घुमि हवाइ-अड्डापर आबि लाइनमे लागि सामान चेक-चाक करा टिकट लऽ भीतर प्रवेश कएलौं। कक्काक चाह पीबाक समय सेहो भऽ गेल रहैन। ई हमरा बुझल छल जे गाममे अपनेसँ बना साढ़े तीन बजेक लगभग पीबै छथिन। जहाज तँ चारि चालिसमे छल। हाथमे एक घन्टा समय देख एक-कप कॉफी चारि बीस दस टाकामे किन दुनू बापूत पीबलौं। कनीए कालक पछाइत घोषणा भेल पटने जकाँ लाइनमे लागि मुम्बइसँ कोच्ची लेल भीतर जा बैसलौं। बैसते अपन घरक गोसाँइ आ देव-पीतरकेँ सुमरब सहजहि मनमे आबए लगल। पहुलके जकाँ सभ अनुभव करैत कोच्ची पहुँचलौं समय होइत रहै छह चालिस। मोबाइलक सुइच ऑन केलौं ऑन होइते एकटा संदेश आएल जे अंग्रेजीमे छल जेकर मैथिली रहए- हम प्रवीन कुमार सहयोगी मोहित रावत दिल्ली, उज्जर आ नील रंगक कमीज पहिर निकास द्वार लग ठाढ़ छी। हमरा दुनू बापूतकेँ धोती-कुर्ता देख ओ पुछलैन-

“अपने जगदीश प्रसाद मण्डल? हम प्रवीण कुमार। आउ अपने लोकैनक गाड़ी ठाढ़ अछि जे होटल छोड़ि देत।”

गाड़ीक चालक आगू बढ़ि दुनू बैग लऽ सम्हारि कऽ रखलैन। दुनू बापूत गाड़ीमे बैसलौं आ गाड़ी आगाँ ससरल। करीब चालिस मिनटक उपरान्त एकटा दस मंजिला मकान पूर्णत: वातानुकुलित, गोकुलम पार्क होटल कोच्ची, लग रूकल। यूनीफार्ममे सजल दरमान होटलक दरबज्जा खोलि ठाढ़ छल। गाड़ीक ड्राइवर बाहरक दरबज्जा खोललक। दुनू बापूत बाहर भेलौं। दरमान झुकि कऽ स्वागत केलैन। भीतर गेलौं आकि नजैर एकटा अठारह बर्खक नवयौवना अति विलक्षण सोभाववाली हिन्दी आ

अंग्रेजीमे निपुण अपन परिचय अंग्रेजीमे देलक। जेकर भाव छल, हम पूर्णिमा सैमसंग कम्पनीक तरफसँ सेवामे ठाढ़ छी। कहू हम अपनेक की मदैत कऽ सकैत छी? पूर्णिमाक दुनू हाथ जोड़ब, निच्चाँ उज्जर तंग जीन्स आ ऊपर सुगापाखि रंगक टीसर्ट, नमहर-नमहर कारी भौर केशक किछु लट दहिना कातक छातीपर खसल। तिलकोरक फड़ सनक दुनू ठोर लाल टुहटुह। भरि आँखि काजर। खूब नमहर-नमहर हाथ आ पोरगर-पोरगर ओगरी सभ जे कोनो नीक कम्पनीक चमकीबला नहरंगासँ रँगल। दुनू हाथ जोड़ि मूर्ति जकाँ ठाढ़ छल। देखते मन गद्गद् भऽ गेल। जे ऐ वयस्क वालिका एतेक शालीन! हमरा अपनो भाग्यपर गौरव भेल जे धनि हमर मिथिला, धनि हम मैथिल आ धन्य हमर मैथिली। जइ प्रतापे हम दुनू बापूत टैगोर साहित्य पुरस्कार प्राप्त करबाक हेतु मिथिलाक गाम बेरमा, भाया तमुरिया, जिला मधुबनीसँ चलि कोच्ची पहुँचलौं।

रिसेप्सनपर उचित आदर-भावोपरान्त रूम-नम्बर चारि साए छह केर कुंजी जे ए.टी.एम कार्ड जकाँ छल। पूर्णिमा हमरा सबहक संग आबि ओइ कुंजीसँ रूम खोलल। संगे ओही कार्ड रूपी कुंजीकेँ एकटा दोसर खोल्हियामे पैसौलक तँ भरि घर इजोत पसरि गेल। दू बेडक रूम। उज्जर धप्-धप् गद्दा-तोसक तकिया आदि अत्याधुनिक छल। सामने टेबुलपर एकटा एल.सी.डी, फोन आ चाह बनेबाक सभ सरमजाम छल। चाहक सरमजाम देखते काका तँ गद्गद् भऽ गेला कहलैन-

"दुर्गानन्दजी, सभसँ पहिले एकटा चाह पीबू।" सएह कएल। चाह पीबैत टीबी खोलि कनीकाल देखलौं। तात् पूर्णिमा मन पड़ली हुनकासँ हमरा एकटा बेगरतो छल। ओ अपन नम्बर देने छेली डायल केलौं पाँचे मिनटक पछाइत भीतर एली ओही अदाक संग। आग्रहपर बैसली। खगता कहलयैन जे हमर कैमराक बेटरी डॉन भऽ गेल अछि कनी चार्ज होइतए। पूर्णिमा हर्षक संग बेटरी लऽ रातुक भोजनक विषयमे सेहो बता देलैन। आ ई कहैत बाहर जेबाक अनुमति चाहलैन जे हम अही फ्लोरपर

रूम-नम्बर चारि साए दूमे छी। अपने लोकैनकेँ कोनो खगता हुअए तँ नि:संकोच बजा लेब। हम अहीं सबहक सेवार्थ आएल छी। धन्यवाद कहैत दुनू ठोरकेँ बिहुँसबैत पूर्णिमा रूमसँ बाहर भेली। लागल एना जेना बिजली चल गेल हुअए आ रूम अन्हार गुज-गुज भऽ गेल हुअए। पछाइत थोड़ेकालक, काका मोन पाड़लैन जे भोजनो करबै? हम कहलयैन- निश्तुकी।

अपन-अपन कुर्ता पहिर दुनू बापूत भोजन लेल द्वितीय तलपर पहुँचलौं। एक नजैर घुमा चारू कात देखलौं। अलग-अलग टेबुल आ कुर्सी लागल। सभ टेबुलपर कनीए टा-टा तोलिया, प्लेट, उज्जर धप्-धप् गिलास, पानिक बोतल आ काँटा चम्मच राखल छल। कनीकाल धरि दुनू बापूत गुमसुम रहलौं। जे पुछि-पुछि परसि-परसि खुऔत। मुदा ओतए तँ अपने-अपने परसि खाइबला हिसाब छल। बड़नी बड़ बेस। एकहक टा प्लेट लऽ दुनू बापूत आगाँ बढ़लौं। जे चीज-बौस चिन्है छेलिऐ ओ एकाधटा टुकड़ी उठा-उठा अपनो प्लेटमे राखी आ कक्कोकेँ दिऐन। मुदा जे अनचिन्हार चीज-वौस छल तइमे पूछए पड़ए। सेहो हिन्दीमे नै किएक तँ हिन्दी तँ कियो बुझबे ने करए। मैथिली कथे कोन जे मैथिलो आब टा-टा-बाइ-बाइ करैए। तखन पुछि-पाछि अपन-अपन पसिनक सभ सामग्री लऽ भोजन केलौं। भोजनक तँ विन्यासे जुनि पूछू, उत्तर भारतसँ लऽ दक्षिण भारतक सभ किथुक पूर्ण बेवस्था छल। भरि पोख भोजन दऽ दुनू बापूत आगाँ बढ़लौं देखलौं जे एकटा कराहीमे खीर सन किछु खाद्य पदार्थ छेलइ। अपना जोगरक लेलौं। खाइते मन गद्गद् भऽ गेल। तत्पश्चात आइसक्रीम लऽ भोजन सम्पन्न करिते रही ताबत् मोहित रावतजी हमरा लोकैनक खोज-पुछाड़ि करैत लग पहुँचला। हाल-चाल भेल। आराम करए गेलौं।

भिनसर तरगरे उठि नहा धो कऽ तैयार भेलौं। जलपान केलाक बाद दुनू बापूत होटलक निचला तलपर आबि समाचार पत्र आदि देख

रहल छलौं तखने रेणुका वातराजी एली। सबहक कुशल-छेम जानि आनन्दित भेली। एक-दोसरक परिचय-पात भेल। आ हमरा लोकैन ए.जे हॉल लेल विदा भेलौं। हॉल देख मन गद्गद् भऽ गेल। ए.जे.हॉल पूर्णत: वातानुकुलित बैस पैघ हॉल। जइमे हजारक-हजार विद्वान लोकैन बैस सकैत छैथ। बेस ऊँचगर मंच। जैपर दहिनासँ चढ़ैले आ बाँयासँ उतरैले सीढ़ी बनल छल।

कथाकार-साहित्यकार लोकैनक बैसैक बेवस्था, मिडियाबलाक आ आमंत्रित अतिथिक सबहक अलग-अलग बेवस्था छल। दिनक तीन बजे पत्रकार लोकैनक संग भेँटवार्ता छल। एक कात सातो विद्वान, कथाकार, उपन्यासकार आ कवि लोकैन आदिक बैसैक बेवस्था छल जिनका आगाँ नाओं लिखल नेमप्लेट छल। ओही दीर्घामे रेणुका वात्रा सेहो बैसली। बेराबेरी सभ विद्वान लोकैन अपन-अपन पोथीक एक झलक अंग्रेजीमे रखलैन। तकर पछाइत काका अपन पोथी संबंधी विचार मातृभाषा मैथिलीमे रखलैन। पूरा कक्ष विभिन्न प्रकारक कैमराक फ्लैशसँ चमकि रहल छल जेना साओन-भादवक बद्रीमे रहि-रहि बिजलोका चमकैत रहैत। विचार रखलाक बाद सभ विद्वान लोकैनसँ विभिन्न प्रकारक प्रश्न लऽ लऽ पत्रकार लोकैन लूझि पड़ला। सौभाग्यसँ हमहूँ विदेह प्रथम ई पाक्षिक पत्रिकाक सह सम्पादकक प्रतिनिधित्व करबाक हेतु उपस्थिति रही। आ पत्रकार लोकैनकेँ मैथिलीसँ हिन्दी आ अंग्रेजीमे भरि पोख संतोष प्रदान कएल। पाँच केम्हर दऽ कऽ बजलै सेहो नै बुझि पेलौं। सभ कियो ए.जे. हॉलक सभाकक्षमे प्रवेश कएल। अपन-अपन स्थान ग्रहण केलौं। आ शुरू भेल टैगोर लिटरेचर अवार्डक कार्यक्रम। ई तेसर पुरस्कार समारोह छल जेकर आयोजन ऐबेर कोच्चीमे भेल रहए। जइमे विभिन्न भाषामे साहित्यक योगदान हेतु सातटा भारतीय भाषाकेँ चुनल गेल, अंग्रेजी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, नेपाली आ सिन्धी रहए। जे पुरस्कृत कएल गेल। कोच्चीक बारह जूनक संध्या सैमसंग इण्डिया आ

साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्यमे सर्वोत्तम योगदान लेल सातो भाषाक लेखककेँ पुरस्कृत करबा लेल तैयार छल। जेकर चयन साहित्य अकादेमीक पंच-परमेश्वर द्वारा भेल छल। एक झलक ओइ महान विभूति लेल जे क्रमश: ऐ तरहेँ उपस्थिति छला- 1. श्री अमिताभ घोष, अंग्रेजी, सी ऑफ पॉपिज, 2. श्रीमती शीलाकोलम्बकर, कोंकणी गैर्र, 3. श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, मैथिली, गामक जिनगी, 4. श्री ॲकिथम अच्युतम् नामबुदरी, मलयालम- अंथिमानाकालम, 5. श्री एन. कुंजमोहन सिंह, मणिपुरी, एना कैंगे केनवा माटे, 6. श्रीमती इंद्रमणि दरनाल, नेपाली, कृष्णा–कृष्णा आ 7म श्री अर्जन हसीद, सिंधी, ना अएना ना।

ऐ कार्यक्रमक मुख्य अतिथि, डॉ. एम. विरापा मोइली, ओ.एन.भी कुरूप, एम.पी. विरेन्द्र कुमार, श्री अग्रहारा कृष्णमूर्ति, सचिव साहित्य अकादेमी दिल्ली आ श्री बी.डी. पार्क प्रेसीडेन्ट एण्ड सी.ई.ओ. साउथ-वेस्ट एसिया, मुख्य कार्यालय एच.क्यू, सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स छला। कार्यक्रमक दौरान नोवेल पुरस्कारसँ पुरस्कृत महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर केर सम्बन्धमे अपन-अपन बहुमुल्य विचार रखलैन। कार्यक्रमक उद्-घोषिकाक रूपमे साहित्य एवम् कलाक दुनियाँक प्रसिद्ध टी.भी. एंकर, मॉडल रजनी हरिदास द्वारा जबर्दस्त प्रस्तुति सबहक मनकेँ मोहि लेलक।

कार्यक्रममे पुरस्कार वितरण हेतु उद्घोषणक पछाइत विजेता विद्वान लोकैन मंचासीन होथि आ पुरस्कृत भऽ अपन-अपन स्थानपर आपस आबैथ। पुरस्कारक रूपमे गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोरक एकटा बेस कीमती मूर्ति, एकटा चिक्कन साल एवम् एकानबे हजार रूपैयाक चेक प्रदान कएल गेल। बीच-बीच मिडियाक कैमरा बिजलोका जकाँ लौकैत रहल। पुरस्कार पाबि श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन लिखल पोथी गामक जिनगीक विषयसँ पूर्व पोथी प्रकाशक श्रुति प्रकाशनकेँ धन्यवाद दैत विस्तारसँ मातृभाषामे अपन वानगी प्रस्तुत कऽ मिथिला आ मैथिलीक मर्यादाकेँ बढ़ौलैन।

कार्यक्रमक समापन भारत नाट्यमक प्रसिद्ध नर्तकी, कलाकार पद्मश्री शोभनाचन्द्र कुमार द्वारा भयंकर उत्साहपूर्ण स्तरीय नृत्यक संग भेल। पाँच बजे संध्यासँ दस बजे राति धरि बूझू जे छओ आँगुर घीऐमे छल जेकर सफलताक श्रेय सुश्री रूचिका बत्ता, रेणुका भान, सैमसंग

इण्डिया, बी.डी.पार्क आदिकेँ छैन। जे समस्त कार्यक्रमक दौरान काग चेष्टा आ बकोध्यानम् रूपमे रहला/रहली।

ऐ सबहक पश्चात हमरा लोकैन होटल आबि स्वरूचि भोजन कऽ आराम केलौं। प्रात: भने चारि बजे भोरमे अभिवादनक संग हाथ हिलबैत गाड़ीमे बैसलौं। मुदा अखनो ओ हमरा मने अछि...। ताबत गाड़ी कोच्ची हवाइ-अड्डा लेल प्रस्थान कऽ चुकल छल। राति दस-बजैत-बजैत यात्राक सम्पूर्ण आनन्द लैत दुनू बापूत गाम बेरमा-गोधनपुर आबि गेलौं। ❑

नेना लेल सुन्दर चित्रकथा

श्रीमती प्रीति ठाकुरक दू गोट चित्रकथा (पहिल गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा, दोसर मैथिली चित्रकथा) मैथिली साहित्यमे पहिल बेर श्रुति प्रकाशन नई दिल्लीसँ प्रकाशित भेल। दुनू चित्रकथा एक संग श्री उमेश मण्डलजीक माध्यमे भेटल। एक-आधटा पन्ना उनटैबिते मन गद्-गद भऽ गेल। लागल जे आब हम मैथिल दरिद्र नै सभ कथुसँ सम्पन्न भऽ रहल छी। साहित्यक तँ अनेको विधा होइ अछि जइमे कथा एक विधा थिक तहूमे चित्रकथा तँ बाल साहित्य लेल प्रमुख। चित्रकथाक माध्यमसँ अपन भूलल-बिसरल संस्कृतिक झलक सेहो भेटैत अछि। निश्चित रूपे मैथिली साहित्यमे एकर अभाव बहुत दिनसँ खटैक रहल छल। जेकरा श्रीमती प्रीति ठाकुर अपन चित्र कथा मैथिल समाजक बीच राखि एकटा असीम प्रतिभाक परिचय देलैन अछि।

बुझना जाइ छल जेना हम अपनेकेँ स्वयं बिसैर गेल छी। बिसैर गेल रही ओइ समयकेँ जइ समयमे मैयाँ अपन पोता-पोती लऽ जा कऽ घूर लग बैस गोनू झाक खिस्सा सुनबैत छेली जे अति मनोरंजक आ गोनूक तीव्र बुधिक परिचायक छल। तहिना आनो आनो कथा जेकरा प्रीतिजी चित्रवत् कऽ हमरा लोकैनक सोझामे रखली। जइमे रेशमा-चूहरमल, नैका बनिजारा, ज्योति पंजियार, महुआ घटवारिन, राजा सलहेस, छेछण महराज आ कालिदास छैथ। जे कहियो आम छल, आब लुप्त प्राय: भेल जा रहल छल, ओकरा एकबेर पुन: परिचित करौलैन। जइमे लोक जनलक जे रेशमा के आ चूहड़मल के?

एतबे नहि, प्रेमक पराकाष्ठाक परिचयक रूपमे जे लोकक ठोरपर हीर-राँझा वा लैला-मजनू रहैत छल, की ओकरासँ कम निस्वार्थ प्रेम रेशमा आ चूहड़मलक छल ई देखेबाकमे साकांक्ष रहली। जेतए चुहड़मल दुधवंशी दुसाध जातिक तँ दोसर तरफ रेशमा भुमिहार ब्राह्मण जातिक बेटी। जखन जुहड़मलकेँ दंगल जीत कऽ अबैत देखलक तँ दुनूक भेँट गंगाक तटपर, ओत्तै प्रेमकथाक प्रारम्भ भेल। अर्थात् प्रेममे जाति-पातिसँ कोनो लेन-देन नै अपितु प्रेम तँ प्रेम थिक। प्रेम कएल नै जाइ छै अपने भऽ जाइ छइ। तहिना नैका बनिजारा सेहो प्रेमेक पराकाष्ठाक परिचायक छी। भगता ज्योति पंजियार अपन वीरता आ पराक्रमक कारणे पूजित भेल। आइ जँ धर्मराजक पूजा होइ छैन तँ ज्योति पंजियार सेहो पूजित छैथ। धर्मराजक भक्त ज्योति पंजियार बारह बर्खक तपस्याक बाद कंचन काया लऽ कऽ घुमि घर एला। माइक कोखि पवित्र भेल। जे एहेन पैघ भगता ओकरा कोखिसँ जनमल।

तहिना महुआ घटवारिन सेहो अपन इज्जत बचाबए खातिर कौशिकी धारमे जान गमा अपन सतीत्वकेँ अकिंचन बना कऽ रखली। राजा सलहेसक कथा तँ नाचो रूपमे प्रसिद्ध अछि। जेकरा प्रीतिजी चित्रवत् कऽ इतिहास बना देलैन। एकटा धरोहरक रूप दऽ देलैथ। अनचिन्हार जकाँ छेछन महराज कथाक संग कालिदासक चित्र कथा आ हुनक यादव कुलमे जन्म हएब, हुनक यर्थाथ परिचय भेल। बहुतोकेँ ई बुझल हेतैन जे कालिदास तँ कर्ण-कायस्थ छला। ऐ लेल सेहो प्रीतिजीकेँ धन्यवाद। प्रीतिजीक दोसर रचना मैथिली चित्रकथामे कुल दस गोट कथा वर्णित अछि। जइमे राजा सलहेस, बोधि कायस्थ, दीना-भदरी, नैका-बनिजारा, विद्यापतिक आयु अवसान प्रमुख अछि। ऐ प्रकारे दुनू चित्रकथा पढ़लापर एहेन लागल जे ई कथा सभ ऐतिहासिक महत पौत। ऐ प्रकारक रचनाक सर्वथा अभाव सन छल। जेकरा प्रीतिजी हमरा सबहक समक्ष राखि एकरा धरोहरि स्वरूप महत देलैन। ऐ पोथीकेँ नैना-

भुटुकाक पहिल पसिन कहल जा सकैत अछि। खास कऽ जे बच्चा नंदन, वालहंश, वा अन्य पोथी पढ़बाक हिस्सक लगौने छल आब ओ लेखिका द्वारा रचित रचनासँ लाभ उठौत। पोथीक प्रत्येक चित्र तथ्यात्मक आ उद्देश्यपरक अछि। चित्रकथाक माध्यमसँ प्रीतिजी मिथिलाक विलुप्त प्राय भेल विषय-वस्तुकेँ कथाक रूप दऽ जीवंत कऽ देलैन। मैथिली प्रेमी ऐ तरहक रचनाकेँ नजरअन्दाज नै कऽ सकैत छैथ। आबैबला पीढ़ीले ऐ प्रकारक रचना नै मात्र मनोरंजक अपितु प्रेरणादायक सेहो सिद्ध हएत। पोथीक सभसँ पैघ बात ई अछि जे प्रत्येक चित्र एकटा विशेष अन्दाज आ दशाकेँ प्रस्तुत करबामे सफल भेल अछि जे लिखल गेल पाँतिक भाव स्पष्ट कऽ रहल अछि। प्राय: सभ जातिक लोकक चित्रण ऐ चित्रकथामे समाएल अछि। जे प्रीतिजीक समन्वयवादी सोचक परिचायक अछि। प्रगतिशील विचार तँ सहजहि। मिथिला सभ दिनसँ उदारक परिचायक रहल मुदा किछु लोक बेवसायिक एवम् जातिवादी सोचक लाड़ैन बीचमे चलौलैन आ चलाइओ रहल छैथ। हमरा हर्ख भऽ रहल अछि ऐ चित्रकथाक लेखिकापर जे एतेक सुन्दर, सुगम, आ प्रगतिशील डेग बढ़ा मैथिली साहित्यक विकासमे एकटा बेछप स्थान बनौलैन अछि।

हमर शुभकामना सतत रहत जे प्रीतिजी ऐ प्रकारक रचना करैत रहती आ श्रुति प्रकाशन प्रकाशित करैत रहत तँ निश्चित रूपेँ मिथिला, मैथिली आ मैथिलामे रहनिहार सभ पूर्णत: समृद्ध भऽ जेता। ❑

उलहन

उलहन जे देल जाइ छै, लेल नहि जाइ छइ। सह सम्पादक श्रुति प्रकाशनक उमेश मण्डलजी देलैन। प्राय: उलहन आमजनकेँ खरापे लगै छै मुदा हमरा नीक लागल। किएक तँ ई उलहन छी नवोदित कथाकार श्री कपिलेश्वर राउतजीक पहिल कथा संग्रह। जे एक सोरे बीहैन कथा आ लघु कथाक संग्रह छी।

कथाकारक कथा संग्रहक पहिल कथा “वंश”मे कथाकार जातिवादी विचारधाराकेँ तोड़ि मानवीय विचारधाराकेँ जमीनपर रखबामे सफल भेला। समाजकेँ जे अपन देखौटी प्रतिष्ठा अछि, जेकरा ओ छोड़ए नै चाहैए, भलेँ ओ भीतरे-भीतर कुही भऽ भऽ कनैत रहए, मुदा तोड़ल नै जा सकैए, नै तोड़ल जा सकैए ई जे तोड़एबला लोक अपन भावगत जीविकोपार्जनक साधन बनौने छैथ! खाएर जे से। ओकरा परसुरामक कनियाँ कौशल्या अपन विवेकसँ यदुवीर बाबूक आँखिक पर्दा खोलि अनाथालयसँ बच्चा आनि अपन वंशक परमपराकेँ काइम केलैन।

“उलहन” कथामे बदलैत समय आ जमानाक संग आजुक जे नबका पीढ़ी कमौआ सभ छैथ, धनक टेढ़, तेकरा सभकेँ कथाकार एकटा नव गणितीय सूत्रसँ तोड़ि तइ जमानाक पाइक महत बता देलखिन आ ज्ञानचन्द्रकेँ बजला सन पछताबा हुअ लगलैन। अपन कथाक माध्यमसँ कथाकार आजुक नबका पीढ़ीकेँ जनाए देलखिन जे ऐ तरहक उलहन केकरो कियो नै दइ। नै तँ देला सन पछताबा हेतइ।

तहिना “थरथरी” कथामे हिन्दीक महान कथाकार प्रेमचन्द लिखित “पूस की रात” कथाक झलक देखेबामे कथाकार पूर्णत: सफल भेला अछि। ऐ तरहेँ कथा सभ अपने-आपमे एकटा विशेष महत रखने अछि।

“भोग” कथामे घनश्याम बाबू आ सोनाइक बीचक बात अछि। जे एकटा कहबी जकाँ छै-

“जीतामे किदैन-भात आ मुइलामे दूध-भात।” केर ज्वलंत उदाहरण अछि।

कथाकारक कथा “कुमारि भोजन”मे कुमारि के? एकटा यक्ष प्रश्न रखबामे सफल भेला अछि। की सिरिफ जनमे ब्राह्मण कुलमे भेने बा कर्मसँ? तेकरा नीक जकाँ सोझरेला अछि। जे शास्त्र की? आ अहाँ के? आ अहाँ जीविकोपार्जनमे करि की रहल छी?? ठका के रहला अछि? आ ठकि के रहल अछि? समाज एक-दोसरासँ केते फराक भऽ गेल अछि? ऐ सभ तरहक विचारणीय विन्दुकेँ तोड़ि कथाकार कपिलेश्वर राउतजी एकटा नब परम्परा, जे सत्यपर आधारित आजुक मानवीय बेवहार अछि, तेकरा स्थापित करए चाहै छैथ। ई एकटा नीक सनेस समाजक बीच छोड़बामे राउतजी सफल भेला अछि।

ऐ प्रकारे एक-सँ-एक विचारमूलक कथाक रचना “उलहन” संग्रहमे आएल अछि। जे हमरा लोकैनक रूढ़वादी समाजक बीच व्याप्त विभिन्न कुरीति, कुचालि आ सड़ल-गलल विचारधाराकेँ परिलक्षित करै छैथ।

कीर्तन आ सम्मेलन, मुर्दा आदि एक-सँ-एक चिक्कन कथा सभ ऐ संग्रहमे संग्रहित अछि।

कथा “सतमाए”मे मझिली भावोक ठोका जवाब सुनि सुधीर विचलित भऽ अचताइत-पचताइत दोसर बिआहक मोन बनौलैन। भगवानक कृपासँ बेवहारिक लड़िकी पाबि सुधीर तँ प्रसन्न छला मुदा स्त्रीगणक पेटमे अन्न नै पचब आ ई बाजब-

"कहुना तँ सतमाइए छिऐ ने! आखिर माए तँ माए होइ छइ।" ओइमे जँ सत् उपसर्ग नै लगा-

"स्त्रीगणकेँ अपन मर्यादाक रक्षाक हेतु अपन लड़ाइ अपने लड़ए पड़तैन। मुदा बच्चाकेँ अपन पुरुषार्थ लेल स्वयं ठाढ़ हुअ पड़त।" कनी अनोन सन लगैए।

कथा "तकरीर"मे वर्तमान सरकारमे स्त्रीगणकेँ राजनीतिमे हिस्सेदारी आ अपन अधिकार आ कर्तव्य लेल लड़ाइ लड़ब, समाजक बीच जानल-मानल खालमे छिपल भेड़िया सभकेँ उघार करैत, ओकर छुदरपना सभकेँ देखार करैत, सुलेमान साहैब सन नामी-गिरामी ओकीलपर मुकदमा दायर कऽ दफा 376मे जहल पठा नारी समाजकेँ जगौलैन। खाली तकरीरेटा केलासँ पेट नै भड़ै छै, प्रतिष्ठा नै बनै छै, ई एकटा नीक सन्देश समाजक बीच आएल अछि।

कथा "पान"क जीवन्त उदाहरण कथाकार स्वयं बुझना जाइ छैथ। पानक महत आ पानक गुणपर प्रकाश दैत संगे मिथिलामे ओकर वैदिक महतपर सेहो विचार करै छैथ। पानक खेती जे काल्हि ऐतिहासिक तथ्य भऽ जाए, ऐ विन्दुकेँ कथाकार मिथिलाक धरोहरक रूपमे प्रस्तुत केलैन अछि। जँ इतिहास रहतै तँ मिथिलामे पानक महत सेहो। सुगिया द्वारा पानक गामक प्रस्तुति गामक महतकेँ बढ़बैत अछि। वास्तवमे गाम तँ गामे छी। कहबियो छै-

"जननी जन्मभूमिच: स्वर्गादपी गरियसी।" अर्थात् गाम तँ स्वर्गोसँ बढ़ि कऽ अछि। जेतए सबहक इतिहास माटिमे गाड़ल अछि। गामक हवा-पानि, समाजिक बेवहार, सम्बन्ध-बन्ध, चालि-ढालि आ समाजिकता इत्यादि शहरमे हेरलो पछाइत नै केतौ भेटत। शहरमे तँ खुशामदे बाबू जनबला बात छइ।

शेष कथा "मई दिवस"मे राजनीतिक सुगन्ध नीक नहाँति भेटैए।

समाजिक रूढ़िवादी विचारधाराकेँ तोड़ि एक नब विचारधाराक जनम मई दिवसमे भेल अछि। जे वर्तमान पीढ़ी लेल आबएबला समयमे स्वावलम्बक लेल नीक अधार सावित हएत।

"भूख" कथा कथीले, केकरा लेल, कथीक? अन्तोगत्वा परिणाम की? चाही की तँ खाली साढ़े तीन हाथ जमीन...! समाजे नै मानव जातिक आँखिक पर्दा खोलि देलैन।

कथा "बेथा" अद्भुत अछि। पिता महाकान्तकेँ बेटा महेन्द्र द्वारा दादाजीक परिचय देब हिन्दीमे नमस्ते करब आठे दिन पछाइत दिल्ली चलि जाएब, सुनि चौन्ह आबि गेलैन। केकरो हृदैकेँ झकझोरि देत। आखिर प्रश्न ई उठैए आन्हरक लाठी के? सोचैत गामक स्कूलपर बैसार कऽ वृद्धा आश्रम सह असपताल खोलि समाजक आँखि खोलि देलैन। हम समाजक आ समाज हमर, ऐ भावनाक गंगा बहए लगल। कथाकार राउजीक ई कथा विलक्षण अछि। शेष कथा "किसानक पूजी, छूआ-छूत आ कलयुगक निर्णय" विचारणीय कथा अछि। कोनो तरहेँ ऐ "उलहन"केँ उन्नैस नै कहल जा सकैए। हमर ई दाबा बूझू आकि विचार जे पाठक ऐ कथा संग्रहकेँ पढ़ि सोचता, विचारता, चिन्तन करता, हुनको ई उलहन या तँ लगतैन या फेर झकझोरि देतैन। ओना, मनुखो तँ मूख्यत: दू रूपक अछि पहिल शोषक दोसर शोषित। अर्थात् विचारमे भिन्नता सोभाविक रूपे...। मुदा मानवीय चेतनाक जँ छुतिओ रहत तखन सभटा सहजता पूर्वक यथार्थ बुझेतैन। जे विचारमूलक अछि।

वर्तमान पीढ़ी लेल "उलहन" जीबाक बाटकेँ स्वत: खोजबामे सहायक हएत। समाजक बीच एहने कथा राखवक चाही भलेँ ओकर नाओं सनेस नै उलहने किएक ने होइ। ❑

“81म सगर राति दीप जरए” देवघरमे

दिनांक 22/03/2014 तदनुसार दिन शनि, स्थान देवघर (बाबाधाम) झारखण्ड बिहारमे सगर राति दीप जरए केर 81म कथा गोष्ठीक आयोजन। स्व. मायानन्द मिश्र एवम् जीवकान्तक स्मृतिमे समरपित। स्थान बम्पास टॉनक बिजली कोठी-3। समय साँझ 6 बजेसँ भिनसर 6 बजे धरि। सफल सम्पन्न भेल। संयोजक छला श्री ओम प्रकाश झा। हिनकर गहिंकी नजैर गोष्ठीक मादे सुक्षत्म बात धरि राति भरि रहलैन। सफलताक श्रेय झाजीक विभागीय कर्मठ सहयोगी आ मैथिली प्रेमी आनो-आनो मैथिल जिनकर सहयोग बिसरल नै जा सकत। दर-दतमनिसँ लऽ तेल साबून, जलखै-जलपान आ भोजन-भात धरि सतत् रहलैन। जइमे किछु खास चेहरा जे बिसरल नै जा सकै छैथ ओ सभ छैथ अवकाश प्राप्त अभियंता श्री ओ.पी. मिश्रा, सुशील भारती, दिलीप दास इत्यादि हुनक विभागीय सहयोगीगण।

पूर्व जनतब आ मोबाइल मैसेजिंग केर अधारपर पूर्वहिंसँ नै मात्र मिथिलांचल अपितु भारत भरिसँ मैथिलीक प्रेमी कथाकार लोकैन अपन उपस्थिति दर्ज कऽ सगर राति दीप जरए केर ऐ अनुपम गोष्ठीमे गोष्ठीक रातिक रूपमे बन्हने रहला। राति छोट आ कथा आ कथाकार अधिक भऽ गेला। ईहो एक तरहक गोष्ठीक सफलताक परिचायक छल हमरा नजैरमे।

गोष्ठीक उद्घाटनकर्ताक रूपमे मुख्य अतिथि श्री ओ.पी.मिश्राजी

दीप प्रज्वलित कऽ केलैन। मिश्राजीक संग आयोजक ओमजी, संचालक गजेन्द्र ठाकुर, अध्यक्ष जगदीश प्रसाद मण्डलजी आ हम तथा हमरा संग उमेश मण्डलजी एवम् आनो-आन जेते उपस्थित कथाकार-साहित्यकार रहैथ सभ कियो देलैन।

पछाइत श्री एस.के. मिश्राजी मंगलाचरणक उच्चारण केलैन। मैथिलीक भिखारी ठाकुर रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदारजी नव सृजित स्वागत गीत “हम नै छी अहाँ योग यौ पाहुन... ।” गाबि समस्त मैथिल आ मिथिलाक मान बढ़ौलैन। बिजली कोठीक सभागार कथाकार लोकैनसँ पूर्णत: भरल काफी अइल-फइल जगह, सभ कथुक बेवस्थो उत्तम। सभागारक शोभामे मिडियाकर्मीक उपस्थितिसँ आरो चारि चान लागि गेल।

शुरू भेल पोथी लोकार्पण सत्र जइमे शिवकुमार झा टिल्लू रचित समालोचनाक पोथी अंशु’ लोकार्पणकर्ता श्री जगदीश प्रसाद मण्डल अध्यक्ष, राजदेव मण्डल आ बेचन ठाकुर छला। अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोष भाग-2, मैथिली-अंग्रेजी कम्प्यूटर शब्दोकाष आ बेचन ठाकुरक “ऊँच-नीच” नाटकक लोकार्पण सेहो भेल। श्री गजेन्द्र ठाकुरक संपादित दू गोट अतिमहत्वपूर्ण पोथी “जिनोम मैपिंग-भाग-2 आ जिनियोलोजिकल मैपिंग” 450 एडीसँ 2009 एडी धरिक मिथिलाक पंजी प्रवन्धक लोकार्पण आयोजक श्री ओम प्रकाश झा, डॉ. योगानन्द झा आ श्री राजीव रंजन मिश्राजीक हाथसँ भेल।

शुरू भेल कोष्ठीक परिपेक्ष्यमे दू शब्द। दू शब्दक कड़ीमे श्री मान् ओ.पी. मिश्रा, दिलीप दास, सुशील भारती, ओम प्रकाश झा इत्यादि लोक मैथिलीक सहज विकासक लेल अपन उनमुक्त विचार रखलैन। मैथिलीक विकास दिनानुदिन हएत आ मैथिली धनी हेती। कथा गोष्ठीमे कुल मिला कऽ सात गोट पाली बनल। कुल मिला कऽ 34 गोट छोट-पैघ लघुकथा वा बीहैन कथाक पाठ भेल। गोष्ठीक विशेषता ई रहल जे

प्रतियेक पालीमे कथा वाचनक बाद पहिले समीक्षा कएल गेल पछाइत समीक्षाक समीक्षा वरिष्ठ समीक्षक लोकैन द्वारा भेल। पहिल सत्रमे चारि गोट कथाकारक कथा जेना “असली हीरा” दुर्गानन्द मण्डल, “रिक्शाक भाड़ा आ वुधिए बताह” फागुलाल साहु, “बुढ़िया मैया” ओम प्रकाश झा आ उमेश मण्डलजीक “केते बेर” कथाक पाठ कएल गेल। ऐ पालीक समीक्षकक रूपमे डॉ. योगानन्द झा, श्री राजदेव मण्डल, श्री प्रमोद कुमार झा आ श्री अरविन्द ठाकुरजी रहैथ। समीक्षाक समीक्षकक रूपमे श्री नन्द विलास राय, चन्दन झा आ डॉ. धनाकार ठाकुर छला। हिनका लोकैनक उपस्थिति मंचपर कथा वाचनसँ पूर्वसँ छल, जइसँ ओ लोकैन पूर्णरूपेण वकोधियानम् भऽ कथा श्रवण करैथ आ सम्पूर्ण रूपें समीक्षा हुअए।

समीक्षाक समीक्षकक रूपमे अरविन्द्र ठाकुरजी एकटा महतपूर्ण कही आकि आर किछु, टिप्पणी देलैन जे सगर राति दीप जरए कथा गोष्ठीक एकटा निअम रहल जे समीक्षापर समीक्षा नै हेबक चाही। किएक तँ गोष्ठीमे विवाद उत्पन्न भऽ सकैए। दोसर गप ई जे जइ कथाकारक कथापर समीक्षा हुअए ओ स्वयं टिप्पणी नै करैथ। जैपर मंच संचालक महोदय अपन महतपूर्ण वक्तव्यसँ समीक्षक लोकैनकेँ सन्तुष्ट कएल। प्रतिसमीक्षाक क्रममे एकटा आर बात आएल जे कथाक गहराइकेँ आधुनिक पाठक स्वागत नै करैए जे कथाक दोष भेल। फलस्वरूप पाठकक अभाव अछि मैथिली साहित्यमे।

मंच संचालक महोदय असहमति ऐ प्रकारे देलैन जे ई तँ भाषाक विशेषता छिऐ जे कथानककेँ गहराइ प्रदान करत। पाठकक अभावक कारण आरो-आर सभ रहल अछि। आजुक गहींरगर कथा पाठककेँ खूब जोड़ि रहल अछि।

प्रतिसमीक्षक रूपमे डॉ. धनाकर ठाकुरक एहेन विचार आएल जेना मनो भरि दूधमे पाभरि फिटकिरी पड़ि गेल हो। जेना छोटी लाइनक गाड़ी एकाएक पाठि बदैल केना दोसर लाइनपर चलि गेल हो आ कोनो पैघ

दुर्घटना होइत-होइत बँचल हो। हुनक बात-

“अहाँ लोकैनक समीक्षा मुँह देख मुंगबा रहैए जे फल्लां एहेन कथाकार छैथ, ई कथा एहेन अछि तँए एकर समीक्षा एना-नै-एना करी।”

सम्पूर्ण कथा गोष्ठीक शोभा अपन-अपन समीक्षीय विचार दऽ बढ़बैत रहला।

दोसर सत्रमे श्री नन्द विलास रायजीक “भी.आई.पी. गेस्ट”, राजदेव मण्डलक “डरक डंका”, राम विलास साहुक “मजबूरी आ इमानदारीक पाठ”, ललन कुमार कामतक “अप्पन माए-बाप” कथाक पाठ भेल।

समीक्षक लोकैन अपन-अपन विचार रखलैन। पछाइत आयोजक महोदयक तरफसँ भोजन हेतु बीझो भेल। एकपतिआनीमे बैस करीब सबा साए गोटे एक संग बैस भोजन केलैन। भोजनक लेल मिथिलाक माटि-पानि परहक उपजल तीमन-तरकारीक बेवस्था छल। कथुक कमी नहि। एहेन बुझना जाइ छल जेना मरजादी भोज हो। भोजनक घन्टा भरि पछाइत ऐगला सत्रक शुभारम्भ भेल। जइमे निम्न कथाक पाठ भेल-

छिन्ना-झपटी- श्री शिव कुमार मिश्र (बेरमा)

बड़का मोछ- श्री कपिलेश्वर राउत (बेरमा)

उतेढ़क श्राद्ध- श्री शम्भू सौरभ (बैका)

जातिक भोज- श्री उमेश पासवान (औरहा)

गुरुदक्षिणा- डॉ. योगानन्द झा (कबिलपुर)

अपराध- श्री पंकज सत्यम् (मधुबनी लगक)

ककर चरवाही आ चुनावधर्मी लोक- डॉ. उमेश नारायण कर्ण

कबाउछ- डॉ. धनाकर ठाकुर

आन्हर- श्री अखिलेश कुमार मण्डल (बेरमा)

सरकारीए नौकरी किएक- बिपीन कुमार कर्ण (रेवाड़ी)

बनमानुष आ मनुष- डॉ. शिवकुमार प्रसाद (सिमरा)

वृद्धापेंशन आ मजबुरी- श्री शारदानन्द सिंह

पानि- श्री बेचन ठाकुर

सत्ता-चरित- श्री अरविन्द ठाकुर (सुपौल)

बापक प्राण- श्री भाष्करानन्द झा भाष्कर (कोलकाता)

संबोधन- श्री चन्दन कुमार झा (कोलकाता)

ठीका- श्री आमोद कुमार झा

चौठिया- श्री अच्छेलाल शास्त्री (सोनवर्षा)

तरवन, जरवन- श्री गजेन्द्र ठाकुर (दिल्ली)

चैन-बेचैन- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (बेरमा)

कथाक पाठ होइत रहल आ संक्षिप्त टिप्पणी चलैत रहल।

कथा गोष्ठीक विशेषता ई रहल जे सम्पूर्ण कार्यक्रमक विश्व भरिमे लाइव प्रसारण कएल गेल। जे सगर राति दीप जरए केर पन्नामे ऐतिहासिक कार्य भेल। ऐगला गोष्ठी हेतु दू गोट प्रस्ताव आएल। पहिल श्री गजेन्द्र ठाकुर मेंहथ आ पंकज सत्यमक मुजफ्फरपुर लेल। कथा गोष्ठी जाएत केतए ऐपर अरविन्द्र ठाकुरक टिप्पणी भेल- 'अध्यक्ष महोदय

जेतुक्का लेल विचार दैथ।' मुदा अध्यक्ष महोदय बात कटैत कहलैन- 'अध्यक्षे टाक विचार नै अपितु समस्त कथाकार विचारसँ कथा गोष्ठी केतए जा से निर्णय हुअए।' अन्तमे सर्वसम्मतिसँ ऐगला कथा गोष्ठी मेंहथमे होबाक निर्णय भेल। जे श्री गजेन्द्र ठाकुर ओतए 31 मई 2014कैं होएत। जे बाल साहित्यपर केन्द्रित रहत। ऐ लेल श्री ठाकुरजी समस्त कथाकार लोकैनकैं सबजाना हकार देब सेहो नै बिसरला। कहिये देलखिन- 'सभ कियो सादर आमंत्रित छी मेंहथ कथा गोष्ठीमे।' अहूँ सभ धियान राखब। ई भेल हमर हकार। ❑

निश्तुकी

विदेह/विदेह-सदेह पत्रिकाक सह सम्पादक उमेश मण्डलजीक कृति- निश्तुकी। कविता, लघु कविता, हाइकू, शैर्न्यू, टनका-वाका तथा क्षणिका आ गजलक, एकटा बेजोर संग्रह पाठकक बीच आबि चुकल अछि।

पढ़ला पछाइत एहेन सन बुझना गेल जेना एकटा बड़का फुलवारीमे किसिम-किसिमक, अलग-अगल नाना प्रकारक फूल लागल होइ, फुलवारी फूलक सुगन्धसँ मह-मह करैत होइ, राही-बटोही आकि कोनो बेकती जे ओइ बाट धेने चलनिहार होथि, कियो ओइ सुगन्धसँ बँचि नै सकै छैथ। फुलवारीक किसिम-किसिमक फूल चूनि-चूनि उमेशजी ओकर हाड़ बना श्रुति प्रकाशनक माध्यमसँ हमरा पाठक लोकैनक गरदनिमे पहिरा देलैन। जइसँ हमरा संग हमर पाठको समाज ओइ सुगन्धसँ हटि कऽ नै रहि पेता।

कविता रूपी कुसुमक जीवंत रूप लऽ जेना-जेना हम आगू बढ़ै छी, जेना-जेना हम पढ़ै छी, बाट देखौने जा रहल अछि। कनीकालक लेल हम अपनाकेँ बिसैर जाइ छी, ओइ फुलवारीमे हरा जाइ छी, जेकर नाओं अछि 'निश्तुकी'। 'निश्तुकी'मे सभटा 'निश्तुकी' अछि। फन्ना केतौ ने अछि। कवितेमे प्रश्न अछि आ कवितेमे उतारा सेहो। कवितेमे बेथा आ निदान सेहो।

"कंजूस के आ उदार के?

कऽ देने छैथ उघार-
आश्चर्य किछु नहि?
थिक भाषाक प्रभाव?
धर्मात्मा के?
कथीक शुभारम्भ?
मुहथरि केकर?
के गामक इयार?
की छठि, भोगी, श्रोता, कल्याणी?
देश, नोर, खुशी, बाट-बटोही सभ प्राणी?
हे यौ अहाँ?
अपन गाम, किछु ने फुराइए?
के मैथिल?
की बाघा?"
ई सभटा प्रश्न कवितासँ सोझराइए।
"खास, डेग, बुझैक बाट, कनीटा फूसि"
पोखैर उराह, लतरैत लत्ती लगैए उन्नैस
बौआएल बाटोही, फकुआक रोटी।"
..अद्भुत रचना।
"पंच परमेसर, गाए
तुलसी, घर-घर बसना
हँसैत लहास
ज्ञानक प्रकाश
दैत सकाश

भदवारिक झकास

तत्व ज्ञान

विचारक फाँट

बुढ़ाड़ीमे

धोधरि, मंगल, टनका-वाका

साजल जेना सरवारी...।

पोथी पढ़ि

गीत गढ़ि

मीत कहि

भऽ गेलौं धनिक

धन्य मिथिला, धन्य मैथिल

धन्य अहाँ, धन्य हम

जँ भेटए साहित्य नीक

जँ भेटए साहित्य नीक।

अन्तत: 'निश्तुकी' लेल आर किछु ने। धन्यवाद आ साधुवाद श्रुति प्रकाशन आ प्रकाशककेँ जे हमरा लोकैनक बीच ई अनुपम रचना परसलैन। संगे, उमेशजीक परिचय कविक रूपमे करौलैन। ❑

स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर स्वतंत्र भरास

आइ भारतीय स्वतंत्राक 65म वर्षगाँठ मना रहल छैथ। अनेरे प्रसन्न! सरकारी किंवा गैर सरकारी कार्यालय आजुक दिन स्वतंत्रता दिवसक रूपमे मना रहल अछि। विद्यालय सभमे सरकारी चिट्ठी पठा देल गेल जे फी विद्यालयक एक गोट मास्टर साहैब अमुख महादलित टोलमे झंडा फहराबैथ, अन्यथा दण्डक भागी हेता। कहक लेल सभ किछु अनसोंहाते बुझना जाइत अछि। की खादीक नमहर कुर्ता, ठेहुनसँ निच्चाँ धरि, माथपर गाँधी टोपी, डॉरमे खदीक धोती पहिर राष्ट्रधव्जक समक्ष सभटा झुट्ठे भाषण देल जा रहल अछि। सुनैत-सुनैत देहमे आगि लागि जाइत अछि। मोन केना ने केनादन करए लगैत अछि। झुट्ठा लोक सबहक झुट्ठ भाषण सुनैत-सुनैत पचास बर्खक भऽ गेलौं मुदा झुट्ठे बाजि अपने सन आनो जनकेँ परतारब कते अधला बात भेल! जँ हार-मौसक देह अछि तँ कनियो लाज हेबाक चाही, की बाजि रहल छी, की कऽ रहल छी? की सभ दिन झुट्ठे बाजि भारतक स्वतंत्रताकेँ अक्षुन्न राखि सकै छी? ई हमरा लोकैनक बीच एकटा यक्ष प्रश्नक सदृश्य राखल अछि।

चारू कात देश भक्ति गीत बाजि रहल अछि। गीत सुनैत-सुनैत खून खौलए लगैत अछि, ऐ सफेदपोस झुट्ठा सभकेँ देख कऽ जे समस्त भारतीय भाय-बहिन, माइ लोकैनकेँ सालो-सालसँ ठकैत आएल अछि। राष्ट्र्ध्वजक सामने बाजब किछु आ करब किछु, हिनका सभक जन्म सिद्ध अधिकार भऽ गेल अछि। धिक्कार अछि एहेन भारतीय ओइ सन्तान सभकेँ जे भारत माताक संग झुठक बेपार करैत अछि।

सवाल ई उठैत अछि, देशमे जखन चारूकात भ्रष्टाचार, व्यभिचार, हत्या, बलात्कार, अपहरणक बेपार भऽ रहल अछि, तखन भारतीय कोन रूपेँ स्वतंत्र छैथ? देशक शीर्षस्थ नेता लोकैनक करतुत प्रात होइते अखबारमे पढ़बामे अबैत अछि। भारतीय संविधानक ऊँचसँ ऊँच पदपर आसीन मत्रीगण कियो बेदाग नइ छैथ। सबहक चद्दैरमे दाग लागल छैन। एकटा जहलसँ बहराइ छैथ, तँ दोसर जेबाक लेल ततबाए आतुर! कथी खातीर? देशक रक्षा खातीर? कखनो नहि। अपितु ई आरो स्पष्ट भऽ जाइत अछि, जे अहाँ कतेक पघि भीतरघाती छी। आइ खगता अछि ऐ बातक जे अपना-अपना भीतर झाँकि कऽ देखू जे अहाँ गाँधी, नेहरू, लोहिया, जे.पी.क भारतक की दुदर्शा केलिऐ? की अही कुकर्मक निर्वहनक लेल अहाँक भारतीय राजनीतिक क्षितिजपर बैसाओल गेल?

आइ जँ कियो सही आबाज उठबै छैथ तँ ओकर ओधि उखारि अहाँ अपनाकेँ सुरक्षित राखए चाही छी। मुदा आब ओ दिन दुर नै जे अहाँ कखनो नाङट भऽ सकै छी आ अरबो-अरब भारतीय अहाँकेँ नाङटे-उघारे टी.भी.क पर्दापर देखत। तँए समय पूर्व चेतू हे मानव चेतू। अन्यथा ने सिर्फ भारतीय बल्कि अरबो-अरब जनसंख्या अहाँकेँ धुर छी! धुर छी! करत। कतेक दुखक बात अछि जे अहाँ सन सपूत भारत माताकेँ खोइछ खाली कऽ सभटा धन नुकाए कऽ आनठाम रखने छी। मुदा से केकरा ले? अपनेकेँ बुझक चाही जे ओ धन किसान-मदूरक खून-पसेनाक कमाइ छी। ओ धन अहाँकेँ पचि नै सकैए। ओहि धनसँ ने तँ अहाँ अपन श्राध कऽ सकब आ ने बेटा-बेटीक वियाह। तखन ओ धन भोगत के?

ऐठाम आप्त चिन्तनक खगता अछि। सोचू, कने विचारू, कोन तरहक कुकर्म आ केकरा लेल करै छी। जागू, जागू हे भारतक सपूत अखनो जागू। भारतक अखण्डता आ एकता लेल जागू। भारत सबहक माता थिकीह। माताकेँ सद्विचारसँ सजाउ। आउ, अपन तियाग, निष्ठा, लोभ, मोह, अहंकारकेँ तियागि भारतकेँ माता बुझि अपन खून-पसीना

स्वच्छ वुद्धि विवेकसँ माताकेँ बचाउ। बचाउ अपन मानवताकेँ, नैतिकताकेँ आदि सनातन धर्मकेँ आ राजनीतिकेँ। देशमे जरूर प्रजातंत्रक शासन अछि। किन्तु सबहक आत्मामे रावणक शासन। तँए, आइ पन्द्रह अगस्तक अवसरपर आबि ओइ रावणकेँ खतम कऽ देबाक सप्पत खाउ। सप्पत खाउ जे अपन भारतकेँ रामराज्य बना अपने राम कहाएब।

धन्यवाद...। ❑

जिनगीक जीत

आजुक तारीखमे (मैथिली साहित्य प्रेमी वा पाठक) साइते एहेन कियो बेकती हेता जे जगदीश प्रसाद मण्डलजी केँ नै जनैत हेताह। आइ मण्डलजी ओइ पौदानपर पहुँच गेला जेतए अनेको तरेगनक बीच चन्द्रमा, जिनका इजोतसँ मैथिली साहित्य प्रकाशमय भेल। आइ अपन अनेको रचना लऽ मण्डलजी मैथिली साहित्य बीच उपस्थित छैथ। कथाक विभिन्न रूप आकि लघुक संग दीर्घ किएक ने हो सभमे अनुपम भाव-भंगिमाक संग अनुमप शिल्प–शैली तथा कल्याणकारी उदेसक समावेश भेल अछि। कविता हो आकि गीत संग्रह तहिना एकांकी हो आकि नाटक इत्यादि अनेको प्रकारक योगदानक लेल मण्डलजी सबहक हृदैमे चिरस्मरणीय छैथ। कुल मिला कऽ हिनका बहुआयामी प्रतिभा-सम्पन्न कहबामे केतौ कनीक्को अतिस्योक्ति अलंकारक परिचय नै भेटत। मण्डलजीक समस्त रचना मिथिला-मैथिलक जीवनक जीवन्त उदाहरण थिक। हिनक प्रत्येक रचनासँ अपन माटि-पानिक सुगन्ध सतत भेटैत अछि। मिथिला समाजक यथार्थ चित्रण करबामे अद्वितीय बेकती छैथ। अनेको रचनाक मध्य जिनगीक जीत उपन्यास; मनुक्खक जिनगीक जीवन्त उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत अछि।

उपन्यासक नायक बचेलाल सदिखन द्वन्दात्मक जीवन जीबए लेल बेवस। नीक पढ़ल-लिखल बेकती स्कूलक मास्टरी, रूमा सन आधुनिक कनियाँ आ सुमित्रा सन सुलक्ष्मी माइयक सिनेह पाबिओ कऽ सदिखन समाजसँ अलग-थलगक जीवन जीब रहल अछि। जीब सेहो नै कहू,

कोनो तरहेँ समय खेपि रहल अछि। ओ ने तँ समाजक कोनो बेकतीक दरबज्जापर जाइ छैथ आ नहियेँ हुनका ओइठाम कियो अबिते छैन। जीवन यंत्रवत् नि:रस।

तहिना अछेलाल सेहो मजबूर, वेवस, लाचार लोक। ओ ने केकरोसँ किछु मंगैए आ ने कियो ओकरा किछु दइ छइ। ने तँ ओ केकरो ऐठाम जाइए आ ने ओकरा ऐठाम कियो अबै छइ। बुझू जे गामक लेल ओझहा बताह आ ओझहा लेल गाम बताह, सन बुझना जाइए। ओहेन निरस समाजक एकातमे 'बचेलाल' आ दोसर कातमे 'अछेलाल' छैथ। संयोग एहेन भेल जे अछेलालक कनियाँ पानि पबैवाली अछि। पूर मास घरमे कियो दोसर-तेसर नै रहैक कारणे तरबदूत बड़। तही क्रममे अछेलाल उपन्यासक महा नायिका बचेलालक माए-सुमित्रा लग आएल। जे ओहेन गड़ू समयमे भगवान बनि ठाढ़ भेलखिन। भगवान ऐ रूपमे जे सुमित्रा अछेलालकेँ पुछलखिन-

"बच्चा, परसौतीक खाइले चाउर अछि ने?"

कनी गुम्म होइत अछेलाल बाजल-

"एक पसेरी चाउर अछि भौजी।"

सुमित्रा हँसि उठली। मुदा हँसीकेँ दाबि एक मासक बुतातक जोगाड़ कऽ देलखिन। ऐ प्रकारे दुनू परिवारक आरो मधुरतम सम्बन्ध भऽ गेल।

दोसर दिस सभ किछुसँ सम्पन्न भेनौं, बचेलालकेँ जखन विवेक जगलैन तँ मनमे हरबिर्ड़ो उठि गेलैन, मन थीरे ने होन्हि। मन अघोर भेने, एहेन-एहेन प्रश्न मनमे उठल जे जवाब विहीनक स्थितिमे छल। मुदा समयपर मिथिलानी सुमीताक बतौल उपदेशात्मक विचारसँ प्रभावित भऽ बचेलाल आ अछेलालक जिनगीकेँ जनलक। जिनगीकेँ जानि-परेख ओकर मूल्य जानि समाजमे जीबैक लूरिपर गौर केलैन। प्रभावित भेला।

बेटाक नोकरी होइते अपने बचेलाल स्कूलमे तियाग-पत्र दऽ समाजक काजमे लागि गेला। समाजिक प्रतिष्ठा हेतु दरी, जाजीम, लाइट, भानस-भात बनेबा लेल विभिन्न प्रकारक समान सभ लऽ घर एला बाद प्रात भने समाजक लोकक सिनेह पौलैन। ओइ सुखसँ जे आन्नदित भेला, ओ आनन्द आ सुख जीवनमे कहाँ कहियो भेटल रहैन। आखिर मनुख तँ समाजिक प्राणी छी ने, समाजिक अधिकार सेहो बेकती विशेषपर होइ छइ। जौं से नै तँ समाज की? अपना लेल तँ कुत्तो-बिलाइ जीबै लइए। मुदा ओ कोनो जीवन थोड़े भेल। जीवन तँ भेल जे अपन सुखसँ दोसरोकेँ सुखी बना सामुहिक खुशीसँ सुखी बनि सामुहिक आनन्द ली। जौं समाज सुखी तँ अहूँ सुखी। मात्र बेकती-विशेषकेँ सुखी भेने समाज कहियो ने सुखी भऽ सकैए। समाजोक कर्णधार सभ नै भऽ सकैए। आ जे होइ छैथ ओ समाजमे आदर-सम्मान पबै छैथ।

जिनगी की छी आकि जिनगी होइ की छइ? ई रहस्य तँ सभकेँ बुझलो ने छइ। जखन बुझले ने रहतै तखन ओकर समाधान ओ खोजि की सकत? जे बेकती भरि पेट भात, भरि देह वस्त्रेकेँ सभ किछु बुझै छैथ हुनका लेल 'जिनगी' की। संसारमे सभसँ श्रेष्ठ जीव मनुखकेँ मानल जाइत रहल अछि। मुदा मनुख अपन विवेकक उपयोग जेते बजैमे करैए, तेकर एकअन्नीओ ओ अपना जिनगीले नै करैए। मुदा मनुखक भीतर ओ शक्ति तँ छै जे ओ सभ किछु कऽ सकैए। जौं मनुख अपन ओइ शक्तिकेँ चीन्हए तखन। आ वएह शक्तिक जखन बचेलालकेँ वोध भेलैन तँ जिनगी जीबएबला बाट ओ पकड़लैन। जे बात परिवारे नै अपितु समाजसँ सेहो जुड़ल अछि। आब, बचेलाल अपन बेकतीगत जीवनकेँ छोड़ि समाजिक जीवनक बाट धेलैन। समाजेक उत्थानमे अपनो उत्थान, समाजेक विकासमे अपनो विकास आ समाजेक खुशीमे अपनो खुशी देखए लगला, बुझए लगला। बचेलाल, अछेलाल आ जुगायक संग बजार जा अपना लेल साइकिल आ खेती-पथारी लेल कोदारि-खुरपी-

हँसुआ-कुरहैर-टेंगारी-पगहरिया संगे समाजोक लेल दूटा लाइट, दूटा पीतरिया टोकना, बीस हाथ नमती दरी आ जाजीम कीनि घर एला। प्रात होइते टोलक लोक सभ बचेलालक ऐठाम चीज-बौस सभ देखैले जुटए लगला। जे बचेलालक जिनगीक प्रति वास्तविकताकेँ अवगत करौलक। जइमे उपन्यासक महानायिका सुमीत्राक भूमिका सतत् सराहनीय रहल। जे स्पष्ट रूपे एक मिथिलानीक महतकेँ देखेबामे उपन्यासकार केतौ पाछू नै पड़ला, उन्नैस नै भेला। उन्नैस हेबो केना करता। हिनकर जे कोनो रचना पढ़ब, से चाहे जइ विधाक हो, ई चीज जे कोनो काजकेँ मनोयोग पूर्वक मनुखताकेँ धियानमे रखि करक चाही से ओ जनै छैथ। तँ से भला उन्नैस रहता केना।

वस्तुत: ई दुनियाँ कर्मभूमि छिऐ आ मनुख छी कर्मकार। करम करावनहार तँ परमपिता परमात्मा छैथ मुदा अधिकांश लोककेँ अपना कर्मपर कम आ भाग्यपर बेसी विश्वास छैन। ओना, संयोग एक चीज छी मुदा एकर वैज्ञानिकताक सम्बन्धमे विचारला पछाइत स्वत: सभ किछु आगू आबि जाएत। मुदा आगू औत जिनका वएह तँ अपन वेवसाय ठाढ़ केने छैथ। तखन आगू औत कथी..? मुदा भाग्यक निर्माण तँ सेहो कर्मेपर आधारित अछि। ऐ बातकेँ जे मनुख नै बुझि अपना कर्मपर विश्वास नै कऽ अनके श्रमकेँ लूटि, अनके कमाइपर जिनगी ठाढ़ केने छैथ, भला हुनका दिमागमे संयोग केना नै जोर मारत। ई कुत्सित संस्कार जे दानवक छल ओ मानवमे समा गेल। तँए, ओ आर सुखी केना हएत। ओ तँ दुखक संसारमे डूमि गेल अछि। आ से डुमलै नै अछि। जौं कियो पानिमे डूमि जाइए आ कियो डुमैत देखै छै तँ ओकरा ऊपरो करै छै, मुदा जौं कियो चरित्रहीन भऽ अधरमे डूमए लगैए तँ से ओकरा जँ कियो ऊपर करए चाहत तँ भला ओ स्वीकारो तँ नहियेँ करत। खाएर जे से। ओकर आत्मा सदिखन दुखिते रहै छइ। ओकरा कखनो सुखक अनुभवे ने होइ छइ। सुखक अनुभव हेबो केना करत। एकटा हैह जे मनुखमे प्रवेश भऽ

गेल छै से तँ मनुखकेँ मनुख नै भूत बना देने छै, राक्षस बना देने छइ। मुदा राक्षस आकि भूत देहसँ तँ बनल नै छै जे सभ सभकेँ चिन्हौ जाएत ओ बनल छै दिमागसँ, क्रियासँ। लोक तँ अपन जिनगीकेँ उघार जीब रहल अछि। ओ अपन जीवनमे संघर्ष कहाँ करए चाहैए। भलेँ आइ-काल्हि गाड़ी-सवारीमे लिखल रहैए, 'जरू नै संघर्ष करू।' औझका लोककेँ अनके कमाइपर आनन्द भेटै छइ। ई ओकर फैशन जकाँ बनि गेल अछि। ई जे फैशन अछि तेकर समीक्षा नीक-नीक बैसकमे हुअए लगल अछि। एक्केठाम जुआ झाँकि दइए। मुदा जौं ओकरा चुनौती बुझि चलए जे चलक सेहो चाही, समाजमे जौं देवन सन दस-बीसटा पात्र भऽ जाए तँ समाजिक जिनगी केकरा कहबै, केना जिनगीकेँ जिअल जाए, आरो बढ़ियाँ-सँ-बढ़ियाँ केना बनाएल जाए, तेकर तत्व ज्ञान ओकरा भऽ जेतइ। जिनगी सरस मधुरमय भऽ जाएत। जेकरामे आत्म विश्वास जागि जेतै ओकर जिनगीक जीत निश्तुकी भऽ जेतइ।

मुदा आइ तँ मनुखक विवेके समाप्त भऽ गेल बुझना जाइए। जिनगीक सभटा रस्ता उनैट गेल बुझना जाइ छइ। संस्कार उनटल बुझना जाइ छइ। साहित्य, धर्म, दर्शन, मन, बुधि सभटा उनटले बुझू। जौं से नै तँ फेर एते मार-काट किए? प्रेम किए नहि? माए-बापक सेवा किए नहि? समाजिक आरो-आरो बहुत रास बेवहार जे वैदिक छल ओ चलि केतए जा रहल अछि? हमरा सभ सहज रूपे स्वीकार करक चाही। ठीके सभ चीज उनैट सन गेल अछि। ऐ सभ पहलूपर उपन्यास लऽ जाइत अछि।

आजुक मनुख तँ शुन्यपर ठाढ़ अछि। खगता छै ओतएसँ आगू बढ़ैक, खगता छै अछेलाल आ बचेलाल सनक लोकक समाजमे। जइसँ ने मात्र अछेलाल आ बचेलालक बल्कि जुगाय, माखन, ढोढ़ाइ संग-संग केतेको लोककेँ जिनगी जीबैले बाट भेटत।

वर्तमानमे जे मनुख अपना जीवनसँ, उदेससँ आ पथ इत्यादिसँ

भटैक सुमार्ग छोड़ि कुमार्ग पकैड़ लेलक, जेतए ओकरा अपनो जिनगी बोझ बुझना जाइ छै, पहाड़ बुझना जाइ छइ। ओतए खगता छै सुमित्रा सन मिथिलानीक, देवन सन मनुखक। जे जिनगीकेँ लगसँ परेखि मनुखकेँ सतत् नब बाट देखौलक। उपन्यासकार 'जगदीशजी' ऐ उपन्यासक नाओं 'जिनगीक जीत' दऽ अमर करि देलैन। एतबे नहि, जिनगीक सुच्चा परिचय अपना पात्रक माध्यमे देखौलैन जे 'सुमार्ग' 'कुमार्ग'क भेद करैत पाठककेँ प्रेरणा देलैन। कतेको मनुख अपन जिनगीसँ भटैक आत्महत्याक रस्ता ताकि लैत अछि, हुनका लेल ई उपन्यास कोरामीनक काज करैत अछि। जे टुटैत साँसकेँ जोड़ि-जोड़ि जोड़ैत समान्य बना दइए। वस्तुत: मण्डलजी शायद नै निश्तुकी अपने जिनगीक मात्र नै बल्कि मानव मात्रक जिनगीकेँ लगसँ देख, हारल मनुखक अंतिम दुर्दशा देख, अपन लेखनी उठा डुमैत मनुखकेँ तिनकाक सहारा देलैन अछि।

ओना, तँ हिनक सभ उपन्यास प्रेरणा मात्रक श्रोत नहि, आजुक मनुखक औझका मार्ग प्रशस्त करैत रहल आ आगूओ करैत रहत। यथा 'मौलाइल गाछक फूल', 'उत्थान-पतन', 'जीवन-मरण', 'जीवन-संघर्ष', 'बड़की बहिन', 'नै धाड़ैए', 'सधवा-विधवा', 'भादवक आठ अन्हार' इत्यादि। जौं पाठक ऐ उपन्यास सभकेँ पढ़ि मनोरंजनेटा नै अपितु ज्ञान-गुणकेँ धारण करैथ तँ ओ 'जिनगी'केँ बुझि जाएत। जिनगी की छी, केना एकरा जीतल जा सकैए से सहजताक संग बुझि जाएत। पथभ्रष्ट मानवकेँ यथा साध्य मानवक श्रेणीमे लाबि आत्महत्या सन अपराधकेँ रोकबामे शत-प्रतिशत चौबीस कैरेट सोन सन खड़ा उतरत। आइ जिनगी जे बोझ स्वरूप भऽ गेल अछि, जेकरा लोक उघि रहल अछि। जिनगी जे जिनगीसँ हतास् भऽ रहल अछि ओकरा ओ बुझि अपन जिनगीकेँ आदर्श बना सकैए। जे अनको लेल उदाहरण बनि सकैए। द्रष्टव्य अछि, बचेलाल माएकेँ कहलक-

"माए, चारू भर तँ अभावे-अभाव देखै छी। अभावकेँ बिनु मेटौने लोक केना आगू मुहेँ ससरत? बेकतीसँ लऽ कऽ परिवार आ परिवारसँ समाज धरि सभ अँटैक गेल अछि। केना ससरत? जहिना जिनगी रूपी जमीनमे, नीच जमीनमे बहैत पानि ऊँच जमीनमे नै चढ़ि पबैत, तोहूमे जौं माटिक आड़ि बनल रहए, तखन तँ आरो मोसकिल होइत तहिना तँ जिनगियोमे लोककेँ होइए। जिनगी तँ हवाक गतिसँ नै चलि सकैए जे ऊपर-निच्चाँक भेद नै बुझि, चलैत रहत।"

मुस्कीआइत सुमित्रा बचेलालकेँ कहए लगलखिन-

"बड़ सुन्नर बात बच्चा कहलह। निच्चाँक पानि जखन जमा भऽ मोटाइए तखन ऊपर चढ़ैक आशा होइ छइ। बाधा रूपी आड़ि तोड़ैले साधनक जरूरति होइ छइ। अखन धरि समाजिक रीति-रिवाज, चालि-ढालि एहेन बना देल गेल अछि जे एकटा डेग उठाउ तँ दोसर लसकत आ दोसर उठाउ तँ तेसर लसकत। मुदा धैर्य आ साहसक आवश्यकता सभकेँ अछि। एक स्थानपर ठाढ़ भऽ वा बैस कऽ देखलासँ दूर धरि देख पड़ैत, मुदा बातकेँ गौरसँ बुझए पड़त जे जहिना आँखिसँ निकलैत ज्योति पहिने लगसँ देखैत दूर तक देखैए। तहिना सभसँ पहिने मनुखकेँ अपने देखए पड़तै। जौं अपनाकेँ देख लेत तखन दुनियाँ देखैक रस्ता भेटतै। जखने दुनियाँक रस्तापर चलब शुरू करत तखने थाल-खिचार छोड़ि सक्कत माटिपर पएर पड़तै। अखन तोरा सोझहामे तीन तरहक काज उपस्थित भेल छह। पहिने अपना लऽ साइकिल कीनि लैह। जइसँ शरीरोक रक्षा हेतह आ समयोक बचत। दोसर खेतीक सभ समचा कीनि लैह।"

माएक बात सुनि बचेलाल अछेलालकेँ कहलक-

"काका, काल्हि शनि छी। जँए एते दिन खगल तँए एक दिन आरो खगह। हमहूँ जँए एते दिन पएरे स्कूल गेलौं तँए एक दिन आरो जाएब। परसू रवि छी। छुट्टियो रहत। दुनू गोटे सबेरे जलखै कऽ बाजार चलब। साइकिलो कीनि लेब आ खेतीओक सभ ओजार। जुगायओकेँ बेटीक

बिआहमे मदैत कऽ देबइ। जे रूपैआ बैंकमे अछि ओ सभ उठा परिवारसँ समाज धरिमे उपयोग कऽ लेब। एक परिवारकेँ आगू बढ़ने तँ समाज नै अगुआएत। समाजकेँ अगुआइले सभ परिवारकेँ अगुआए पड़त। जहिना एकटा इंजन बड़का-बड़का कोठरीकेँ जोड़ि अपना गतिमे चलबैए तहिना जौं समाजोकेँ रस्तापर आनि घिचल जाए तँ ओहो ओइ गतिसँ जरूर चलत।”

ऐगला पेजक किछु आर प्रसंग जे विचारणीय अछि, देखल जाए हुनके शब्दमे-

मुदा सबहक पाछू संकल्प छइ। जे कियो गुलाबक फूल तोड़ैक संकल्प कऽ लेत, ओ काँट गड़ैक चिन्ता नै करत। जे आगिक गुण बुझि आगिमे जाएत ओ झड़कैक परबाहि नै करत। तहिना हमरो दुनियाँ देखैक संकल्प मनमे अछि तँए जाबे जीब ताबे चलिते रहब, भलेँ रस्ता केतबो कठिन किएक ने हुअए...।

ऐ तरहक संकल्प लऽ जौं आगाँ बढ़ी तँ जिनगीक जीत निश्तुकी मुदा ऐ हेतु दृढ़ संकल्प आ ज्ञान रूपी चश्माक खगता होएत। जइसँ जिनगीक ऊँच-नीच, उभर-खाभर, छोट-पैघ विचारसँ बहार भऽ जिनगीक जीतक लक्ष्य लऽ, सुमित्रा सन मिथिलानीक अनुपम विचार लऽ, बचेलाल आ अछेलाल सन संकल्पित बेकतीकेँ आदर्श मानि देवन बनए पड़त। ❑

खोंइछक लेल साड़ी

कथा पढ़ल, चिन्तन कएल, बुझना गेल कथा यथार्थ परख अछि जेना कथाकार अपनहि एहि स्थितिसँ गुजरल होथि। यदि अनुभव हमर सत्य तँ सार्थकता शत्-प्रतिशत।

एक कात कथाकार विद्यापतिक भूमिकामे छैथ मनमे सिनेह छैन जे माए कने ओ भूमिका देख लेती तँ हमरा नीक लागत। एम्हर माए ओलतीमे गुम-सुम बैसल छलीह कारण महाअष्टमीक राति एक टूक अखण्ड साड़ी नहि रहलाक कारणे ओ भगवतीक खोंइछ केना भरती? ई जानि बालक मातृत्व प्रेमवश बाबूजीक साखपर कपड़ाबला महाजनक दोकानसँ एकटूक साड़ीक पन्नी माएक हाथमे थमा दैत छथिन। माएक टुटैत विश्वास मायक रूपमे नहि अपितु बेगुसरायक बेटी रूपमे स्पष्ट होइत अछि। हाथक चुड़ी टुटब, काँचक किछु कण माएक हाथमे गड़ब आ टप-टप शोनितक आपादान- कविजीक साखपर दाग सदृश्य बुझना गेल। मुदा सत्य जानि अपन अपराध बोधक अनुभव कऽ माए बैस बालककेँ कोरामे लऽ कऽ सिनेह सागर अविरल धारा प्रवाहित केलैन। सारत्व स्वरूप स्वामीक अर्थात कथाकारक बाबूजीक आनल लाल रंगक सिफनक सोहनगर साड़ी नहि पहिर बालकक आनल सुती साड़ीसँ भगवतीक खोंछि भरब, प्रभु प्रेमक एकटा अलग पराकाष्ठाक परिचयकेँ पाठक बन्धु नहि बिसैर सकताह। कथाक सार्थकतापर इजोत छोड़ैत अछि। जे निश्तुकी एकटा माजल कथाकारक कथा बुझना जाइछ। मुदा जँ माँ... क जगह कोनो आन उपयुक्त, समुचित शब्दसँ सजैबतैथ तँ कथामे मैथिली समृद्धता आरो स्पष्ट होइत। शेष सभ चिकनहि चिक्कन। धन्यवाद- । ❑

पुनर्नवा

सगर राति दीप जरयक सफल संचालनक प्रसादे अनेको विद्वतजन समान्यजनक रूपे परिचित छला। ओइमेसँ अनेको सफल साहित्यकारक रूपमे जानल जाइ छैथ आ भविष्योमे जानल जेता। सोभाविक अछि ऐ कार्यक्रमकेँ माने ‘सगर राति दीप जरय’ कथा गोष्ठीकेँ कार्यशालाक रूपमे सेहो जानल जाइए, मानल जाइए। जइमे उपस्थित साहित्यकार लोकैन पहिने तँ दू-चारि गोष्ठीमे जा कथा श्रवण करै छैथ पछाइत अपन विद्वताक बलपर माता सरस्वतीक कृपासँ कथा लेखनक कार्य प्रारम्भ करै छैथ। कथा वाचनक कला, कथोप कथनक उपयोग शैली, लेखनक शैली, लोकोक्ति एवम् मुहाबरा सेहो कथामे प्रयोग कऽ ओइ कथाकेँ आरो रोचक आ उद्देश्यप्रद बनबै छैथ।

साहित्यकेँ प्राय: समाजक दर्पण कहल जाइत अछि, कारण स्पष्ट अछि जे कथाक जन्म केतौ-ने-केतौ कोनो-ने-कोनो रूपमे समाजेसँ होइ छइ। समाजिक वातावरण, समाजिक संस्कृति, सभ्यता आ पाबैन-तिहार सेहो कथाक केन्द्र बनैत अछि। जइसँ अँखिगर कथाकार लोकैन ओइ वृत्त-चित्रकेँ कथा रूपेँ लिख समाजकेँ एकटा नव संदेश दइ छैथ। समस्या आ समाधान सेहो कथाकार अपन कथाक माध्यमे देखा एकटा नीक समाजक परिकल्पना सेहो करबाक प्रयास करै छैथ।

बन्धुगण, ठीक अही कड़ीक एकटा वरेण्य कथाकार छैथ- श्री कपिलेश्वर राउतजी। जे मूल रूपे मधुबनी जिलाक अन्तर्गत बेरमा

ग्रामवासी छैथ। अपनेक जन्म 30 अप्रील 1952 अछि आ अपने स्व. चौधरी राउतक पौत्र आ स्व. राम स्वरूप राउतक पुत्र छी। वृत्ये ई एकटा माजल कृषक छैथ, मुदा रूचि समाजिक विकास कार्यक छैन। जेकरा राउतजी अपन विभिन्न रचनाक माध्यमसँ पुनर्नवा कथा संग्रहक रूपमे मैथिलीक बीच परसलैन अछि।

कथा संग्रह पुनर्नवामे जे पल्लवी प्रकान, तुलसी भवन वार्ड- 6, निर्मलीसँ प्रकाशित भेल अछि, ऐ लेल प्रकाशक महोदय सेहो हार्दिक दिलसँ धन्यवादक पात्र छैथ। जे अपन दिवा-रात्री सेवा दऽ कथाकार लोकनिक कथाक प्रकाशन करै छैथ।

मूलत: पुनर्नवा कथा संग्रहमे कथाकार सभ तरहक कथा, जेना-बीहैन कथा, लघु कथा- लऽ पाठककेँ मनोरंजनक संग समाजकेँ सेहो नीकसँ जीबक बाट देखेबामे सफल भेला अछि। ऐ कथा संग्रहमे कुल मिला उन्नैस गोट कथा अपन स्थान बनौलक अछि।

पुनर्नवा कथा संग्रहक केन्द्रिय कथा अछि। अही कथा शीर्षकसँ संग्रह नाओं राखल अछि। कथामे एकटा वैधव्य प्राप्त केने चढ़ैत जुआनी कलीसँ फूल बनक अवस्था, बेस नमहर, छड़गर गोर-नारि दुबर-पातर भरल-पूरल देहवाली 17 वर्षीय असहनीय दारूण दु:ख सहैवाली मैथिल नवयौवनाक वेदनाक कथा छी। जेकर नाम वसून अछि। जेकर स्वामी श्यामचन्द्रक असामयिक मौत जुड़-शीतल पाबैनक उपलक्ष्यमे खस्सीक खेलमे परिहारपुरक हँसेरीक कएल गेल लाठीक प्रहारसँ भऽ जाइ छइ। आ तइ दिनसँ वसून अन्हरगरे फूल लोढ़ि भगवती आ महादेवक पूजाक उपरान्त गीता-रामायण पढ़ब शुरू केलक। मुदा ओकर चढ़ैत जुआनी आ आँखिसँ झहरैत नोरकेँ ओकर माए चन्द्रकला एकटा ठोस निर्णय लऽ ओकर बिआह शेखर नामक विधुरसँ करा विधवा विवाहपर बल देलैन अछि। ओना, विधवा विवाह मिथिलाक समस्या नहि, मिथिलामे रहएबला किछु जातिक मात्र समस्या अछि। खाएर.., ऐठाम

कपिलेश्वरजीकेँ ऐ विचारक कहियौ आकि काजक श्रेय भेटबे करतैन जे विधवाक जिनगीपर नजैर दऽ अपन विचार प्रस्तुत केलैन अछि। आ सेहो साफ-साफ स्पष्ट तौरपर। ई नहि जे कहैले साए पन्नामे कहलौं मुदा की कहलौं से अपनो ने बुझै छी। तखन दोसर की बुझलक आ बदलाव की एलइ सेहो तँ सामनहिमे अछि। की हमरा सभक आँखि सोझ नहि अछि एकैसम शदीक दोसर दशक? अछि। मुदा आइयो विधवा विवाह सन समस्या अगुआएल समाजकेँ आगू नहि अछि?

कथा बड़का खीरामे त्रिया चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम दैवो ना जानति कुतो मनुष्य:, शत प्रतिशत चरितार्थ भेल अछि। नायक जुगुतलाल सी-नम्बरक आवारा, लूच्चा, बदमाश अछि। फुनगी परहक आम-लताम तोड़ब, चिड़ै-चुनमुनीक खोंता उजाड़ि अण्डा छुबि देब इत्यादि ओकर दिनचर्या छेलइ। मुदा मजगर बेस गाए-महींसकेँ पाल खुऔनहारक संग ईहैत-ईहैत करब, नीक साँढ़ वा पारासँ पाल खुआएब ताकि बढ़ियाँ लेरू वा परू हएत तइ सभ लेल बड़ बुधियार।

एक दिन जुगुतलाल सजमैन आ खीरा दुनू लत्तीकेँ सुतरीसँ बान्हि जड़िमे सड़लाहा गोबर दऽ देलकै। कनियेँ दिनक पछाइत सजमैनक लत्तीकेँ बन्हलाहासँ एक मुड़ी ऊपरसँ काटि देलकै आ खीरा लत्तीकेँ रहए देलकै। जइमे सजमैनसँ नमहर-नमहर खीरा फड़लै। ओतबे नहि, सरकारी प्रदर्शनीमे पुरस्कारक संग प्रशस्ती पत्र सेहो पौलक। तेतबे नहि, पूसाक वैज्ञानिक जुगुतलालकेँ फार्ममे सेहो लाभ भेलइ। आ आब जुगुतलाल सेहो जुगुतलाल बाबू भऽ गेला।

कथा खरापमे कबीर साहैबक कथनी 'बुरा जो देखन मैं चला बुरा न देखा कोई, जो दिल खोजा आपना मुझ सा बुरा न कोई...। अक्षरस: सत्य भेल अछि। जे कथाकार अकबर-बीरबल कथा लऽ स्पष्ट केने छैथ।

कथा निशावाज, बिल्कुल सभ समाजिक कथा अछि। वर्तमान सरकारोक संग कथाकारक प्रयास नशा मुक्ति अभियानक प्रति

सराहनीय छैन। कथा नायक सिंधेश्वरकेँ दारू पीलासँ लीवर कैंसर भऽ जाइ छै आ सितिया विधवा भऽ गेली। सितिया अपने तँ विधवा भऽ गेली मुदा बीरांगना बनि एकटा महिला संगठन बना केतेकोकेँ विधवा होइसँ बँचेली। कहबी छै-

निशाक जे भेल शिकार

उजरल ओकर घर परिवार।

ई सन्देश नीक नहाँति देबामे कथाकार सफल भेला अछि। कथा 'भुमहुरक आगि' वास्तवमे साधु-सन्त भऽ जाइ मुदा मनमे कैंच रहबे करै छैन। जे मनुखे समाज की बल्कि देवी-देवताक बीच रहबे करै छैन। जातिगत भावना गुरु दोष सन गुरुमे देलैन। आ वर्तमान समयमे जातिगत भावना आरो हड्डी हड्डीमे घुसल छइ। ओना, खेबा लेल की हिन्दू आकि मुसलमान, जँ माछ-मौसक बेवस्था रहए तखन ने देखियौ। एकसँ एक पैघ सवर्ण सभ संग मिलि खेता। आ हकारक बेरमे जाति-पातिक गप करताह। बुझू जे कथाकारक हिसाबे कोठलीमे कोठली आ तइमे कोठली साबित भेल अछि। विषय चयन आ अपन बात स्पष्ट करबामे कथाकार सफल भेल छैथ।

'बिसरभोर' कथा छोट-क्षीण मुदा नीक लागत, हास्य-परिहास कथा कहल जा सकै छइ। कथा नायक रामटहलकेँ सासूरमे खेबाकाल तीमन तरकारीक संग दू टुकड़ी पिऔजु देने छेलइ। मुदा ओ खेलाक बाद बिसैर गेल। जिज्ञासावश कनियाँसँ जानैक क्रममे तेहेन डण्टा मारलक जे टेटर भऽ गेलै, मुदा नाम नै मोन पड़लै। जइ टेटरकेँ देख रामटहलक दादी कनियाँकेँ माथ हँसोसैत बाजल- जे रौ टटीबा, कनियाँकेँ केना कऽ मारलिहिन जे पिऔजु सन टेटर भऽ गेलइ। आकि धक्-सिन रामटलहकेँ मोन पड़ि गेलै जे बाजल- गइ दादी, तखनसँ सएह तँ पुछै छेलियौ। मने ने पड़ै छल। बिसरभोर भऽ गेल छल। नीक लागल।

तहिना कथा 'पंचैती'मे नायक शंकरजी आ हुनक माँ केर बीच कनियाँ द्वारा कएल गेल पंचैती हमरो नीक लागल, जे उद्देश्यपरक तँ नहि मुदा परिहासक रूपमे चिक्कन अछि। कनियाँक पंचैती- माँ एना किए दुनू माय-पूत बातकेँ बतंगर करै छैथ, भिनसरकेँ ई बहारैथ आ साँझमे बेटा बहारि देतैन।' पंचैती नीक लागल। ओना, कथाकार स्वयं नम्वर वन, पंचैतिया छथिए।

कथा- 'घूर लगहक गप' घूरे लगहक गप बुझना जाइत अछि। एकरा कथाक श्रेणीमे राखि सकै छी की नहि से स्पष्ट नै भऽ पबैए।

'कुत्ताक डीह' कथा बनाबट वर्तमान परिपेक्ष्यमे राजनीतिपर सटीक बैसैत अछि। जे सिद्धान्तहीन चुटपुटिया नेतागिरीपर आधारित अछि।

'लौल' कथा एक समाजिक कथा अछि, मुदा कथा सन नहि। कथाक रूप रंग बुझिए ने पेलौं। एतए कथाकार अपन कथा स्पष्ट रूपमे नै राखि पौलैन अछि।

'निपुतरा धन' कथामे सबहक नजैर महंथीलालक धनपर रहै छैन, तेहेन सन समयमे सुगम भाइक विचार सराहनीय छैन।

कथा 'शंका' समुचित अछि। कथाकार तइ जमानाक शंकाकेँ वर्तमान समैयक संग तुलना कऽ शंकाक समाधान करबामे सफल रहला अछि।

'चाहबला' कथा सभ दृष्टिकोणे उचित लागल। सन्त कबीर दासक उक्ति छैन- 'सब दिन होत न एक समाना सन्तो होत न एक समाना।' प्रथम दृष्टिया रामाकान्त बाबूक दिन दुर्दिन भेलैन। आ सैहबी धोंसैर गेलैन। कोर्टक रास्ता देखए पड़लैन। सभटा बेइमानी, शैतानी अन्तमे बहार भऽ जाइ छैन आ दिनेमे तरेगन गनऽ लगै छैथ। ओहीठाम बालेश्वर चाह बेच गुजरो करै आ बाल-बच्चाकेँ पढ़ा-लिखा मनुख बनौलक। कथा

स्पष्ट कहैए जे कर्म कोनो छोट नहि होइ छइ। हँ, कुकर्म नै करी। नहि तँ तेकर फल भोगए पड़त।

बीरान गाम वर्तमान परिपेक्षमे दू तरहक पक्ष स्पष्ट करैए। पहिल जे आइ कोनो गाम पिछड़ल नहि रहल। सभ गाममे पक्की सड़क, रोशनी, बिजली, पानि, गाड़ी-घोड़ा प्रर्याप्त अछि। की छोटका आकि बड़का, आब तँ माछो-मौसबला सभ गाड़ीए-पर अर्थात् मोटरेसाइकिलपर माछ बेचैए। परात होइते 'माछ-लेबह, माछ लेबह' कहैत टोले-टोले हल्ला करैत रहैए। तहीठाम नवयुवकक पलायन भेने गाम छुछुन लगैए। अर्थात् रोजगारक अभाव भेने गाम छोड़ि युवक सभ दिल्ली-बम्बइ चलि जाइए। जइसँ गाम बीरान बुझना जाइए।

'तीलक तार' समाजक कुरीतिकेँ बताबैए। आँखि रहैत नै देख कानक सुनल बातपर लोक विश्वास कऽ तीलक तार बना दैत अछि।

'एक चुनौटी तमाकुल' वर्तमान समयमे सरकारी कर्मचारी आकि पदाधिकारी केहेन गिरल लोक होइ छैथ से स्पष्ट करबामे कथाकार शत-प्रतिशत सफल भेला अछि। जे आइ बिना लेन-देन केनहि केतौ कोनो काज सम्भवे ने होइए। देखबाक लेल कार्यालयमे मुरुत जकाँ कुर्सीपर बैसल रहताह मुदा चरित्र शुन्य। अपनो लाज हेबाक चाही से आँखिसँ जेना लाजक पानि खसि पड़ल हुअए। जेकर उदाहरण दिवाकर आ ध्रुव मिसर सन केतेको पतित आ घुसखोर छैथ। मुदा कुकर्मक फल ओ लोकैन अबस्से पौताह से जुनि बिसरथु।

'विघटनकारी तत्त्व' आ 'आब कहिया चेतब' ई दुनू कथाक विषय-परिवेश एक रंगाहे बुझना जाइत अछि। मुदा राउतजी बहुत बेसी दुरदर्शिताक संग ऐ कथा सभकेँ लेलैन अछि। जे आबैबला समय केहेन हएत आ हम तइ समयमे ओइ समाजक बीच जीब केना? एकर रेखाचित्र खींचबामे पूर्णत: सफल भेला अछि।

विश्वास अछि जे सगर राति दीप जरय ई जे कथा गोष्ठी आयोजन होइत अछि आ भविष्योमे होइत रहत- जेकर फलाफल राउतजी सन-सन केतेको कथाकारक कथा संग्रहपर हमहूँ किछु चर्च करबे करब।

जय मिथिला, जय मैथिली। ❑

नवकी पुतोहु

ता. 09.09.2017 दिन शनि, सगर राति दीप जरय'क कथा गोष्ठीक 95म आयोजन, जिला- मधुबनीक अन्धरा ठाढ़ी प्रखण्ड, जलसैन पंचायतक डुमरा गाम। आयोजक श्री नारायण यादव, स्व. राजेश्वर यादवक पुत्र आ स्व. भोला यादवक पौत्र, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक एम.ए. मैथिलीसँ। अपनेक अनेको कथा, कविता आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि।

ओही दिन अपनेक दरबज्जापर कथा गोष्ठीक आयोजन आ आयोजनमे नवकी पुतोहु कथा संग्रह पोथीक लोकार्पण, पूर्व शिक्षा मंत्री श्री राम लषण राम 'रमण', अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री कमलकान्त झा, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, व्याख्याता हिन्दी विभाग आ हम माने दुर्गानन्द मण्डल-सँ लोकार्पण कार्यक्रम सम्पन्न भेल। कथा गोष्ठीक समापनक बाद घुरि घर एलौं, निचेन भेला पछाइत पोथी 'नवकी पुतोहु' पढ़लौं। नीक लागल।

श्री नारायण यादवजी 'सगर राति दीप जरय'मे नियमित रूपसँ भाग लेबएबला कथाकार छैथ। गोष्ठीसँ सिनेह एतेक छैन जे लगातार रूपमे ओ जेतए केतौ कथा गोष्ठीक आयोजन भेल होइए, सभठाम उपस्थित भऽ गोष्ठीक शोभा आ कथाकार लोकनिक मान-मनोबलकेँ बढ़बैत रहै छैथ। अपनेक ई सिनेह मैथिली आ मिथिले नहि, अपितु अपन भाषाक प्रति अनुरागकेँ दर्शाबैए।

प्रस्तुत कथा संग्रहमे 17 गोट कथा अपन स्थान बनौने अछि। ओना तँ सभ कथाक माध्यमसँ अपने अपन लेखनीक सिनेह मोसिमे डुमा-डुमा तेना ने लिखने छी जे बुझू कथा-कथामे कथाचित आन्हर मनुखकेँ जीवनक बाट देखबैत अछि। टोल-टापरमे समाजक उकठाह लोक सबहक कुचालि, मिथिलानीक कुटी-चालि, नारीक महत केते इत्यादि विषय-चित्रकेँ अपन कथामे साफ-साफ झलकौने छी। यथा कथाक जँ नामे ली तँ 14 नम्बर कोर्ट, भनसिया पुल, चौरचनक बरतन, नवकी पुतोहु, गोबर बिछनी, साम्प्रदायिक सद्भाव, होनी भऽ कऽ रहत, कृतघ्न छी, जेहने खायब अन्न तेहने हएत मन, कन्याक जिनगी, सुखक रहस्य, तमघैल, विहानक अहंकार, जेहने करनी तेहने भरनी, कौल्हुक बरद, सभसँ पैघ के, भैयारी मेल, ने ओ नगरी ने ओ ठाम- सभ कथा नामक अनुरूप अछि। जे कथाक सार्थकता साबित करैए। कथाक नामक अनुरूप पात्रक चयन उत्त। प्रस्तुत कथा संग्रहमे लिखित कथासँ पाठक लोकैन लेखकक उद्देश्यसँ लाभान्वित जरूर हेता। मिथिलानी सेहो किछु-ने-किछु जरूर सीखती।

जखन किछु कथा सभपर नजैर देलौं, जेना कि 14 नम्बर कोर्ट’मे लगल जे बिहारी केते सोझमनिया होइ दैथ जे लघी-नदी करब उचित स्थानक अभावमे एकटा गलीमे कऽ देलाक पछाइत 5 रूपैआ जुर्माना भरि कोर्टसँ डिसचार्ज स्लिप लऽ वापस बासापर अबै छैथ। ई अलग बात जे ओ बंगाली पुलिसकेँ किछु लऽ दऽ मामला रफा-दफा करए चाहै छैथ जे चलैन अपना ऐठाम माने बिहारमे अछि। अर्थात् घूसखोर पुलिसिया सभपर नीक थाल फेकएमे यादवजी सफल रहला अछि।

कथा ‘नवकी पुतोहु’ कथाक गढ़ैन ग्रेजुएट पुतोहु जकाँ छैन मुदा कथाक मोड़ किछु आर छैन। राधा देवीकेँ दूटा बेटा आनन्द आ सुरेश। राधा देवी आनन्द विवाह बड़ सखसँ सुलेखा सन गोर वर्ण वाली लड़कीसँ सम्पन्न करौलैन। ऊँच कद, नमहर नाक रंग गोर आँखि नमहर मुदा गोर

मौगी गौरबे आन्हर सन बात। सासु राधा देवीकें सखमे सघोंर कऽ देलकैन। परिवार टुटि गेल। सुलेखा ओइ परिवारकें नर्क बना देलक। ओकरा अपना सुन्दरता आ बापक सम्पैतपर गर्व छेलइ। एम्हर राधा देवीक दोसर बेटा सुरेशक बिआह रोशनी सन सुकन्यासँ भेल। जे अपन कर्मसँ ओइ परिवारकें नर्कसँ स्वर्ग बना देलक। आ एक दिन सुलेखाकें अपन किरदानीपर पछताबा करैत अपन सासु राधा देवीसँ माफी माँगए पड़लैन। ऐ तरहें एकटा टुटैत घर रोशनी सन सुकन्या 'नवकी पुतोहु' पाबि टुटैसँ बँचि गेल। ई कहैत आनन्दक आँखिसँ नोर झहरए लगलैन जे ऐ घरक साक्षात् लक्ष्मी छैथ 'नवकी पुतोहु'

'गोबर बिछनी' कथामे कमली आ मंगली जे पढ़ि-लिखि, बादमे राधा आ कुसुम केर नामसँ विख्यात भेली। समाजक बीच एकटा आदर्श स्थापित कऽ राजेश सन उच्चका छौड़ाकें धारा 376 अर्न्तगत गिरफ्तार करबा जेल भेजौलक आ समाजमे देखौल जे काल्हि तक जे कमली आ मंगली गोबर बिछनी छल ओ आइ पएि-लिखि नारी शक्तिकें जगा आबएबला पीढ़ीक लेल एकटा उदाहरण बनल।

'साम्प्रदायिक सद्भाव' कथा अपने समाजेटा नहि अपितु भारतीय राजनीति आ राजनेता सभकें धो देलैन। जे देश वा राज्यमे फूट डालि शासन करबामे चौकस राजनेताक मुँहपर तमाचा मारएमे पूर्ण सफल रहला अछि। जैठाम जाति भेद कुट-कुट कऽ भरल अछि, जेतए धर्मक नामपर शासन आ सत्तामे बनल रहऽ बला शासनिक आ प्रशासनिक नेता आ राजनेताकें लाज हेबाक चाही जे आइयो अही माटि-पानिपर प्रकाश नामक हिन्दू आ रहमान नामक मुस्लिम लड़का ईद आ होलीमे जा पुआ पकवान खा रंग-अबीर लगा आ सेबई एवम् मेवा मिठाइ खाइए। एतबे नहि, सीढ़ीसँ उतरैकाल प्रकाशक खसब, कपार फूटब, सोनितक धार निकलब, ततबे नै खूनक खगता भेलापर रहमान अपन खून दऽ प्रकाशकें एकटा नव जिनगी देलकै, जे ई स्पष्ट करैए जे हिन्दू वा मुसलमानक खूनमे

कोनो अन्तर नहि, अपितु दुनू तँ भगवानक देल अनमोल उपहार छी, तखन किएक ने साम्प्रायिक सद्भाव कायम भऽ देश वा समाजमे अमन चैन स्थापित करी। आ सभ सुख शान्तिसँ जीबी।

'कन्याक जिनगी' कथामे कुसुम नामक कन्या जेकरा देख कथाकार महोदय स्वयं अपन जेठ बहिनक ननैद कुसुमकेँ देख मोहित भऽ जाइ छैथ। एक दिनक लेल आएल पाहुन दस दिन केना बितल ई बुझि नै सकला। मुदा छुट्टी खतम भेलाक बाद घर घुरि आएब जरूरी बुझि मौलाएल मने दुनू गोरे अपन-अपन हृदयमे विरह वेदना लऽ एक-दोसरासँ बिछड़लाह। बहुत दिन बितला पछाइत कुसुमक धियान मनसँ हटि गेलैन। मुदा भागिनक विवाहमे दीदी गाम कथाकारकेँ जाए पड़लैन। कुसुम मन पड़ब सोभाविके छल। एकटा विधवा जनानीसँ कुसुमक विषयमे पुछाड़ि केलाक बाद ओ बेचारी सिसकैत बजली- पाहुन हमहीं छी कुसुम।

कथाकार अवाक्, माथपर हाथ लऽ सोचमे पड़ि गेला। आखिर यएह छै कन्याक जिनगी? हमरो देह सिहैर गेल, जे कथाक सार्थकता अछि।

एकर अलाबे 'विद्वानक अहंकार', 'जेहने करनी तेहने भरनी' लोक कथापर आधारित कथा अछि। मुदा कथाकार एकरा सउद्देश्य दर्शेबामे समसामयिक कथा अछि जे दर्शबैए जे केना आजुक समयमे बेटा-पुतोहु जन्मदाता माए-बापकेँ बटाइ लगा दइए। की दुर्गैत अछि आजुक पीढ़ीक माए-बापक, जेकरा समाज नग्न आँखिसँ देखतो ओकर दुख हरबामे अपनाकेँ मजबूर बुझि रहल छैथ। तैठाम ई कथा पूर्णत: जोगारी कथा साबित भऽ रहल अछि।

चूकी साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि, तैठाम उचित निर्णय लेबाक अधिकार पाठकक मन आ लेखनीपर निर्भर करै छैन। तैयो कथाकार नारायण बाबूक कथा संग्रह- 'नवकी पुतोहु' पढ़ि बेसी इन्तजार

नै करा जे पौलौं से लिखलौं आ समर्पित कएल। मुदा कथा सबहक बीच मैथिलीमे लिखल कथामे किछु खाँटी हिन्दी शब्दक प्रयोग सेहो भेल अछि। जे दालि-भातक कौरक बीच पड़ल आँकर सन बुझना गेल।

अस्तु नारायण बाबूक कथा लेखनक लेल हम हुनकर भविष्यक मंगलकामना करैत, शुभकामना आ शुभभावनाक संग साधुवाद दइ छिऐन जे ओ एहने शिक्षाप्रद कथा लिखैत रहता जइसँ हम सभ लाभान्वित होइत रही। संगे, समीक्षा-टिप्पणी सेहो लिखैत रही। ❑

सखारी-पेटारी

सखारी-पेटारी एकटा महान समाजिक कथाकार श्री नन्द विलास राय द्वारा लिखित समाजिक समरसता, रूढ़िवादिता आ संगहि अन्ध विश्वासपर कसगर चोट देनिहार कथाकारक कथा संग्रह अछि। 'महान समाजिक कथाकार' ऐ दुआरे कहल जे समाजमे रहि, गाममे रहि कथाक रचना कएल अछि। विश्वास अछि 'सखारी-पेटारी' पढ़ि समाजक बीच व्याप्त मानसिक द्वेष, रूढ़िवादी विचारधाराक बीच बहैत लोक सभकेँ उचित बाट भेटतैन।

प्रस्तुत कथा संग्रहकेँ पढ़ला बाद एहेन बुझना जाइत अछि जे कथाक अधिकांश अंश कथाकारक जीवनमे घटित घटना हो। जेकरा कथाकार अपना लेखनी द्वारा उतारि समाजक बीच रखलैन अछि। ऐ कथा संग्रहमे कुल मिला 22 गोट कथा अपन स्थान पौलक अछि। प्राय: सभ कथा अपने-आपमे कोनो केकरोसँ उन्नैस नहि बल्कि बीसे अछि।

अप्पन बातमे सेहो कथाकार अपन जीवनक कटु अनुभव रखलैन अछि। पढ़लोपरान्त बुझना जाएत जे कथाकार श्री रायजी केर जीवन केतेक संघर्षपूर्ण रहल अछि। कथाकार अपना जीवनमे आएल समस्याक समाधान कोन तरहेँ संघर्ष करैत अन्तोअन्त सफल भेला अछि। संगहि पोथीक रचनाक सुअवसर केना भेटलैन, रचनाक प्रेरक के? आदि-इत्यादि सभ वृतान्त कथाकार अपन 'अप्पन बात' मे लिखलैन अछि।

कथा 'असल बेटा'मे अपन बेटा बेटा नहि भऽ शंकरजी अर्थात्

सुमनीक घरबला घोघन जे जीबैतो आ मुइलोपरान्त ससुरक सेवा सुश्रुर्षा केलखिन। जखन कि छजना गाम निवासी जीतन मुखिया, जातिक मलाह, जातिक पेशा नै कऽ निर्मली टीशनक कातमे कएल चाहक दोकानसँ अपन दुनू बेटा सुकल आ विकलकेँ इंजीनियर बनौलक। अस्तु कथा बतबैए जे कर्म कोनो छोट वा पैघ नहि। अस्तु कोनो कर्मकेँ अधला नहि बुझि कर्म कऽ कियो ऊँचसँ ऊँच पद पाबि सकैए।

कथा 'जताति'मे फूलचन राउतकेँ ओकर घरवाली आ पिता केकरो जजाति चरा लेब वा दूरि करब छोड़बै छथिन। किएक तँ ओ अमानवीय काज अछि, एहेन काज मनुखकेँ नै करक चाही। किएक तँ कर्मक अनुसार फल भेटबे करै छै, तेकरे परिणाम स्वरूप ओकर दुध पीआ बच्चा बड़ जोर बेमार भऽ जाइ छै इत्यादि... ऐ कथामे आएल अछि। असलमे धन्यवादक पात्र ओकर पत्नी अछि जे फूलचन सन मदभक्त लोकक भक् खोलि दैत अछि।

'पोलीथिन' कथामे समाजक बीच व्याप्त दारू सन घृणित बौसपर कसगर प्रहार कएल गेल अछि। जेकरा बिना औझुका तारीखमे कोनो काजे सम्भव नहि अछि। से चाहे ओ आलू रोपब किए ने हो वा अल्लूए उखारब। धन्यवाद ऐठाम मुख्यमंत्रीजीकेँ छैन जे बिहारमे दारू बन्द करबा सबहक परिवारमे हसी-खुशी लौटेलैन।

कथा 'निवास प्रमाण पत्र' मे सरकारी कर्मचारी वा पदाधिकारी केहेन पतित लोक होइ छैथ से उजागर करबामे कथाकार रायजी केतौ कोनो हिसाबसँ पाछाँ नै रहला अछि। कर्मचारी वा पदाधिकारीक करनी आ कथनीमे केतेक अन्तर होइ छै से स्पष्ट होइत अछि ऐ कथामे। काज कोनो किए ने हुअए बिना घूसक भइये ने सकैए। भलेँ केतबो ऊँच पद परहक पदाधिकारी होइथ वा चपरासी आकि कर्मचारी। मूल बेतनमे तँ बुझू खल्लर पैसल रहै छैन, आउटी आमदनीपर घरवालीक लेल साड़ी, आ धिया-पुताक टीशनक फीस भरता। ऐ काजक लेल कोनो गत्तरमे

लाजो नहि होइ छैन। जेना कि आँखिक पानि सुखि गेल होइन। कथाकार स्वयं ऑनलाइन बला रसीदक संग 150 रूपैआ देलाक पछाइत सोलह दिनमे होइबला काज 3 बजेक पछाइत भऽ जाइ छैन।

'निपुतराहा' कथा सेहो आत्मकथा सन बुझना जाइए। ई शब्द मात्र कथाकारकेँ केतेक कचोटैत हेतेन से वएह कहता आर...। कथामे काल्पनिक नाम विमलजी जरूर अछि, जे दिनेशजीक बेटा संदीपक कपार फूटला बाद अपन खून दऽ ओकर प्राण बँचबै छथिन। तखन औरहावालीकेँ आँखि खुजै छै आ ओ विमलजी सँ माफी मंगैत अछि।

अखुनका समयमे लालबाबू सन महाजन भेटब मोश्किल मुदा कथाकार उदाहरणक लेल एहनो एकटा महाजनकेँ जीवन्त रखने छैथ। जे पाँच प्रतिशत ब्याजपर सुदखोरक लेल एकटा मार्ग दर्शन अछि।

तहिना 'गोबर बीछनी' कथामे दुखनी आ ओकर बेटी गोबर बीछि, चिपरी पाथि निर्मली बाजार जा बेचि गुजर करैए। मुदा इमानदार एहेन जे एकटा कीमती मोबाइल भेटला उत्तर जेकर छिऐ तेकरा ओहिना दऽ देबै, वर्तमान समाजक लेल आदर्श उपस्थित करबामे कथाकार सफल भेला अछि। फलस्वरूप पंचायतक मुखिया ओकर इमानदारीसँ प्रसन्न भऽ इन्दिरा आवास, अन्तोदय, वृद्धा पेंशन आदि सुविधा दऽ दुखनीक दुख दूर केलैन।

'पोषाहारक गहुम'मे वर्तमान समयमे अपना समाजक बीच सफेदपोश चोरबाकेँ उजागर करबामे कथाकार शत प्रतिशत सफल भेला अछि।

तहिना 'सभसँ पैघ पूजा'मे असल पूजा की? वा सभसँ पैघ पूजा माए-बापक होइ छै, से कथाकार अपन कथाक माध्यमसँ झलका देलैन अछि।

'भोँट' कथामे वास्तवमे जातिप्रथाकेँ बढ़ाबा दइ छै, मानव सेवा

किछु नहि, स्पष्ट देखबा योग्य होइए।

कुल मिला ‘सोइरी छछारब’, ‘ननैद-भौजाइ’, ‘बाबाधाम’, ‘चौरचनक दही’, जाति-पाति’, ‘विवेकक विवेक’ वा ‘बाड़ीक पटुआ’, ‘डाक्टर बेटा’, ‘प्रो. बेटा’ सभटा पोथीक नामक अनुसार ‘सखारी-पेटारी’मे संजोगल अछि। जे मिथिलाक परम्परा, सभ्यता आ संस्कृतिकेँ मोन पाड़ैए। जहिना एकटा मिथिलानी अपना बेटीक बिदागरीमे एक-सँ-एक अपूर्व चीज-बौस सहेज कऽ दइ छथिन ठीक तहिना कथाकार रायजी सभ कथाकेँ सजा मैथिलक आगाँमे रखलैन अछि। जे केहेन हम छी आ मिथिलाक विचारधारा केहेन अछि जेकरा हमरा लोकैन बिसैर समाजकेँ स्वत: वर्वादीक कगारपर लऽ ठाढ़ केने छी।

तैठाम ई कथा संग्रह- ‘सखारी-पेटारी’ मोतियाबिनक ऑपरेशनक बाद देल गेल चश्माक काज करत, जे सभ चीज-बौस साफ-साफ देखाएत। अन्तत: हमर ई शुभकामना रहत जे रायजी अहिना कथा सभ लिखैत रहैथ आ हम सभ पढ़ैत रही। संगे त्वरित समीक्षा सेहो लिखैत रही। एकबेर फेर श्री नन्द विलास रायजीकेँ धन्यवाद-साधुवाद। ❑

त्रिकालदर्शी

त्रिकालदर्शी एकटा महान कथाकारक सम्पूर्ण रचना, रचनाकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक अनोके रचनाक एकटा अनमोल मोती अछि जइमे आठ गोट कथाक स्थान देल गेल अछि।

संग्रह कथा क्रम अछि- 'भुतलग्गु आकि भविसलग्गु', 'मर्माहत', 'गुणहीन', 'समझौता', 'जेकर चून तेकर पून', 'त्रिकालदर्शी', 'नमहर फेरा' आ 'आशापर पानि पड़ल'

सभ कथा एकसँ-बढ़ि-कऽ-एक अछि। केकरा केतेक नीक कहब ई असमंजस बनल अछि। सभ कथाक पात्र आ नायक नायिकाक नाओं विलक्षण। कथामे ठहराव, उतार-चढ़ाव आ कथोपकथनक तँ जवाब नहि। जेना कि श्रीमानक कथा लेखनक जवाब नै छैन। हँ, तखन सभ कथाक बीच एते अन्तर जरूर अछि जेतेक अन्तर 22 कैरेट आ 24 कैरेटमे होइत अछि। ई तँ हमरा सबहक सौभाग्य छी जे 'सगर राति दीप जरय'क सभ कथा गोष्ठीमे स्वयं कथाकार सदेह उपस्थित भऽ हमरा लोकैनकेँ अपन आशीर्वचनसँ अभिभूत करबै छैथ।

कथा- 'भुतलग्गु आकि भविसलग्गु' अपन जीवनसँ जुड़ल कथा बुझना जाइत अछि। जइमे नेमुआवाली भौजी आ श्रीमानक दिअर-भौजाइक बीच सिनेहसिक्त सम्बन्ध आठ-नअ बर्खक अछि। जइसँ हुनको देहक समरथाइ निच्चाँ मुहेँ उतैर गेल छैन आ अपनो सहजहि। बजै-भुकैमे अरबा चाउरक बसिया भात जकाँ, भौजी किछु बेसीए फरहर

छैथ। माने ई भेल जे नेमुआवाली भौजी बजली-

“जे घरवालीकेँ भूत लागल अछि आ अपने छिड़हारा खेलाइ छी।”

भौजीक बोल श्रीमानकेँ सेरसों तेलमे डुमल तिनसलिया आमक अचार जकाँ सोहनगर लगलैन।

कथाकारक हृदय देखियौन जे स्वाती नक्षत्रक केतेक बढ़ियाँ वर्णन केने छैथ। जे स्वाती नक्षत्रक बून केराक मुँहपर पड़त तँ कपूर बनत आ सिपीक मुँहपर पड़त तँ मोती आ साँपक मुँहपर बीख बनि जाइ छइ। मुदा स्पष्ट हेबे नहि करैन जे नेमुआवाली भौजी जे बजली- घरवालीकेँ भूत लागल अछि से थाहे ने चलल। सत्य ई छल, भदुआरवाली कुम्हैन दशहाराक घोड़ा दाम किछु बढ़ा कऽ कहने रहैन जेकर समर्थन तमुरियावाली आ ननौरवाली केने रहथिन। जे तोरो सभकेँ तँ भूत खिंहारने छह। भरिसक ओकरे उपराग नेमुआवाली देने छेली।

दोसर कथा- ‘मर्माहत’मे नायक जोगारी भाय, मूल रूपे खेतिहर छैथ। एक दिस जे पलायन भऽ रहल अछि तेकर दोसर रूप जोगारी भाय खेतीक सभ समचा और कोदारि-खुरपी, हँसुआसँ लऽ कऽ बोरिंग-दमकल लऽ दुनियाँक बीच मनुख जकाँ शानसँ जीबै छैथ। कथामे समय-साल परेख जोगारी भाय चालिस बर्ख पूर्व तीन कट्ठामे बँसवाड़ि लगौलैन। जे मनसम्फे उठल। जेकर समीक्षा जोगारी भाय मने-मन कए रहल छला, तही बीच पत्नी- फुलकुम्मैर चाह नेने दरबज्जापर आबि गेली।

चाह पीब पान खाइते जोगारी भाइक मन मिथिलाक अनमोल उपयोगी वस्तु- बाँसमे ओझरा गेलैन। जे सुखि-सुखि नष्ट भऽ रहल अछि। तही बीच बाँसक बेपारीकेँ आएब आ अस्सी रूपैआक हिसाबसँ एकहरफी सभ बाँसकेँ बेच गाड़ाक उतरीकेँ हटौलैन।

तेसर कथा- ‘गुणहीन’, गुणहीनक नायक जीवानन काका पाँच कट्ठामे सजमैनक खेती केलैन जे तीस दिनक पछाइत कच्चे-बच्चे बतिया

आ फूलसँ खेत तरेगन जकाँ जगमगा गेल। पैंतालिसम दिन एकटा सजमैन तोड़ि जीवानन काका घर आबि पत्नी- सुदामाकेँ हाक दैत बजला-

“एहेन फलसँ खेत भरल अछि।”

पत्नी बजली-

“लक्ष्मी दहिन अछि।”

ठीक एक सप्ताहक बाद जीवानन काका जखन खेत गेला तँ समोहि लागि गेलैन। किएक तँ एतेक बढ़ियाँ उपज होइतो पच्चीस प्रतिशत सजमैनक बिक्री नइ भेल। खेतमे पथार लागल सजमैन जुआ-जुआ कऽ बुढ़ा गेल। जीवानन कक्काक बकार बन्न भऽ गेलैन। हाल-बेहाल, जेतबे मनोरथसँ खेती केने छला तैपर अस्सी मन पानि पड़ि गेलैन। तैपर पत्नी सबुर दैत बजली-

“जखन संगे जीवन मरण अछि तखन जे हवा-बिहाड़िक डर करब तँ जीब पएब?”

जीवानन काकाकेँ ठोर बिहुसलैन।

‘समझौता’ कथामे नायक लालकाका आ नायिका लालकाकी अछि। कथामे जिनगी की? एकर समाधानक रूपमे कथाकारक युक्ति छैन जे जिनगीकेँ जिनगी बना कऽ जीब तखने ओ जिनगी भेल। उदाहरण स्वरूप लालकाका आ लालकाकी छैथ, एते दिनसँ गैस चुल्हिक रट लगौने छेली से समैयक हिसाबसँ जरूरी बुझि परिस्थितिक अनुकूल समझौता केलैन। ई समझौता कथाक समझौताक सार्थकता शत-प्रतिशत बुझना जाइत अछि।

‘जेकर चुन तेकर पुन’ कथा सेमी गौभर्मेन्टक सहयोगसँ साहित्यिक कार्यक्रमक आयोजन, समाजिक सहयोगपूर्ण, नीक प्रचार-प्रसार, खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ रहै-सहैक सेहो नीक बेवस्था। कार्यक्रममे साहित्यकार,

गीतकार, पत्रकार, रेडियो स्टेशनक कलाकारक संग गमैया गीतकार, संगीतकारक बढ़ियाँ जुटान भेल। तही बीच बदलू भाय आ राधेश्याम कक्काक चुन-तमाकुलक प्रसंग मनमोहक अछि। कार्यक्रमक सार्थकता ई जे अढ़ाइ घन्टा केना गुजरल से ने तँ कवि आ ने साहित्यकार बुझलैन आ ने श्रोत्रा-दर्शक। तही बीच राधेश्याम काका बजला-

"जाए दियौ जे भेलै से भेलै, आब तमाकू खाउ आ विदा होउ। एकबेर अहाँक चुन छल आ हमर तमाकुल, ऐबेर अहाँक तमाकुल रहत आ हमर चुन। कहबी छै- जेकरे चुन तेकरे पुन।"

ठोर तरमे तमाकुल दैत दुनू गोरे घर दिस ससरला।

'त्रिकालदर्शी' पूर्ण रूपेण समसामयिक कथा अछि। जेना कि बर्खा अधिक भेने गाममे पानि जबैक गेलइ। निकासक समुचित बेवस्था नइ भेने एकटा अलगे समस्या ठाढ़ भऽ गेल। गामक भौगोलिक दिशा आ दशा तेहने जे गामक दशा देख सामुहिक बेथा देख सबुरे करब उचित। देवीकाका गामक जमीन्दार जे मौलाएल मुँह लऽ कऽ दरबज्जापर बैसल छैथ। मुदा त्रिकालदर्शी सदृश गामक भविसपर सोचि रहल छैथ। सबुर भेलैन जे ई धरती माता हमरा सन हजारो त्रिकालदर्शी बेटा पैदा केने छैथ। बुझबा जोग भेलैन जे बाढ़ि-पानिमे छोटका चुही घोदामाली भऽ आड़ि-धुरसँ निकैल बाढ़िक बेगमे हेलैत समुद्र तक पहुँच जाइए, तहन तँ अपना सभ मनुख छी। जीता-जिनगी जे ई सभ नइ हएत तँ जिनगीक परीक्षा केना होएत।

'नमहरर फेरा' कथामे गाम-गाम नहर-छहर आ सड़कक घेरा भेलासँ जमीन सभ डुबा भऽ गेल। जइसँ जीवानन्दक खेती बुझू जे डाँर भरि पानिमे दहा गेल। जइसँ बेचाराकेँ समोह लागि गेलै आ बेहोश भऽ आड़ियेपर खसि पड़ल। तखने बाधमे घुमैत संतोखीलाल संतोख दैत जीवानन्दकेँ उठा-पुठा कऽ घर लऽ अबैत अछि। अन्तोअन्त एहेन दहार आ बाढ़ि-पानि भेने गिरहस्तकेँ जे बिपैत पड़ै छै तँए कि गिरहस्त सभ

खेती करबाक परियास करब थोड़े छोड़ि दइ छइ।

संतोखी काका जीवानन्दकेँ संतोख दैत अपनो संतोख करै छैथ।

ऐ तरहेँ कथाक अन्त होइत अछि। संग्रहक सभ कथा अपन-अपन विषय आ परिवेशसँ अपन-अपन सार्थकताकेँ देखबैत कालजयी रचनाक श्रेणीमे बुझाइत अछि। ❑

एक्कैसमी सदीक निर्देशिका- अर्द्धांगिनी

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक अनमोल रचना ‘अर्द्धांगिनी’ एक्कैसमी सदीक निर्देशिका साबित होइत अछि। वहुआयामी रचनाकार, प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व मण्डलजी ऐ पोथीमे बीस गोट एहेन रचना परोसने छैथ जे विभिन्न प्रकारक सन्देश हमरा लोकैनकेँ देबामे सक्षम साबित भऽ रहला अछि। ऐ पोथीमे एक्के नहि, अपितु विभिन्न वर्ग, सम्प्रादायसँ जुड़ल विभिन्न समस्याकेँ उठा रचनामे अनलैन अछि, संगे आइ समस्या सबहक परिवेशकेँ धियानमे रखैत परिवेशानुकूल समाधान तकबामे सेहो सफल बुझना जाइ छैथ। हिनक रचना मिथिलाक माटि-पानिसँ लऽ पाबैने-तिहार धरि नहि अपितु ओइसँ जुड़ल अन्धविश्वासपर प्रहार करबामे सेहो सक्षम साबित भेल छैथ। पोथी पढ़एकाल एहेन नहि बुझना जाएत जे ऐ पोथीमे हमर अप्पन माटि-पानिक सुगन्ध अछि। मण्डलजी मात्र कहानीएकार छैथ से बात नहि, अपितु हुनक विभिन्न विधामे अनेको रचना भेटैत अछि। यथा- उपन्यास, कथा, लघु कथा, बीहैन कथा, गीत, कविता, नाटक, एकांकी इत्यादि सेहो भेटैत अछि। पूर्णत: मिथिला आ मैथिलक समस्यासँ जुड़ल रहैत अछि। कथा पढ़एकाल निश्तुकी एहेन बुझना जाएत जे ई हमर अप्पन समस्या छी, हमर समाजक समस्या छी। आ तेकर एहेन सुन्दर समाधान सेहो कथाकार निकालने छैथ जे देख-सुनि आ पढ़ि छगुन्ता नहि लागि मन आनन्दित भऽ जाएत बुझना जाएत ऐ समस्याक यएह समाधान हेबक चाही। एकर केन्द्रमे कारण अछि मण्डलजीक दृष्टि तथा परिवेशक ज्ञान।

अर्द्धांगिनी बीस गोट कथाक संग्रह अछि। जइमे पहिल कथा 'दोहरी मारि' अछि। दोहरी मारिमे सरसैठ सालक प्रोफेसर गुलाब जे मात्र पाँच बर्ख पहिने सेवा निवृत्त भेला। वर्तमानमे प्रो. गुलाब डायविटीज आ ब्लड पेसरक रोगी छैथ। हुनक पत्नी- लालमणि चाह नेने टुटल ऐगला दाँतक मुहसँ मुस्की दैत हाथक कप पति दिस बढ़बैत बजली-

"कॉफी सठि गेल छल.., लगल।"

पत्नीक बात सुनि गुलाबक.., मरनीक बेर'सँ रोमांचक शुरूआत होइत अछि। गाममे पसरल समस्या आ अरजल दुखसँ ग्रस्त भऽ शहरक चमक-दमक देख मन उधिया जाइ छैन। घराड़ियो धरि बेच शहरमे नीक मकान बना, शेष बैंकमे राखि लइ छैथ। मुदा तीन दिनक कर्फ्यू आ पनरहे दिनक मेहतरक हड़ताल भेलापर होस आबि जाइ छैन। जे कथाकारक स्वरे स्पष्ट होइत अछि-

"पनरहे दिनक मेहतरक हड़ताल भेल..., हे भगवान जनिहह तूँ।"

भक् खुजि जाइ छैन। एतबे नहि, हद तँ तखैन होइत अछि जखन जाइत-अबैत मोबाइलक टाबर बीच बेटाक फोन अबै छैन-

"पाँचम दिन कल्पनाथक मुड़न वैष्णोदेवीमे होएत... ।"

सुनि प्रो. गुलाबक छाती छँहोंछित भऽ जाइ छैन। आ पोताकेँ असिरबाद देबाक बात सुनि बकारे नै फुटै छैन।

प्रस्तुत कथामे नव-नौतार लोक जेकरा शहरी वातावरणक बीमारी पकैड़ नेने छै मुदा पौरुख घटलाक बाद जखन अपनो संग छोड़ि दइ छैन तखन ओ दोहरी मारिसँ कुही भऽ-भऽ कनैत अपनाकेँ माफो नहि कऽ पबै छैथ।

संग्रह दोसर कथा- 'केना जीब' अछि। ईहो कथा पहिले कथाक पृष्ठभूमिपर बुनल अछि। जेकर पुरुख पात्र भारतीय प्रशासनिक प्रो. शंकर जे बेटाकेँ अमेरिकामे पढ़ा-लिखा पछताइ छैथ। किएक तँ हुनक बालक

अमेरिकी समाजमे मिलि अपन सभ किछु बिसैर गेल अछि। एहेन स्थितिमे दुनू परानीमे जीबसँ मरब नीक बुझना जाइ छैन। आ खिचड़ी टभकबैत शंकर कुमारकेँ देख सरस्वती बजली-

“केना जीब?”

किएक तँ सभ किछु अछैत लचार दुनू परानी प्रो. शंकर कुमार एकाकी जीवन बितेबाक लेल मजबूर छैथ। ई कथा आजुक जीवनक लेल अनुकूल सन्देश दऽ रहल अछि। आ आबए बला समैयक लेल चेताबनी सेहो। यएह कथाक सार्थकता अछि।

संग्रहक तेसर कथा- ‘नवान’ अछि। नायक एकटा साधारण कृषक अछि जे अपन मेहनतक बल-बुते अपन भाग्य विधाता अपने बनल अछि। यद्यपि किसानी जीवनकेँ तंग-तबाह उठेनिहार बाढ़ि थिक। मुदा ओहने स्थितिमे कथा नायक आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिसँ धान-पातक संग तीमन-तरकारी उपजा, नव नश्लक माल-जाल पोसि अपना जीवनमे वसन्त बहार आनि नेने अछि। अर्थात् जीवनकेँ खुशहाल बना सकै छी। ई सन्देश ऐ कथाक मूलमंत्र अछि। किछु हुनके शब्दमे....। मन भरि गेल।

चारिम कथा- ‘तिला सकराँतिक लाइ’ पूर्णत अन्ध विश्वासपर आधारित कथा अछि जे मिथिलाक प्रत्येक घरमे हर्षोल्लासक संग मनौल जाइत अछि। गरीबो-गुरबा ऐ दिन नहा-धो-क पूर्ण गुड़ देल तील-चाउर खाइए। एहेन मनतव्य छै जे जेते तिल-चाउर खाएत ओकरा ओते बहए पड़तै। मुदा ई अलग बात जे आइ-काल्हिक बाल-बच्चा माए-बापक लेल केतेक बहैत अछि। तेतबे नहि, जलखैमे दही-चूरा प्राय: सभ कियो खाइते अछि। तैसंग मुरही-चूरा आ तीलक लाइ बना घरक गोंसाइकेँ चढ़ा प्रसादमे सभ कियो खेबे करैए। मुदा एकरा अपवादमे प्रात: स्नान जरूरी मानल गेल अछि। आ जे जेतेक डूब देत तेकरा तेतेक लाइ भेटत। ई सद्य: एकटा अन्धविश्वास अछि। जइ चक्करमे पड़ि गोपाल नामक

लड़काकेँ ढंठा लागि जाइत अछि। जे पाखण्ड बुझना जाइत अछि। मुदा जँ धरमागती पुछी तँ हमरा हिसाबसँ स्नान समयपर हेबाक चाही। आ बहुतो लोक करितो छैथ। ऐ सम्बन्धमे हर्ड़ीवालीक उक्ति सोल्हअना सत्य अछि।

कथा- 'भाइक सिनेह' नामानुकूल सार्थक अछि। दू भाँइ- शिष्टदेव आ विचारनाथ दुनू एक-दोसराक प्रति अगाध प्रेमक कथा अछि। दुनू भाँइकेँ एक-दोसराक प्रति जेतबे सिनेह तेतबए श्रद्धा आ निष्ठापूर्ण विश्वाससँ भरल छैन। मुदा दू दियादनी दू गामक बेटी, दू माइक जन्मल, दू विचारक। तँए बनाइन नहि भऽ पबै छै आ परिवार दू खण्डमे विभाजीत भऽ जाइए। तैयो, दू भाँइमे खास अन्तर नइ पड़ै छइ। जेठ भाय- शिष्टदेवक विचार किछु एहने सन-

"परिवार भलेँ फूट भऽ गेलै....। पिघैल-पिघैल पानि हुअ लागल... ।" पेज 41

एम्हर शिष्टदेवक विचार देखैत-

"एक हिस्सा रहितो... ।" पेज 42

कथा तँ चरमपर तखन पहुँचैए जखन कि दुनू भाँइ एक-एक बोझ धान अपना-अपना खरिहाँनसँ उठा एक-दोसराक खरिहाँन दिस जाइत एक-दोसराक आगाँमे ठाढ़ भऽ जाइत अछि। भैयारीक सिनेहक पाराकाष्ठा तखन देखबा योग्य अछि। खड़होरिक करची जकाँ लटपटा गेल...। आ दुनू भाँइक बीचक सिनेह पुन: एकाकारक सनेस देने छल। भाइक सिनेह कथाक सार्थकता अछि।

संग्रहक छठम कथा- 'प्रेमी' अछि। कथाकार ऐ कथाकेँ प्रेमकथाक रूपमे रखलैन अछि। जइमे सुकन्या नामक कन्या लोचन नामक लड़कासँ प्रेम करए लगैत अछि। जे विजातीय अछि। मुदा प्रेम ने मानए जाति-पाति...।

सुकन्या आ लोचन दू जान मुदा प्राण एकठाम। जे परीक्षोपरान्त सुकन्या लोचनकेँ सीमा धरि अरियातैत-अरियातैत घर तक पहुँच गेल। दिन पनरहेक पछाइत मौगियाही कचहरीमे फैसला भऽ गेल जे सुकन्या अजाति भऽ गेल। मुदा पक्षधरक गरैज कऽ ई बाजब-

"जइ समाजमे...! सुनैत अबै छी।" पेज : 52

ऐ तरहेँ कथाकार प्रेम विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक पूर्ण समर्थक बुझना जाइ छैथ। जे आजुक दहेज प्रथाक विरोधी आ आदर्श स्थापित करबामे सार्थक साबित होइत अछि।

कथा- 'बपौती सम्पैत'मे कथाकार समाजमे जातीय व्यवसायपर काफी जोर देलैन अछि। जे कथा नायक गुलटेन अपन पिता द्वारा सिखौल व्यवसायकेँ बपौती सम्पैत बुझि स्वावलम्बी होइत अछि। यथा कथाकारक शब्दमे-

"काजकेँ गुलटेन...। बपौती सम्पैत बुझैए।"

ऐ तरहेँ कथाकार वास्तवमे भारत जे सम्पूर्ण रूपे कृषि प्रधान देश अछि तैठाम खेतीहरक मान-मर्यादाकेँ बढ़ौलैन अछि। जे आजन्म हमरो लोकैनकेँ यादि राखक चाही।

कथा 'डंका' एकटा पारम्परिक विषयपर आधारित कथा अछि। जेकर नायक भैयाकाका छैथ अदौसँ एकटा चलैन गाम-घरमे आबि रहल अछि ओ छी 'डंका', जइमे ओ छपरिया पहलमानकेँ चीत कऽ अपन स्वमान आ सम्मानक रक्षा करै छैथ। एतबे नहि, छपरियाक ओ उपद्रवसँ गाममे शान्ति सेहो स्थापित होइत अछि।

कथा- 'संगी'मे सतरह बर्खक सुशील आ वसन्ती वर्तमान शिक्षा पद्धति आ शिक्षण बेवस्थापर नीक जकाँ नजैर देलैन अछि। वास्तवमे नीक जकाँ जखन कखनो कोनो विषयपर देखै छी तँ बहुत रास चीज देखबामे अबिते अछि। मुदा स्वत: ऐ विषयपर सोचए सेहो पड़ैए जे किए

देखै छी। बात कथाकारक अछि कथाकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी किए देखै छैथ ओ हमरा-अहाँकेँ बुझल अछि। खाएर ऐठाम हम बात कऽ रहल रही, डंकाक। सुशीलकेँ कौलेज गेला पछाइत पहिल घण्टीसँ लऽ चारिमो घण्टी फोंक भऽ गेल। चारिमो घण्टी फोंक भेला कारणेँ सुशीलक मन अघोर भऽ जाइ छैन। एक दिस घर...।

तहिना वसन्ती सेहो आजुक शिक्षण बेवस्थाक स्थिति देख चिन्तनमे पड़ल अछि। मनमे संकल्प एकटा उठै छै जे ऐ धरतीपर किछु करबाक लेल संगीक जरूरत अछि। जेकर पूर्ति सुशील आ वसन्ती- दुनू गोरे हाथ-मे-हाथ मिला संग-संग जीवन जीवाक वचन एक-दोसराकेँ दैत ऐ बेवस्थाकेँ बदलैक संकल्प लऽ लैत अछि।

कथाकार ऐ कथाक माध्यमे ई कहए चाहै छैथ जे समाजक जे ई ढहैत बेवस्था अछि तइमे सुशील आ वसन्ती सन ठोस आ संकल्पित व्यक्तित्वक खगता छै। जे समाज आ ओकर बेवस्थाकेँ बदैल सकैए आ तइले युवा वर्गकेँ आगाँ आबए पड़तैन। कियो ई जे सोचै छी जे सभटा सरकारे करत ई सोचब नेनमैत रहियेँ जाएत।

'ठकहरबा' कथामे सभ एक-दोसराकेँ ठकिते अछि। हमरा लोकैन पन्द्रह अगस्तकेँ स्वतंत्रता दिवसक रूपमे मनबैत छी मुदा झूट्ठे। 'प्रजातंत्र' आ 'लोकतंत्र'क ई दूटा शब्द वर्तमानमे मजाक बनि गेल अछि। रक्षके भक्षक बनि गेला हेन। ओ सफेदपोश बाजत किछु आ करत किछु। ई सभटा राजनीतिक खेल बुझू बनि गेल। ओ लोकैन खादी पहीरि गाँधीजीकेँ अपमानिते करता आर हुनकासँ आशे राखब अनुचित। ओना, कहब जे देश कोनो हमर नहि, जे आशा नहि करी, अपन अधिकार नै बुझी। ऐठाम हमर मतलब अधिकारसँ नहि, कर्तव्यसँ अछि।

दुखक विषय ई जे हुनका सभकेँ झूठो बजैमे लाजो कहाँ होइ छैन। ऐ तरहेँ ई कथा पूर्णत: वर्तमान राजनीतिक प्रदूषणसँ भरल अछि। मुदा प्रदूषित वस्तु जइ नजरिये लोक देखौत ऐठाम कथाकार लोक

कल्याणकारी नजैरसँ देखैत कथा वृत्ति-चित्र बनौलैन अछि। वास्तवमे साहित्यक कथा साहित्यक महत्वपूर्ण तत्त्व- उद्देश्य'क जँ चर्च करी तँ से हिनका साहित्यमे तेना भरल अछि जे पसारलापर रिक्त स्थानक पूर्ति भऽ सकैत अछि।

'अतहतह' कथा मिथिलाक माटि-पानिक बिआह-दानक प्रथापर आधारित कथा अछि। जइमे बरियाती द्वारा घरवारीकेँ देखार-चिन्हार करए-बला आ घरवारी द्वारा बरियातीकेँ मुता-मुता भरैबला कथा अछि। जे अदौकालमे होइ छल मुदा ओ दुनू पक्षक लेल उचित नहि। कथाकारक अनुसारे, "बिआह श्रृष्टिक श्रृजनक प्रक्रियाक अंग छी तँए ऐ संग छेड़-छाड़ करब अनुचित...।"

'अर्द्धांगिनी' जे ऐ कथा संग्रहक केन्द्रिय कथा अछि। जइमे एकटा अवकाश प्राप्त शिक्षकक अत्यन्त सूक्ष्म मनो विश्लेषण कएल अछि। जे आजन्म अपना पत्नीकेँ अर्द्धांगिनी नहि बुझि जीवन प्रयत्न दासी मात्र बुझैत रहला। मुदा कहबी छै- बुझिहक मियाँ धुनियाँ बेरिया..। आ सएह परि भेबो केलैन। सेवा निवृत्त भेलाक पछाइत पढ़ुआ काकाकेँ बुझना गेलैन जे पति-पत्नीक, पुरुष, नारी आ स्वामीक बीच केहेन सम्बन्ध हेबक चाही जेकर एहसास पढ़ुआ काकाकेँ जीवनक अन्तिम पड़ावपर आबि होइ छैन।

'ऑपरेशन' एकटा खूब चिक्कन कथा अछि। जइमे एकटा टुगर नेनाक चित्रण आ ओकर समाजिक विश्लेषणसँ पूर्ण अछि। हमहीं आ हमर समाज ओकरा कोन नजैरसँ देखै छिऐ तेकर दोहरी अर्थ। जइ मइटुग्गर अवस्थामे हमर समाज ओकरा कोन रूपमे देखैत अछि। आर जखन कि ओकर लालन-पालन ओकर भरण-पोषणक लेल स्थानापन माए केर बेवस्था कएल गेल छइ। तखन हमर समाज ओकरा कोन नजैरसँ देखै छइ। तकर चित्रण कएल गेल अछि। जे हमर समाजिक निम्न स्तरीय सोचसँ पूर्णत: ग्रसित अछि। प्रस्तुत कथापर कथाकार ईजोत ई

दिअ चाहलैन जे ऐ तरहक ऑपरेशन वर्तमान परिदृश्यमे केतेक सार्थक भेल अछि।

कथा संग्रह ऐगला कथा ‘धर्मनाथ’। एकटा कहबी छै जे लब घर उठए आ पुरान घर खसए..। जे ढहैत जमीन्दारक कथा छी। जइमे मिथ्या कुलाभिमानक रक्षार्थ धर्मनाथक पिता मृत्युकेँ प्राप्त करै छैथ। वस्तुत: दहेज लेब आ देब, अपना ओकातिक मोताबिक उचित अन्यथा जँ समाजिक प्रतिष्ठाकेँ मापदण्ड बनौबै तँ किनको पतन निश्तुकी। जँ आइ हेरए केर काज नहि सौंसे सोझहामे अछि। हमरा बुझने अवसाद सेहो एकरे लक्षण थिक। कहब अहाँ डाक्टरी बात केना कहलौं। एते जरूर विचार कइये सकै छी जे ‘अवसाद’ डिजऑडर छी, बेमारी नहि। आ डिजऑडर न्योरोट्रास्मिटरसँ रिलेटेड होइ छै जे वैचारिकतासँ सम्बन्ध रखैत अछि। अखन एतबए...।

संग्रहक ऐगला कथा- ‘सरोजनी’ आ ‘सुभद्रा’ अछि। ई दुनू कथा प्रेमपर आधारित अछि। जइमे सरोजनीक प्रेम विवाह आ सुभद्रा विधबा विवाहक समस्यापर अधारित अछि। सरोजनी कथामे बपटुग्गर- घुरनक बेटा- रमेशक संग सरोजनी गामक एक्के स्कूलमे पढ़ि-लिखि मैट्रिक पास कऽ धन आ जातिक अन्तरकेँ समाप्त करैत एकटा ठोस निर्णय लैत सरस्वतीक फोटोमे टाँगल फूलक माला उतारि समेशक गरदैनमे पहिरा उत्तम कृत्त स्थापित केलक। जे वास्तवमे जाति-प्रथा आ अमीरी-गरीबीक अन्तरकेँ समाप्त कऽ समाजक बीच एकटा आदर्श स्थापित करबामे मिलक पत्थर साबित होइत अछि। तहिना सुभद्रा जे विधवा विवाहपर अछि। विधबा विवाहक समापन भरल समाजक बीच रूपलाल बाबा सुशील आ सुभद्राक एक-दोसरकेँ माला पहिरा सम्पन्न केलैन। जे ई सन्देश दइए जे विधबा हमरे समाजक अंग छी। आ ओकरो जीबैक अधिकार ऐ समाजमे छइ। नहि तँ गोइठाक आगि जकाँ सुभद्रा जीवन प्रयन्त पजरैत आ जरिते रहि जइतए। ❑

गावय मिथिला लोक प्रगीत द्वारा
प्रीतम कुमार 'निषाद'

मिथिलांचलक गाम मुरहदीक (बड़की टोलक) बाबूबरही मधुबनीक माटि परहक केसर सन रत्न प्रीतम कुमार निषादजी, अपनेकेँ पाबि मिथिला आ मैथिली दुनू धन्य हेती, एहेन सन हमर विश्वास अछि। वृते अपने व्यारव्याता विषय हिन्दीसँ एम.ए. मुदा मातृभाषा मैथिलीसँ तेतबे सिनेह, जेकर ज्वलन्त उदाहरणक रूपमे अपनेक ई पोथी 'गावय मिथिला लोक प्रगीत' काव्य रचना अछि। प्रस्तुत पोथीमे अपनेक रचित 49 गोट काव्य स्थान पौलक अछि।

ओना तँ माला एक्केरंगक फूलक बनौल जाइत अछि मुदा अपने रंग-बिरंगक कविता रूपी फूल लोढ़ि माला बना मैथिली साहित्यकेँ समर्पित केलौं अछि, अपनेकेँ धन्यवाद आ साधुवाद।

शुभारम्भ गणपति वन्दना, सरस्वती वन्दना, मिथिला वन्दना आदिसँ सजेलौं अछि। तेतबे नहि, माइक दूधक कर्ज सेहो नहि बिसरलौं। एक कात शिवजीक जटासँ गंगा निकलल तँ दोसर दिस सीता अर्चना लऽ उपस्थिति छी। जँ दिवसास्तार्चना लिखलौं तँ सांध्यार्चना आ निशार्चना लिख कृत केलौं।

जँ सरस वसन्तमे 'वौरए वसन्त कन्त करय बलजोरी' तँ ऋतुराजक मस्त पवन फागुन मासक रंग होलीक हुरदंग मचौलौं तँ विद्योपतिकेँ नै बिसैर मैथिलीक प्रति श्रद्धा जतौलौं। अद्भुत संगम, अद्भुत छटाक संग अति सुन्दर प्रस्तुति, मनकेँ मनोरम लागल।

'ईर घाट', 'वीर घाट'सँ लऽ खगता बेगरता रूपे सभकेँ कलुसित

आत्माक लेल सुख-शान्ति हमरेटा नहि, सबहक बेगरता देखा आध्यात्मिक दर्शन सेहो करौलौं। धन्य छी अपने आ धन्य अछि अपनेक लेखन।

एककात जँ 'सुत्थर समाज'क कल्पना अपने करै छी तँ 'नीक-बेजाए' लिखब सेहो नहि बिसरलौं! तँ 'हम के? और की आ की भेलहुँ' तँ जवाब अछि हम दुर्गानन्द मण्डल वृत्ते शिक्षक व्यवसाय अध्ययन आ अध्यापन, और की? अपने सन रत्न पाबि धन्य भऽ गेलौं।

अपने तँ बुझू जे गुदरीक लाल, माता स्व. रेशमा देवी, पिता स्व. सिंधेश्वर मुखियाक पुत्ररत्न- प्रीतम कुमार 'निषाद' कवि आ पत्रकार भऽ समाजमे ईजोत बाड़ि रहल छी। जइमे आन्हर मैथिल सभकेँ किछु सुझि जाइन। जे मैथिली केकरो नीजी सम्पैत नहि, अपितु ओ सबहक छी।

जनप्रतिनिधिक लेल अपनेक ई पाँति-

'जनप्रतिनिधि भऽ अद्भुत लीला

बलात्कार कए नाम करय

मीडियाकर्मी कलम दूतकेँ

गरियाबैत बदनाम करय... ।'

लिखि जेहने मुँह तेहने चमेटा मारऽ मे सफल भेलौं अछि।

ऐ तरहेँ प्रस्तुत काव्य संग्रहमे 'बुझबाक चाही'सँ लऽ 'हँसनी-खेलनी', 'ओ के छथिन', 'बाढ़ि', 'भुकम्प' आ 'विकासक दम्भ' जँ लिखलौं तँ 'हम नारी छी' आ 'अमर शहीद'केँ श्रद्धांजली देब सेहो नहि बिसरलौं।

वाह! अतिसुन्दर संगम..!!

एककात 'सार-बहनोई' तँ 'यश-अपयश' लिख चेतौलौं। तहिना 'कलयुगक भक्ति' आ 'भक्तिक ढोंग' मात्र नहि, 'कलम कुहरनी' लिखब

सेहो नहि छोड़लौं।

सार रूपमे ई काव्य रचना काव्य आ गीतक रूपमे अपनेक अनमोल कृत पाबि हम अपनाकेँ रोकि नइ पौलौं आ कुहरिते कलमसँ जे लिखलौं, कम्मे हएत। ओना, अपने सन सम्यक रचनाकार पाबि मैथिली जरूर धन्य हेती।

सादर...। ❑

श्रुति प्रकाशन दिल्लीसँ प्रकाशित झारूकाव्य मैथिलीक लेल एकटा सम्पूर्ण चुनौती 100-मे-100 प्रतिशत सत्य, झूठ-फरेब केत्तौ नहि-

‘हमरा बिनु जगत सुन्ना छै’

प्रस्तुत काव्य संग्रहमे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’जी झारूसँ झाड़ि, खरड़ासँ खड़ैर, बाढ़ैनसँ बहारि साफ-सुथरा साहित्य आ समाजक रचनाक लेल सतत् प्रयत्नशील बुझना जाइ छैथ। आ बुझियेटा नहि पड़ै छैथ असलमे जँ बेवहारिक जिनगीकेँ देखल जाए तँ निश्चित रूपे मैथिली साहित्य मध्य यात्रीजीक बाद मात्र एक-आध गोटक श्रेणीमे झारूदारजी हमरा नजैरपर चढ़ि रहल छैथ।

हमरा समाजक बीच समस्या कोनो होइ, कारण भलेँ कोनो होइ ओकर निदान हेतै केना से झारूदारजी अपना झारूसँ झाड़ि निदान देखेलैन अछि। साहित्य लेल ई नीक संकेत भेट रहल अछि। किएक तँ आइक समस्या आइयक सभसँ पैघ कार्य भेल- गीतानुसार, मुदा हमरा सबहक लेल (मिथिला-मैथिलीक लेल) ई सभसँ पैघ विषय आइयो बनल अछिए..!

कमला आ कोसीसँ अभिशप्त गाम –रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौलक निवासी, वृत्तिये कृषक छैथ। खेती-पथारीमे कोनो जमीन्दारियो नहि, दस-बीस बिगहा जत्थो-पात नहि, समान्य जीवन गुजर-बसर करैबला- अल्हुआ, सुथनी, मकइ-जनेर उपजा बाल-बच्चाकेँ पोसएबला मटर-पनीर नहि, राई, तोरी आ सेरसोंक संग बथुआ, गेनहारी, पोरो आ तिलकोरक साग-पात खा जीऐबला, गाड़ी-

घोड़ापर नहि अपितु माल-महींसपर चढ़ैबला। मालक थैर आ महींसक पीठेपर एहेन-एहेन रचना रचि मैथिली साहित्यकेँ एकटा नवका मान दिया समाज, शासन, प्रशासन तथा राजनीतिसँ लऽ कूटनीति धरि अपन गीत-कवितक रूपमे एकटा नव विधाक संग पुर्णिमाक चान सन उदयमान भेला। जिनका 'विदेह'क सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरजी एकटा नव उपाधि देबएमे अपनाकेँ नहि रोकि सकला। ओ ई जे मैथिलीक भिखारी ठाकुर- श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' कहै छैथ- हमरा बिनु जगत सुन्ना छै।

सत्ते, हमहूँ झारू नामक काव्य विधा नइ तँ पढ़नहि रही आ ने सुननहि रही। वास्तवमे झारूदारजी 'झारू'नामक काव्य रचना दैत एकटा नव विधाक अविष्कारक मानल जेता। जेतए कि कोनो रचना ओ मात्र मालक थैर खड़ैत महींस दुहैत वा चरबैत केने हेता। महींसक सिंग आ पीठ एकर गबाह हएत।

सम्पूर्ण काव्य रचनाक कोनो पन्ना अपने उनटा लिअ, देखू केना झारूसँ झारूदारजी ओकरा साफ कऽ ऐना जकाँ चमकौआ बनबैमे सफल भेला।

हिनक जीवनक उद्देश्यक सम्बन्धमे-

'हे जगत-के पालक सृजक
हे दुनिआँ के संघारी
अहाँसँ हमर एतबे प्राथर्ना
हम बनी सत् व्रत धारी।'

अपन देशक सम्बन्धमे-

'पसरल एतएसँ ज्ञान जगतमे
छै परगट भगवान भगतमे

हर नारी एतऽ पार्वती छै
हर हर एतए महेश
अपन देश।'

पर्यावरणक सम्बन्धमे-

'पेड़-पौधा छी जीवन रक्षक
अहींक भीतर सबहक प्राण
कार्वो-प्रोटीन-वसा विटामीन
भरलनि और खनीज भगवान..।'

आबए-बला पीढ़ीक लेल चेतावनी रूपे-

'बच्चा बनते बिलकुल ओहने
जे रखने छी अहाँ उसारि
ऐपर केकरो बस नै चलै छै
देखबै प्रकृति आँखि पसारि...।'

बेटी पढ़ाउ-बेटी बँचाउ केर सम्बन्धमे-

'बेटा-बेटी सम बरबरि
एकर राखु पूरा धियान
जौं बेटीकेँ शिक्षा देबै
काटि बैसत बेटाकेँ कान...।'

मौद्रिक युगमे-

'पैसामे छै भूख अजुबा
भरल ने ऐसँ केकरो पेट
राजा भूखल जनता भूखल
भूखल अछि साधु और सेठ...।'

समाजक कल्याण हेतु-

'दीप जराबू प्रेमक बाती
भरि कऽ तइमे सिनेहक तेल
फुटै आभा सुख-शान्ति केर
जन-जनमे होइ सम्मत मेल.. ।'

अन्तमे झारूदारजी कहि रहला अछि-

'कऽ रहलौं वन्दना सभकेँ
हम अज्ञानी नीच नादान
करि क्षमा सभ भूल-चूककेँ
सभ मिलि दीअ अभय केर दान।'

वाह..!

ऐ तरहेँ झारूदारजी झारू विधाक रचना कऽ प्रस्तुत काव्य संग्रहक माध्यमसँ अज्ञान रूपी जे बहुत रास समस्या सभ अपन मैथिल समाजक बीच निच्चासँ छाड़ने अछि तेकरा साफ करबामे लागल छैथ। हमरा बुझने एक आवश्यक कार्यमे लागल छैथ। माने विषय-वस्तुकेँ पकड़ैक जे कलाकारी झारूदारजीमे छैन ओ आधुनिक प्रगतिशील साहित्यकारक श्रेणीमे हिनका स्थापित करै छैन। ❑

गामक सुख (काव्य संग्रह)

सम्बन्धित काव्य संग्रहक मादे हम दू आखर कहए चाहब जे ‘सगर राति दीप जरय’ कथा गोष्ठीक ई फलाफल रहल जे आजुक जे गद्यकार आ पद्यकार देखबामे अबै छैथ ओ या तँ अल्हुआ वा अल्लूसन भोज्य पदार्थ जे माटिक तरमे झाँपल छल ओकरा उचित समयपर उखारि घर-आँगन, खर-खरिहाँनक शोभा बढ़ा कृषक हेबाक गौरव देलक, ठीक तहिना विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति सभ ‘सगर राति दीप जरय’ कथा गोष्ठीक बिना झाँपल छला ओ समय पाबि अपन-अपन विद्वताक बलपर मैथिली साहित्याकाशमे चान सन चमकला। ओकरे एकटा कड़ीमे वहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार श्री राम विलास साहुजी छैथ।

अपने जहियासँ मैथिली साहित्य गोष्ठी वा काव्य/कथा गोष्ठीमे जुड़लौं मैथिली आ मैथिल धन्य भेला। ओ ऐ मानेमे- जँ मंशा-वाचा-कर्मनाक अधार बना साहित्यकार-रचनाकारक जिनगीकेँ देख बाजी।

अपनेक सतत् प्रयासक फलाफल ई पाँचम पोथी छी। वृत्तिसँ अपने अपन जिनगीक चौदह बर्ख धरि अपनहि मात्र नहि अपितु समाजक नेना-भुटकाकेँ अनमोल ज्ञानसँ ज्ञानी आ ज्ञानभारती सन पब्लिक स्कूल खोलि ज्ञानक इजोत पसारैत रहलौं। जइसँ अहाँक गाम-घर, सर-समाज आइ ऋृणी छैथ। आबए-बला समयमे अपनेकेँ कियो बिसैर नहि सकता, ई हमर अपन आत्मविश्वास अछि।

प्रस्तुत काव्य संग्रहमे समाजिक परिवेशक संग आर्थिक, मानसिक,

रीति, कुरीति, प्रथा, कुप्रथासँ लऽ राजनीति, कूटनीति, बेटी बँचाउ, बेटी पढ़ाउ, नारी विमर्श, दहेज प्रथा, पलायन, कृषक लोकनिक मजबुरी, दुर्दशाक संग आतंकवाद, कट्टरपंथ इत्यादि विषय सभपर अपन नजैर दऽ अपना लेखनीमे अपन भाव व्यक्त केलौं अछि। निश्चित रूपे हाँ-हाँ-हीं-हीं आ ओह-आह इत्यादि बहुजन सुखयसँ लिप्त विषयक रचनासँ ऊपर उठि सर्वजन हितायक समावेश करैत आधुनिक तथा आइयक आवश्यकताकेँ अपने अपन रचनाक विषय बनौलौं अछि।

साहित्य प्रेमी वा उपन्यासक पाठक होइथ वा काव्य प्रेमी किएक ने होइथ- कियो बेकती अपनेक रचना पढ़ि आनन्दित हेता। नहि जानि अपने केतेक जतनसँ आ केतेक दिनक अथक परिश्रमक बाद 'गामक सुख' मैथिलीक बीच रखलौं अछि।

निश्तुकी राम विलास साहुजी अपन रचनामे गाम-घरक छोट-सँ-छोट आ पैघ-सँ-पैघ समस्याकेँ समाजिक पटलपर आनि पाठककेँ सोचैक लेल विवश केलैन।

वाह! केहेन विलक्षण अछि काव्य संग्रह- गामक सुख।

'शिवजीक नचारी', 'मनक मैल', 'बेटी', 'जीविते मरै छी', 'कोसीक कहर', 'भिखमंगनी', 'केकरापर करब श्रृगार', 'हरबाहक जिनगी' इत्यादि लिखलौं तँ 'चलल परदेशिया अपन गाम', 'मिथिला महान', 'पेटक सबाल', 'मायाजाल', 'फगुआक रंगमे चैत नहाइ', 'नजरिक बान्ह', 'कहितो लाज लगैए' लिखैत लजाइ छी। एतबे नहि, 'शहीदक इच्छा', 'अमर शहीद', 'दिलक दर्द', 'फूलक लचारी', 'हम छी नारी', 'अपराधक उपराग' सेहो देलैन आ कहलैन- 'केते कानब?'

कोनो दू मत् नहि, विभिन्न काव्यक विलक्षण रचनाक समागम 'गामक सुख'मे भेल अछि। मुदा हम कहब- 'जीविते नहि मरू' गीत गाऊ आ गीत लिखू-

‘आम मजरलै हे सखी
कोइलिया कुहकै हे
सौंसे बगिया महुआ पसरल
गमगम गमकै हे।’

श्री राम विलास साहुजीकेँ धन्यवाद। अपनेक जीवन रूपी वगिया ऐ रचना सभसँ अहिना गमकैत रहत। अखन एतबे..। ❑

हमर टोल उपन्यास

श्री राजदेव मण्डलजीक लिखल एक अनमोल कृति 'हमर टोल' उपन्यासक सार्थकता ई जे रूचि तेहेन खुजत माने तेना कऽ खुजत जे एक्के साँसमे पढ़ि लेब। बिनु पढ़ने नहि छोड़ि सकब, भलेहीं आगूमे राखल खाएक किए ने सरा जाए।

श्रुति प्रकाशन- दिल्लीसँ प्रकाशित ई उपन्यास श्री उमेश मण्डलजीक हाथसँ हमरा भेटल। पढ़लौं। पढ़लाक बाद दू आखर लिखऽसँ अपनाकेँ नहि रोकि सकलौं। रोकबो केना करितौं। एक तँ मैथिली साहित्यमे ऐ विधाक सर्वथा अभावे सन रहल, हेरलौसँ नहि भेटत उपन्यास। तेतए उपन्यासकार मण्डलजीक द्वारा लिखल ई उपन्यासमे, तारतम्य एतेक जे उपन्यासमे देखौल गेल समस्या अन्धविश्वास, गरीबी, पनचैती, लुचपनी, बरियातीक मान सनोमान, समाजिक समरसता इत्यादिक जीवन्त लेखन/उदाहरण।

राजदेव मण्डलक 'हमर टोल' उपन्यास जाति-विशेष, समाजिक-सांस्कृतिक, जीवनक स्थिति-परिस्थिति, विधि-विधान, देवाइ-गोहाइर आदिपर आधारित अछि। प्रस्तुत उपन्यासमे अजय सन नायक किछु करए चाहैए मुदा लोक सभ ओकरा अधला छोड़ि नीक नहि कहै छइ। शुद्ध करि कऽ गमैया भाषा, शुद्ध मैथिली जनभाषामे प्रस्तुत गीतनाद, लोकोक्ति आदिसँ ससरपूर्ण अछि।

आइयो मुर्खाहा समाजमे कोखिया गोहाइर केना कएल जाइ छै, भगत द्वारा ओरक शोषण कोन तरहें होइ छै से रामखेलावन भगतकेँ अपन उपन्यासक पात्र बना ओकर जीवनक जीवन्त चित्रण करैत अपन उपन्यासक लेखन केलैन अछि।

प्राय: जाति-विशेषक जे कोनो समाज छै ओकर मान-मर्यादा, रीति-रेबाज जे कोनो छै से अपने-आपमे अपूर्ण नहि।

बात-विषय कोनो किए ने होइ, अपराध आ पाप केहनो किए ने होइ, जातिक भोज दऽ ऐसँ त्राण भेट जाएत.., अन्यथा जातिसँ बाड़ल जाएब इत्यादि सभपर राजदेव मण्डलजी खूब नीक जकाँ अपन लेखनी चलौलैन अछि। हमरा जनतबे राजदेवजी सेहो नीक विषय सभकेँ पकैड़ उद्देश्यपूर्ण उपन्यासक रचना केलैन अछि। हमरा सभ लेल सोचनीय विषय तँ अछिए जे एक दिस हवाइ जहाज उड़ि रहल अछि तँ दोसर दिस कटही गाड़ी सेहो चलिते अछि। तखन तँ जेम्हर ताकी, जे लिखि। मुदा राजदेवजी आदरणीय साहित्यकार छैथ किएक तँ साहित्यक माने सबहक हित बुझि कल्याणकारी डेग उठा ओहन-ओहन बेकती सभकेँ देख रहल छैथ जेकरा दिस बहुत कम लोक तकै छैथ।

दोसर दिस साहित्य श्रृजनमे खाली जातिये-विशेषक श्रेय छै जे ओ छैथ तँए मैथिली, ओइ मैथिलक लेल आदर्श लेखकक रूपमे श्री राजदेव मण्डलजी छैथ। अपने, 100-मे-100 प्रतिशत रहलौं अछि। बुझना एहेन सन जाइए जे पिजरामे बन्द मैथिली अपने सन लेखककेँ पाबि जेना उन्मुक्त गगणमे विचरण करए लगली अछि।

संगे, धानुको समाज ई बुझौ जे केलासँ की नहि सम्भव छइ। अपने तँ कोइलामे दाबल हीरा छी हीरा। मुदा ई कहब ठीके सत् अछि जे जहिना डकरा हाल पाबि कोनो बीआ अंकुरि जाइए तहिना अपने समय पाबि हमरा सबहक सोझाँ एलौं। विश्वास अछि, ऐ माटिपर अपने सन लेखक उभैर सामने औता तँ निश्तुकी मैथिली साहित्यक संग मैथिल

धानुकक मान-सम्मान बढ़बेटा करत आ धानुक समाजक प्रति सबहक दृष्टिकोण सेहो बदलत। एते दिन धरि नइ जानि सकल छेलौं जे अपने सन अनमोल रचनाकार आखिर कोन कोयला खदानमे दबाएल रही।

धन्य छी अपने, हमरा सबहक मैथिली, आ हम मैथिल दुर्गानन्द मण्डल। ❑

वर्तमान पीढ़ीक निर्देशिका अंकुर

'अंकुर' एकटा कथा संग्रह छी जइमे लघु आ बीहैन दुनू तरहक कथाक समावेस कएल गेल अछि। पोथीक लेखक श्री राम विलास साहु छिआ। साहुजी अपन जीविकोर्पाजन हेतु कृषि कार्जमे दक्ष तँ रहबे केला संगे अध्यापन कार्यमे सेहो बहुत सुन्दर पहचान बनौलैन। तैसंग साहित्य सेवामे सेहो हिनक चर्च नै करब अनुचित। ऐसँ पूर्व श्री साहुजीक 'गामक सुख' काव्य संग्रह पढ़ने रही। बुझना गेल हिनक छबि मैथिली साहित्यमे कविक रूपमे सेहो छैन। मुदा 'अंकुर' कथा संग्रहमे विभिन्न कथाकेँ परैस एक प्रशस्त कथाकारक रूपमे सेहो अपन छबि स्थापित केला अछि। ऐ लेल साहुजीक प्रति साधुवाद।

प्रस्तुत पोथीमे कुल मिला कऽ दू दर्जनमे दूटा छोड़ि बाइस गोट कथाकेँ नीक जकाँ सजौलैन अछि।

पोथीमे समाजक बीच व्याप्त अनछुअल विषयरूपी समस्या सभपर लेखनी चलौलैन अछि। यथा- छुआ-छूत, जाति-पाति, अन्धविश्वास, कुशासन, रक्षक-भक्षक, घूस-पेँच, गिरैत शिक्षाक स्तर, शिक्षाक महत्व, सरकारी तंत्रमे व्याप्त भ्रष्टाचार इत्यादि...।

वास्तवमे ई अन्धविश्वास आ कुव्यवस्था, समाजिक रूढ़ तथा अप्रगतिशील रीति-रीवाज समाजकेँ केना समाढ़ जकाँ गरसने अछि तइ विषय सभपर कथाकार अपन लेखनीक ऊर्जा खर्च केलैन अछि। हमरा जनतबे सुन्दर जगह अपन ऊर्जाक व्यय भेल छैन। किएक तँ कोनो

साहित्यक विकास हेतु माइने रखैत अछि आइक नीक-बेजा औझुका परिपेक्ष्यमे आबए। जेकर उगरासक भार कथाकार नव युवा पीढ़ीकेँ देलैन अछि।

जेना कि जीविते डोमसँ छूबल जाएब, मुदा हुनका द्वारा बनौल चीज-वौस लऽ पाबैन-तिहार करब..! एतबे नहि, हुनका (डोम) द्वारा आगि कीनि मुखाग्नि देब..! कहू तँ.., केतेक उचित, केतेक अनुचित? जखन कि एकैसम सदीक आब तेसर दसकमे प्रवेश कए रहल छी।

तहिना स्कूलक खिचड़ीक बीच कथाकार सरकारी कार्यक्रम सभपर सेहो ध्यानाकृष्ट करबैत स्कूलक प्रतिष्ठा ऐ तरहेँ बँचौलैन जे सरकारी स्कूलमे पढ़ए बला बच्चा कम-सँ-कम पढ़ि पलायन नहि कऽ गामेमे रहै छैथ। तहिना घूस दऽ घर बनाएब तँ घूसहा घर हेतै किने। बुधनी बुढ़िया आ कोनचरमे ठाढ़ रधिया मसोमातक उक्ति :

“तखन ओकरा इन्दिरा अवास किए कहबै। घूसहा घर ने कहियौ।”

वर्तमान समैयक परिपेक्ष्यमे पंचायती राज्य व्यवस्थामे जे भूर अछि ओकरा के मुनत। ई प्रश्न ठाढ़ करबामे कथाकार पूर्णत: सक्षम बुझना जाइ छैथ। ‘गंगा नहाएब’, आ ‘शिक्षाक महत’ आँखि खोलए-बला कथा अछि। जँ शिक्षा रहत तँ अन्धविश्वासक गुजर नहि भऽ सकत। ओना ई अलग बात भेल जे समाज पुरने परिपाटीपर चलैत आबि रहल अछि। ‘अबिसवास’ कथा जे दहेजपर आधारित अछि जइमे चित्रा सन बेटीक खगता सभ घरमे बुझना जाइत अछि। जे दहेज रूपी दुल्हाक पितासँ झण्डा गड़ौलैन।

‘जातिक भोज’ आ ‘जाति’ वाह! बेजोड़ कथा अछि। आखिर जाति जातिये लेल मरै छै, ओ चाहे नेता हुअए वा जोंक। दुनू एक-दोसराकेँ खूने चुसेक पाछू लागल रहैए। विकास जीरोबट्टाजीरो! चाहे

अहाँकेँ ई बात नीक लगए वा बेजाए।

'बुजुर्गक दुख के हेरत' ई हृदय स्पर्शी कथा अछि। आबएबला समयमे केते चेतबाक खगता अछि से कथामे स्पष्ट भेल अछि। वास्तवमे मोहन कक्काक हाल-चाल पुछनिहार जेतए कियो ने तेतए मुनर नामक व्यक्तिकेँ उदाहरण दऽ कथाकार पलायन रोकए चाहलैन अछि। जे अन्तिम समयमे मुँहमे आगि बेटेटा देत आ बेटा जन्मौला साफल हएत। अन्यथा बेटाक आशमे देह बदैल लहाससँ दुर्गन्ध उठब सोभाविक, जइसँ समाजो प्रदूषित हेबेटा करत।

'बिलाइक रस्ता काटब' आ 'छुतहर' दुनू समाजिक रूढ़िवादितापर आधारित कथा अछि। जे अनिर्णित रहि गेल। एकर फरिछौठ नइ भऽ सकल जे आखिर उचित की..? कथा केतेक उचित जे एकटा प्रश्नवाचक चिन्ह छोड़ने अछि जेकर जवाब अछि बिल्कुल उचित। किएक तँ अखन जे दोगा-दोगी देखबामे अबैए, नाम लेल तँ बेटा-पुतोहु अछि मुदा...। से नहि अछि।

ऐ तरहेँ ई कथा संग्रह वर्तमान पीढ़ीक लेल निर्देशिका साबित होइत अछि। ऐमे केतौ कोनो किन्तु-परन्तु नहि। ❑

सोन्हगर

आधुनिक कथाकारक उच्चतम् श्रेणीक कथाकार श्री नन्द विलास रायजीक सम्बन्धमे 'विदेह'क सह सम्पादक लिखै छैथ जे ग्रामीण रचनाकार अपन पात्रक संगे-संग जीवन जीबै छैथ, संगे-संग संघर्ष करै छैथ, संघर्षक महत्वकेँ बेवहारिक तौरपर बुझै छैथ और तँए ओ 'सम्बन्ध-बन्ध'क खियाल करै छैथ, सदैव सम्बन्ध बना कऽ रहए चाहै छैथ। ई मिथिलाक संस्कार छी। मिथिला अपन कोखिसँ सदैव एहेन विचारकेँ जन्मल अपन पूत मानैत रहल अछि। ऐठाम लोक सम्बन्धकेँ बहुत महत् दैत अछि। 'अपनेटा नीक'केँ कहियो नीक नहि कहैक इतिहास रहल अछि मिथिलामे। हँ! 'अपनो नीक' एहेन धारणा तँ अछिए। अही धारणाक अनुशरणमे मिथिलाक प्रसिद्ध रचनाकार डॉ. शिव कुमार प्रसाद एक उदाहरणक संग आइ मिथिलामे ठाढ़ छैथ। कहब जे एहेन पहिल अनुवादक शिवकुमारे बाबू भेला सेहो बात तँ नहि? ठीक! मुदा ई बुझि-सुझि कऽ कहबाक चाही जे मैथिली साहित्यक अनुवाद विधामे कएल अधिकतम काजक इतिहास की अछि। सभ जनै छैथ जे पारिश्रमिक एवम् पुरस्कारक लेल कएल गेल अनुदित पोथी मैथिली साहित्यमे बेसी अछि। प्राय: अनुवाद एसाइनमेन्ट लेल कएल गेल अछि। कहब जे शिवकुमारो बाबू भऽ सकैए ओही लेल लिखने नइ हेता तेकर कोन गारंटी? हँ, एकर दूटा गारंटी अछि। पहिल तँ ई जे नव मिडियाक सहारे बनल सम्बन्धक बीच मूल पोथीसँ अनुवाद करक लेल मैथिलीमे

शिवकुमार बाबू स्वयं हृदयसँ तैयार भेला। आ 'पिघलते हिमखंड' केँ 'पघलैत हिमखंड'क रूपमे सम्पूर्ण पोथीकेँ इच्छानुसार मनसँ अनुवाद केलैन अछि। आ दोसर गारंटी ई अछि जे डॉ. शिव कुमार प्रसाद सर्वहारा मंचपर बैसैबला गैर सर्वण रचनाकार सेहो छथिए। तहन हिनका सभपर, माने गैर योजनावद्ध ढंगसँ साहित्य अकादेमीकेँ संग देनिहार रचनाकार सभपर–भला 'पुरस्कारक लोभ' लिखब उचित नहि बुझै छी। डॉ. शिव कुमार प्रसाद 'सगर राति दीप जरय'सन मंच परहक वक्ता छैथ। जे मंच मिथिलिये नहि, समस्त भारतीय भाषा साहित्यमे असगरे अछि। ई बात हमरो बुझल अछि जे ऐ मंचक कल्पना पंजाबक एक मंचसँ कएल गेल अछि। मुदा हमर सबहक जे देह-हाथ अछि, खास कऽ नव मिडियाक बाद, ओइ रूपमे तँ आरो असगर पड़िए गेल अछि।

मैथिली साहित्य गीत-कविता, काव्य आदिक लेल एकटा नव सुर्यक रचना 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' रचनाकार डॉ. शिव कुमार प्रसाद आजुक समयमे आजुक पीढ़ीक लेल बड़ सोन्हगर लागल, आ पाठकोकेँ लगतैन। ई हमर आत्म विश्वास अछि। जइमे कविवर डॉ. प्रसाद अपन लेखनीसँ अनेकानेक, सभ तरहक रचना दऽ पाठक-प्रेमीक बीच अछप स्थान बनौलैन।

ओना, वृततिये डॉ. प्रसार हिन्दी साहित्यक विद्वान छैथ आ हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मलीमे हिन्दी विभागमे एसोसियेट प्रो. एवम् अध्यक्षपदपर सुशोभित। जइसँ आजुक पीढ़ीकेँ अपन ज्ञान दान दऽ समाज आ राष्ट्रक सेवा सेहो दऽ रहला हेन। सेवा मात्र नहि, अपितु अखन वर्तमान पीढ़ी जे शिक्षकक नामपर बौड़ा गेल अछि, जे जाएत केतए आ जेबाक केतए छै से ज्ञाने नहि, तैठाम डॉ. प्रसादजीक सारगर्भित ज्ञानसँ ओइ बोराएल पीढीकेँ एकटा उचित दिशा भेटतै। ओना, ई अलग बात जे एखुनका शिक्षा पद्यतिसँ डिग्री मात्रेटा भेटत, रोजगार सृजन आ ज्ञान नहि, तैठाम डॉ. शिवकुमार प्रसाद अपन ज्ञान दानसँ ऐ समाजक बीच

ज्ञानोपदेश देबामे सफल बेकती छैथ। ई हमरा नीक नहाँति बुझल अछि। आ बुझलो केना नै रहत, हमहूँ तँ निर्मलीए माटिपर रहै छी।

प्रस्तुत पोथीसँ पूर्व डॉ. शिवकुमार प्रसादक हिन्दी आ मैथिली- दुनू भाषामे अनेकानेक रचना सभ प्रकाशित भेल अछि। जे अपने सभ पढ़नहि हएब। एना ऐ दुआरे लिखलौं जे पढ़नहि हएब, जे नव मिडियाक समय अछि किने। आब ओ समय गेल जे अहाँक रचना हम पढ़ब तइले पहिने मैथिलीक प्रिंट मिडियाक सम्पादकसँ फरिआउ।

वर्तमान परिपेक्ष्यमे 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' अपनेक बहुत सोहनगर रचना अछि, ई रचना सभ पाठक-बन्धुकेँ सोन्हगरेटा लागत अनसोंहाँत नहि। किएक तँ अपने बहुत नीक जतनसँ ऐ काव्य संग्रहक रचना केलौं अछि। जइमे छोट-क्षीण मुदा अनुकरणीय आ कर्णप्रिय रचना सभ संग्रहीत केलौं।

पोथीक आरम्भेमे रचनाकार मिथिला धाम लिख अपन गाम मोन पाड़लैन आ नेनपना सेहो। पढ़लाक बाद थोड़ेकाल धरिक लेल लागल जेना केतौ हेरा तँ ने गेलौं। जेतए लूखी, कचबचिया, मेना, पौरकी आदि रहै छल मुदा अखन दर्शनो नदारत, अखन सिर्फ पजेबा आ सिमेन्ट-बालुसँ बनल बेश ऊँचकगर कोठा-सोफाटा देखाइत अछि। तहिना नवोदित रचनाकारक लेल डॉ. प्रसादक प्रोत्साहन जे किछु-ने-किछु लिखैत जाउ...। नीक लागल। जे ऐ तरहेँ जे छपैत-छपैत छैपिये जाएब। एक दिन लेखक बनियेँ जाएब। मंच आ इनामो भेटत...।

एक दिस लेखक बनियेँ जेबै मंच आ इनामो भेटत..। तँए किछु-ने-किछु लिखैत जाऊ..। तहिना निर्मलीक निर्मलतामे शिर्षक कवितामे शिक्षाक ऐ महापंकमे गामक जिनगी लेटा रहल अछि कोचिंग, विद्यालय, कौलेजमे एक-एक जन लूटा रहल अछि शिक्षाक ऐहि महापंक...।

वर्तमान शिक्षाक माध्यमसँ लूटाइत ग्रामवासी सबहक आर्थिक

दुर्दशा देखेबामे कविवर सफल रहला अछि।

अहिना 'बौआक उबटन'सँ लऽ साँझ, ढोलक बोखार, छठि पाबैन लिख ठकुआ आ केरा सेहो मन पाड़लैन।

रचनाकार दीप रचनाक मादे लिखै छैथ जे सगर राति हम दीप जरेलौं तैयो घर अन्हारे अछि। शिक्षा मेल विषयपर इजोत देलैन। तहिना 'मन पछताय', 'झूठ-फूसमे बाझल छी' किएक से स्पष्ट केलैन अछि। देख एलौं हम पटना, ओझराहैट, ठनकल फेर ठनका, लिखलैन तँ सुमीता सन नारीक चित्रण करब सेहो नै बिसरलाह।

रचनाकारक सरसता देखू जे फगुआ आ फागुन लिखब सेहो नै बिसरला..! अपने तँ भाँग खा पटियापर ओंघराएल छैथ आ कनियाँ रंग खेलक लेल एलैन। ऐ प्रकारक सभ तरहक बीहैन काव्य रचना लऽ रचनाकार जाड़क कनकनीसँ लऽ जिनगीक झमेला, झूठ, भातक थारीसँ लऽ विद्याक अर्थी धरि लिख पाठक आ समाजकेँ उचित बाट देखौलैन। ऐ लेल रचनाकार श्री प्रसादजीकेँ बहुत-बहुत धन्यवाद आ साधुवाद छैन। जे अपन रचनेक माध्यमसँ ओ आबए-बला पीढ़ीक लेल तमसोमा ज्योर्तिगमय साबित करैक परियास केलैन अछि। जे किनको अनसोंहाँत कहाँ सोन्हगरेटा लगलैत।

बेस, अखन एतबे...।



दुर्गा नन्द मण्डल

दुर्गानन्द मण्डलजीक डेढ़ दर्जन आलेख मैथिली साहित्यक निबन्ध आ आलोचना संसारमे अपन फरिच्छ आ फरिछाएल दृष्टि लेल मोन राखल जाएत । जँ लेखक समाजक समस्याकेँ समग्रतामे आनलक आ तकर समाधानो ताकलक तखने दुर्गानन्द मण्डलजी ओकरा नीक रचना मानता। संगे ठहराव, उतार-चढ़ाव, समसामयिकता ई सभ सेहो हिनकर समीक्षाक आधार छन्हि। मोटा-मोटी कटही गाड़ी आ संगे-संग हवाइ-जहाजक समानान्तर चलैत समाजक ओ चर्चा करै छथि, रचना लेल उपलब्ध ऐ तरहक प्लॉटक ओ चर्चा करै छथि। आ तही कारणेँ हिनकर समीक्षा ऐ सभ तरहक रचनाकेँ बुझि पाबैए, गहिया कऽ पकड़ि पाबैए। हिनकर आगाँक रचना कने आर विस्तारमे जेतन्हि सेहो आस जगबैए।– **गजेन्द्र ठाकुर**

लेखक सम्पर्क-
हरि-ओम डिजिटल एक्स-रे, सुभाष चौक निर्मली, जिला-सुपौल। पिन- 847452.
मोबाइल नं.- (1) 8434815050, (2) 8409689674

₹ 250





पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452